



# ਰੰਧਾਜਰੰਭ

ਸਿੰਘਵਰ ਸਿੰਘ

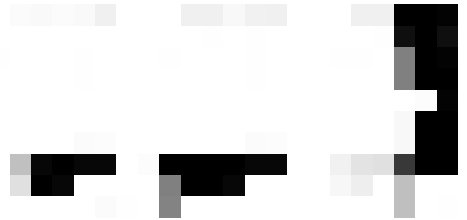
156

156

੮੧੩.੩  
ਸਿੰਘੇ ਅੰ



अंधा सूरज







सरस्वती प्रकाशन मन्दिर

६६, नया बैरहना इलाहाबाद



# अंधा सूत



सिद्दार्थ सिंह



पुस्तक—तीस रुपये

लेखक—सिंहेश्वर सिंह एम० ए०, बी०-एच० डी०

प्रकाशक—सरस्वती प्रकाशन मन्दिर

६६, नया बेरहूत, इलाहाबाद

प्रकाशन—प्रथम, १९८६

अन्यत्र सभा—श्रीलोक श्रीपिप

मुद्रक—इन्दुप्रकाश प्रेस, २ बार्ड का मार्ग, इलाहाबाद ।

---

## ANDHA SURAJ

By Singheshwar

Price Rs. 30



## समर्पण

उन्हें

जिनकी, दुखित, दलित, सतायी हुई जिन्दगी देखकर मेरा मन भर  
आया था उद्गार झलक उठे थे—

जिनकी चिर स्मरणीय कहानी अभी मरी नहीं, जीवित है; जिनको  
आत्माओं ने अभी पुनर्जन्म नहीं लिया, और उसी अंचल में भटक  
रही हैं—

जिनके मासूम, उदास चेहरे आज भी मानस पटल पर उतने हो  
जीवित हैं, जैसा कि देखते समय मुझे अनुभव हुआ था—

ये सब कुछ उनकी ही प्रेरणा की उपज है—

यह सारी की सारी उपज उन्हें ही समर्पित

सिंहेश्वर सिंह \*



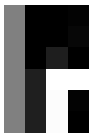


## दो शब्द

यह उपन्यास बिहार के पश्चिमी अंचल की माटी की खुशबू है। भोजपुरी इलाके का दुख-दर्द, गीत—अगीत, ग्रामीण जीवन का सजीव, मार्मिक मर्मस्पर्शी भाँकी, यह उपन्यास प्रस्तुत करता है। ग्रामीण जीवन के राग-विराग को नये सिरे से इस पुस्तक में देखा गया है।

समाज का बुद्धिजीवी वर्ग इसके रूप को न जानता है, न सोचना चाहता है। यह पुस्तक बाध्य करेगी कि लोग जाने कि मिट्टी के नीचे दबे लोगों की हँसी और रुदन का स्वरूप क्या है ?

बी. एन. भट्ट



यहां नहीं उर्वशी !  
यहां नहीं । यहां अग्नि देवता के  
पांव जले हैं । टपका है रक्त  
पुरुखा का यहाँ ।

+ + + +

पीठ फेर कर  
स्वर्णाभि नग्न नारी देह  
धूप में पिघल रही है ।

+ + + +

“यहां नहीं उर्वशी  
यहां नहीं...यहां स्यद्धः स्नातः  
ऋषि की जटा से  
गंगा का जल टपका है ।

+ + + +

मुंह फेर कर  
स्वर्णाभि नारी देह  
धूप में जल रही है ।

5

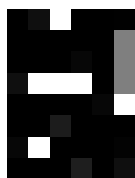
---

अरे बिटिया ! तुम्हारा नन्हका अंधा हो गया । — ‘सच, अंधा हो गया !’ माँ का अस्तित्व सूखे कुँए सा गूँज उठा । — इस बाघ-सिंह भरे संसार में मेरा बेटा कैसे जिएगा ?’ माँ किसके सामने रोये ?...

---

सुरजा तीन बरस का हो गया । उसकी माँ आँगन से निकलने नहीं देती है । किसी की नजर गुजर लग गया तो ! आँगन में धान पसारती, बर्तन माँजती वह मुड़-मुड़ कर सुरजा की ओर ताकती । सुरजा बैठे कुत्ते की पीठ पर चढ़ कर हट-हट करता । भागते चींटे को पकड़ने के लिए ज़रूरत से ज्यादा कोशिश करता । बिना वजह खिलखिलाकर जमीन पर लोट जाता । माँ रुआंसी होकर कहती, ‘अभी अभागे को नहा-धोकर तेल लगायी हूँ । देह माटी-माटी कर दिया, अभागा ! धूल-माटी लगे सुरजा को गोदी में लेने पर माँ को पता नहीं कौन सी खुशबू मिलती । मिट्टी के नये मकान को गाय के गोबर से लीप कर नंगे बदन, जमीन पर सौया है, आपने ? सोंधी महक से पता नहीं मन की कौन सी भूख मिटती है ? गौदौले बेटे को कलेजे से भींचने पर माँ के हृदय की अतकही भूख इसी प्रकार मिटती है ।

कातिक उतर रहा है । खेतों में पीले-पीले धान की बाली लटक गयी है । छप्पर छान पर कोहड़ा-लौकी की लतरें फैल रही है । आँगन में खेलते सुरजा की आँखों में पता नहीं धूल के साथ क्या पड़ गया कि उसकी आँखें किचराने लगीं । सुबह उठा तो आँखें कीचड़ से चिपड़ी बनी दिखीं । माँ ने अपने दूध की धार से सुरजा की आँखों की कीचड़ छुड़ाने की कोशिश की । सुरजा कितना रोया, छरियाया । कपड़े भींगो कर माँ ने



## ११ अंधा सुरज

कीचड़ को आँखों से छुड़ाया। कुछ दिनों तक रोज सुबह माँ की यही दिनचर्या रही। अब सुरजा आंगन में नहीं खेलता।

धूप के सन्नाटे में मक्खियाँ भनभनाती या ओरी-मुड़ेर पर बैठा कौआ कांव-कांव करता तो आंगन की दोपहरी और सूनी सी लगती। कोई पाहुन आयेगा क्या? माँ के मन में कोई कहता। माँ की इच्छा नहीं होती कि इस दुख में कोई आय-जाय। बिछावन पर सोये सुरजा के मुँह को देखकर माँ की छाती में दूध भर जाता। आँचल से मुँह पर बैठी मक्खियों को हाँकती, माँ प्रार्थना में झुकी मोम की मूर्ति सी धूप में गलने लगती।

अरे, सुरजा की आँखें ओढ़ल के फूल सी लाल होने लगी, माँ चौंक गई। रात-दिन सुरजा रोते-रोते सिकवा-सिक हो जाता। माँ तो जैसे अकेले आधी रात के जंगल में भटकी, चीख रही हो। ओ सुरजा के बाप! पड़ोस की चाची बुआ। कोई है? इस अंधेरे में? कोई रास्ता नहीं? जंगल की रात, बाघ-चीता मांद से निकले हैं। माँ फूट-फूट कर रो रही है। पड़ोसन बुआ समझाती है, बगल के गांव का मौलवी आँख की ऐसी दवा करता है कि पलक मारते दरद बथा छ्म-मन्तर हो जाता। देखते-देखते आँखें सोबरन हो जायेगी। बहू, देरी मत करो। मुँह अन्हारे गोदी में बेटा लेकर चली जाओ। मौलवी टोटका-टोटरम भी करता है। वह खुद बतायेगा दवा देनी है या ताबीज बांधनी है। भगवान, यह बच्चा कौन सा पाप किया है। फूल से बच्चे को ऐसी सजा? बुआ आंचल से आँखें पोछती बंधार में धान काटने चली गयी।

हे चाची, मेरे आंगन में चलिये। सुरजा को क्या हो गया है। मां हर जगह कितना रोये? जिस आंगन में सुरजा के हँसने से केतकी-चमेली का फूल भरता था, वह मसान बना है। अब न वहाँ धान सूखता है, न जूठे बर्तन पर कौवे बैठे कांव-कांव करते हैं।

अरे मांगजारी! बेटा जनमा दिया, बुद्धि-शऊर कुछ नहीं। चोरी का है क्या रे? कर्कशा चाची आंगन में दहाड़ने लगी। सुरजा की मां





ठीक ही तो सोचती थी। जंगल की आधीरात में वह भटक रही है। उसकी गूंगी चीख से जंगल के पत्ते हवा से सरासर रहें हैं। जंगल में इसी समय बाघ-सिंह निकलते हैं। चाची डांट डपट कर रही है। बीच आंगन में खड़ी होकर। सुरजा की मां सुसक-सुसक कर रो रही है।

पता नहीं, चाची ने आंख में क्या डाला कि पीड़ा से सुरजा मैची मछली सा छटपटाने लगा। पहले आंगन सूना लगता था, अब तो उसमें सीज और गोरखुल के काटे उग आये। रोओ मत सुरजा की मां, कलेजा पत्थर करो। सुरजा का बाप जब से परदेश गया, न चिट्ठी न चपाटी !

तबालची चाचा रोज कहते घबड़ाओं मत, हम हैं। सुरजा की मां पहले उनसे बहुत लजाती। बतियाते समय पांव के नाखून से जमीन की माटी खोदने लगती या घास तोड़कर टुकने लगती। पराया मरद.....!

गाय बिरिछ पर चुच्चुहिया चिरई बोलने लगी। पौ फट गया। सुरजा को गोदी में उठाकर मां मौलवी के यहां चली। सुरजा रह-रह कर कराह उठता। नंगे पांव ओस भीगी घास पर चलना मां के लिए कितना सुखद होता। सुबह की ठंडी हवा। वह पूरी उमर इसी तरह चलते जाना चाहती है। वह जानती है उसे मौलवी के यहां जाना है। दो घण्टे का रास्ता—इस दो घण्टे के सुख को वह कैसे भोगे ? गोद में कराहता बीमार बेटा है।

तबालची ने उसे कितना सुख दिया है ? कहते हैं—सच, तुम्हारी देह, चढ़ाया हुआ तानपूरा है। उंगली से छू दिया तो सात स्वरों में गूँज उठती है,—सा, रे, ध, म, प, सा...। पता नहीं तबालची क्या-क्या बोल जाते हैं ? मैं समझ नहीं पाती। सिर्फ लाज आती है।

नरम-नरम घास पर डग बढ़ाये सुरजा की मां जा रही है। सुबह के लाल आकाश में चिरई-चुरुङ्ग पंख खोले आकाश में उड़ रहे हैं। इच्छा करती है, वह भी पंछी बन कर आकाश में उड़े। तबालची उसकी देह छूते हैं तो इसी तरह उसके पंख उग आते हैं। बेटा गोद में कराह उठता है और वह धरती पर आ जाती है, आंसू और रुदन में सनी गीली मिट्टी बन जाती है।



## १३ अंधा सुरज

अरे बिटिया, तुम्हारा नन्हका तो अंधा हो गया । मां का अस्तित्व सूखे कुंए सा गूँज उठा । इस बाघ-सिंह भरे संसार में मेरा बेटा कैसे जियेगा ? मां किसके सामने रोये ?

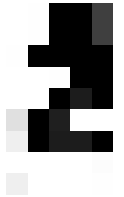
अब सुरजा आंगन में कुत्ते से खेलता नहीं । आंगन में बैठे कुछ सोचता रहता । नहीं-नहीं मुझसे दूर रहिये । मेरे ही पाप का फल सुरजा भुगत रहा है । नहीं, मैं हाथ जोड़ती हूँ सुरजा की मां तबालची से दूर खड़ी जो जाती है । सुरजा कान से सुनता है । वह अपने दुख को कह नहीं पाता । उसके मन में बदबू का एहसास होता है । लम्बी सांस लेकर रह जाता है । कहीं चूहा मरा है क्या मइया । बड़ा महकता है । बिल्ली दबोच कर चली गई होगी मां जबाब नहीं देती है । तबालची पछताते, आंगन से चले जाते हैं ।

तबालची चाचा जब भी तबला बजाते हैं, सुरजा दीवार पकड़ कर चला आता है । कान खड़ा किये घण्टों सुनता है जैसे दूर से कोई उसे ही पुकार रहा है ।

सोये में आधीरात को उठकर मां को जगाता है । मां, खिड़की के बाहर कहीं नाच गाना हो रहा है क्या ? सच में बांस के जंगल में हवा बहने से बांसुरी का स्वर जैसा कुछ गूँजता है । सुरजा रोज आधीरात को सुनता है मां नहीं सुन पाती ।

धान कटनी शुरू हो गयी । सुरजा मां की देह पकड़े खेत में जाता है । धान के खेत की ओदी मिट्टी की मंहक उसे बहुत पसंद है । सुरजा लम्बी सांस लेता है । मां चर्च-चर्च हंसिये से धान काटती है । सुरजा के कान में गूँजता रहा है—ना धी धिना, तिर किट तिन्ना । सुरजा जैसे किसी भूली बिसरी बात को ख्याल करता हो, ऐसे कान खड़ा किये रहता है ।

देखते-देखते सुरजा बारह बरस का हो गया । सिभरिया के आंगन में खिलखिला कर हंसने से उसके रोंये क्यों कंपकंपा जाते हैं । ऐ मां, सिभरिया बड़ी भगड़ालू है । कितना जोर-जोर से बोलती है । मां उसकी



बात समझ नहीं पाती। जबाब न सुनकर वह मुंह से ना धि धिना की आवाज निकालने लगता है। एक मक्खी भन्त-भन्त करती उसके कान के बगल से गुजरती है। वह चिढ़ा कर शून्य में ताकता है।

चूड़ी की आवाज सुनते ही वह जान जाता है, जरूर सिंभरिया होगी। उसकी नाक में अतर की खुशबू भरने लगती है। वह नहीं जान पाता बात क्या है? सिर्फ मुंह उठाकर हवा को सुड़कता है,—बहुत लम्बी सांस लेता है।

सुरजा अपनी माई से कहता है,—“ऐ मां पूजा के लिए फूल लाई हो क्या? बड़ा महकता है।” बच्चे के मन पर नारी का एहसास फूल से भी खुशबूदार होता है।

मां बर्तन मांजती हुई गर्दन नचा कर केश की लट पीछे फेंकती है। दरवाजे की ओर से पांवों की धमक आती है।

वह पग ध्वनि मेरी पहचानी,

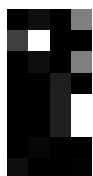
पहचानी मेरी वह पग ध्वनि।

मां का रोम-रोम उसकी पगध्वनि को पहचान रहा है। अपने लहू के एक-एक कण के नर्तन में महसूस कर रहा है। सुरजा भी पैरों की ध्वनि सुनकर समझ जाता है, और क्लिक उठता है,—“तबालची चाचा।”

—“हां बेटा! इधर मत आओ। मैं ही तुम्हारे पास आ रहा हूँ। सुरजा के उठकर चलने के उपक्रम को देखकर तबालची चाचा ने रोका।

सुरजा की मां ने हाथ धोकर आंगन में चटाई बिछा दी। सफेद साड़ी में सुरजा की मां तबालची की दृष्टि में सफेद बेला के फूल की माला सी लग रही थी; पूजा के पूर्व माली के हाथ में लटकी हुई सी।

सुरजा की मां आंचल से हाथ-पांव ढक कर बगल में बैठ जाती है। कुछ लजाई, कुछ मुस्कुराती हुई। थोड़े से पानी में दो नाचती हुई मछलियां—सुरजा की मां की आंखें!



## १५ अंधा सुरज

दूर सोया हुआ कुत्ता आदमी की आहट पाकर चिहाकर उठ बैठता है। लम्बी जम्हाई लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। कुत्ता सुरजा के पास बैठ जाता है। सुरजा हाथ बढ़ाकर कुत्ते की पीठ सहलाता शून्य की ओर सिर उठा पाता, नहीं किसकी आहट लेने लगा। सुरजा का प्यार पाकर कुत्ता आंगन में पसर गया।

आंगन के ऊपर का आकाश नीले समन्दर सा दिख रहा था। ठीक आंगन के ऊपर से हारिल चिड़ियों का झुंड उड़ता हुआ गुजर गया। दूर जाती चिड़ियों की आवाज दोनों सुन रहे हैं — तबालची और सुरजा की मां। सुरजा पता नहीं क्या सोचता है लेकिन लगता है कि कुछ सोच रहा है।

पिछले तीन महीने से आंगन के पूरब के कोने में मधुमक्खी ने छत्ता लगा रखा है। नल के पास पानी पीने मधुमक्खियां बराबर आती हैं और सुरजा की मां के बर्तन मांजते समय हाथ पांव धोने या कपड़े धोते समय डंक मार देती हैं। आज भी सुरजा की मां के हाथ में दो जगह मधुमक्खियों, ने डंक मार दिया है। सूजी हुई हथेलियों को देखकर तबालची लपक कर हाथ पकड़ लेना चाहते हैं।

—“ए मुई !” हल्की चीख के साथ वह अपना हाथ समेट लेती है। चीख सुनकर सुरजा उठकर खड़ा हो जाता है। शून्य में सिर इधर-उधर घुमाकर, कर, अंधी आंखें मलकाने लगता है।

यहाँ हर चीज ठहरी सी लग रही है। हवा जैसे सांस रोककर कुछ देखना चाहती है,—कुछ सुनना चाहती है।

सुरजा की आँखें होती तो देखता। तबालची चाचा के हाथ पकड़ने से उसकी मां के हाथ की चूड़ियां पीली-पीली धूप में इन्द्र धनुष के रंग में बिखरती जा रही हैं। वह देखता, कोने के शहद का छत्ता धीरे-धीरे टपकता हुआ धूप में धुलता जा रहा है। हवा के तहखाने की खिड़कियां और दरवाजे खुलते जा रहे हैं। सीढ़ियों पर चूड़ियां बिखरती हुई खन-खनाहट की आवाज कर रही हैं।





+

+

+

वह तो सुनता है गीत,—दूर धान काटती मजूरियों के गीत । गांव के प्राइमरी स्कूल के पढ़ने वाले बच्चे टिफिन में घर से स्कूल की ओर जाते हुए मार-पीट और आपस में धौल धप्पा करते हुए उधर से ही गुजर रहे हैं । उन लोगों की आवाज सुनकर सुरजा की इच्छा करती है कि वह दौड़कर उन्हीं बच्चों की भीड़ में सम्मिलित हो जाये । खूब जी भरकर रोये, इसे और किलकारी मारकर चाहरदीवारी या अमरुद के पेड़ पर चढ़कर-धूल-मिट्टी में छलांग लगा दे । वह उठने की कोशिश करता है तो मां लपक कर बांह पकड़ लेती है ।

—“कहां जाते हो, बैठ ! बाहर के बच्चे बड़े बदमाश हैं । वे तुम्हें मारेंगे । और सुरजा के बाजुओं के पास उगते हुए पंख टूट जाते हैं । वह घायल बाज सा भीतर ही हांफने लगता है ।

बहुत दिनों पहले जब तबालची अपने गुरुजी महाराज के साथ किशन महाराज के दर्शन करने बनारस गये थे तो देखा था दशाश्वमेध के गंगा-घाट के सूर्योदय में स्नानार्थियों के दृश्य । गंगा की लहरों पर लहरिये-दार रूप में थिरकते सूरज का पूरब में उगना । गेरु के रंग में कांपते गंगा के जल में छोटी सी डोंगी पर कपोत से दो जोड़ों का नौका बिहार । मांझी का बंशी बजाते हुए, नाव पर बैठे उस पार से इस पार लौटना । तबालची ने देखा था,—एक बंगालिन विधवा का सफेद वस्त्र पहने गंगा के किनारे सूर्य को अर्घ्य देते हुए ।

सुरजा की मां को देखते ही तबालची के मानस पटल पर वे सारे दृश्य तिरने लगे ।

रात्रि के निविड़ अंधकार में घने वन के एकान्त में ओस ढरकने की आवाज आखिर कौन सुनता है ? सुरजा की मां देखकर तबालची के मानस पटल पर सारे के सारे दृश्य नाच उठे । कान दूर की पुकार से उत्कंठित हो उठे ।



## १७ अंधा सूरज

रात्रि के अन्तिम प्रहर में पीला चांद बौद्ध सन्यासी के समान चीवर धारण कर तेजी से पश्चिम की ओर जाता हुआ तबालची ने कई बार देखा है। बहुत पहले की बात है, जब वह सत्रह-अठारह वर्ष का था, अचानक रात को उसकी नींद उचट जाती तो नदी के किनारे ओस से भीगे घास पर ठहलता निकल जाता। वह देखता, नदी के लहरों में हिलते जल पर चांद सहित समूचा आकाश कांप रहा है। चांदनी के धूमिल आलोक में मछलियां-उछलते समय चांदी के छल्ले के टुकड़े सी चमक जाती हैं।

तबालची के मन के गुंगेपन में जैसे कोई पगला बकने लगता है।

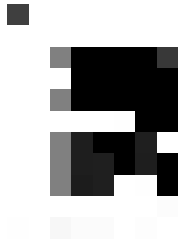
“कहां जा रही हो मां जाह्नवी ? कौन तुम्हारा प्रियतम है जिसके गले लगने के लिए आकुल-व्याकुल दौड़ रही हो ? इस घूसर चांदनी में लहरों के नृत्य में किस अमर संगीत को सुनाने जा रही हो। नदी किनारे के द्वह पर खड़ा होकर तबालची नदी से मुंह फेरकर रेत की ओर देखता है। मटमैली चांदनी सब कुछ छिपाये जा रही है। रात के सारे रहस्य को, तारों के फूलों की ओस से भीगी रातभर की बातचीत को तन्द्रा के आवरण में छिपाये जा रही है।

तबालची वह दृश्य भूलता नहीं, जब गांव की बहूए सुबह गंगा-स्नान करने आती हैं तो गंगा मइया के गीत गाती वातावरण में नींद की खुमारी में नशा घोलती हैं। डूबने से पहले के चांद की ओर सिर और पूंछ उठा कर देखता हुआ सियार हुआं-हुआं कर रहा है। लोमड़ी खें-खें करती सामने से भागती हुई अरहर के खेत में घुस जाती है।

रात भर डोंगी पर बैठकर जाल फेंक-फेंककर मछली मारने वाले मांभी उस सन्नाटे को चीरने वाली लम्बी तान लेकर एक हथेली कान पर रखे कबीर का पद गाते घर की ओर लौट रहे हैं।

ताना ना नानब रै माई.....

लोक धुन पर कबीर का पद ब्रह्मबेला में विराग और अनुराग का कोमल वातावरण तैयार कर रहा है। मांभियों की देह से भरती हुई पानी की बूंदें रेत को भिगोती जा रही हैं। ठण्डी-ठण्डी हवा से तबालची



के रोंगटे काँटे के समान गड़कर गुदगुदी पैदा कर रहे हैं।

सुरजा की जांघ पर तबले के समान हाथ से ताल की आवाज सुनकर तबालची की तन्द्रा भंग हो जाती है। वह अतीत के इन्द्रजाल को चेतना से उतारकर सुरजा की माँ के मुँह को देखने लगता है। आभरणहीन मुखमण्डल का सौन्दर्य। मांग में सिन्दूर की पतली रेखा और जलते आगे की ओर दो-चार केश की लटें।

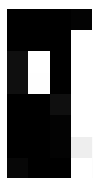
—“क्यों मछली ला दूँ, बाजार में इस बखत सस्ती मछलियाँ मिल रही हैं। क्वार-कातिक में खेत-बघार और नदी-नाले से पानी उतरने के बाद मछलियाँ खूब मिलती हैं। खाले के धान के खेतों में लोग हाथ से पकड़कर टोकरी भर मछली घर लेकर चले आते हैं।”

तबालची की बात सुनकर सुरजा खुशी से उठकर खड़ा हो गया और चलने के क्रम में दीवार से टकरा गया।

—“अरे, मैं बार-बार मना करती हूँ, लेकिन अभाग मानता ही नहीं। अगर सिर फूट जाता तो मेरी किस्मत फूट जाती।” सुरजा की माँ बेटे को अंक में भरकर बिलख उठी।

औरत नदी होती है। उसी के आँसू से लोक जीवन उर्वर होता है। जिस दिन औरत के आंचल के आँसू सूख जायेंगे, मनुष्य पशु हो जायेगा और औरत सिर्फ मादा बनकर रह जायेगी। आँसू सिर्फ प्रतारणा और अत्याचार के ही नहीं होते, खुशी, करुणा और वात्सल्य के भी होते हैं। सुरजा की माँ के आँसू तबालची के सोये कलाकार को बराबर जाग्रत करता है। तबालची उसे सुन नहीं पाता।

एक बार तबालची ग्वालियर से अपने गुरु जी महाराज के साथ लौटते हुए दिल्ली के एक म्यूजियम में गया। पुरातन काल के बहुत सारी वास्तु-कला के नमूने के तौर पर मूर्तियों को देखते-देखते एक मूर्ति को गौर से देखने लगा। एक हृष्ट-पुष्ट नंगी औरत बच्चे को गोद में लिए नदी तट पर खड़ी है। सामने नदी लहरा रही है। उसके ठीक ऊपर सुरज उगता हुआ पत्थर में उत्कीर्ण है। तबालची के मानस पटल पर सुरजा का वही



## १६ अंधा सूरज

रूप उभर आया। तबालची के मुंह अस्फुट रूप में प्रतिध्वनित हुई,—”  
“औरत नदी होती है। जगत के कल्मष को गर्भ-धारण कर उसे शस्त्र-  
श्यामला बनाने वाली।”

सुरजा की मां बेटे को अंकमें भरकर फफक-फफक कर रोने लगी।  
सुरजा की अंधी आंखों के पपोटे तनिक खुल गये। आंसू ढरकने से नाक  
और होठ फरकने लगे।

बेला ढल जाने पर गांव के लोग खेतों में अपने काम पर लौटने लगे।  
दरवाजे पर एक भिखारी आकर खड़ा हो गया। वह एकतारै पर कबीर  
का पद गाने लगा।

“जल बीच मरत

पियासा धोबिया

जल बीच मरत पियासी.....

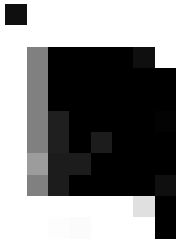
सुरजा की मां ने बेटे को छोड़कर आंख पोंछती घर के भीतर गई।  
अंजुली में गेहूँ भरकर भिखारी की भोली में डाल दिया। भिखारी ने कहा  
एक लोटा पानी पिला दो मइया। बहुत जोर की प्यास लगी है। सुरजा  
की अम्मा ने हाड़ी से गुड़ का ढेला और एक लोटा पानी लेकर भिखारी  
को दिया। भिखारी ने गुड़ खाकर पानी पिया। तृप्ति की डकार लेकर  
उसने कहा—“भगवान भला करे। आठो पहर सोता बरसे।”

गीत की भनक पाकर गांव के कुत्ते भूँकते हुए दौड़ पड़े। कुत्तों को  
देखकर भिखारी डर गया। आस-पास खड़े लड़कों ने ढेला मार कर कुत्तों  
को भगाया।

बच्चों ने भिखारी से पूछा “ऐ बाबा आपका बाजा इतना मीठा क्यों  
बोलता है?”

भिखारी ने बच्चों को पुचकार कर जवाब दिया। “वह मेरा खून  
पीता है इसलिए मीठा बोलता है।”

बच्चों को अचरज हुआ। उन लोगों ने पूछा, “और खाता क्या है?”





भिखारी ने उदास होकर,—“मेरा करेज ।”

इसी बात को दूसरे ढंग से तबालची के गुरुजी महाराज ने समझाया था ।

“देखो वेटा, कला-साधना कठिन होता है । कला कलाकार का खून पीती है और कलेजा काटती है, तब वह पूर्णता को प्राप्त होती है; यह तय है । आजकल कला विलास का साधन बन गई है । इसीलिए अब वैसे कलाकार पैदा नहीं होते ।”

भिखारी की बात सुनकर तबालची मन की गहराई में उतर गया । इस वक्त तबालची के सामने न सुरजा था न उसकी माँ थी । गंगा के किनारे एक छोटा सा गाँव था । पन्द्रह-बीस घर वाले बसते थे । उन्हीं वालों की बस्ती में तबालची का जन्म हुआ । बाप दो भैंस और एक गाय पाले हुए था । मोर-अन्हारे उसके बाप भैंस को दुहते और तबालची को पुकारते,—“नन्हुआ भैंस को बघारे ले जाव ।”

तबालची का घर का नाम नन्हुआ था । नन्हुआ की माँ गमछे में बासी रोटी बाँध देती और रोज चेताती,—“किसी के खेत में भैंस को जाने मत देना । किसी लड़के से मार-पीट मत करना । दीन-दुनियाँ बहुत खराब है । भैंस चराने जाने से पहले माँ अपने हाथ से मुँह धुलाकर बासी रोटी भैंस के कच्चे दूध में तोड़कर और नन्हुआ को अपने हाथ से एक-एक कौर खिलाती । खिलाते समय चिढ़-चिढ़ जाती ।

“अभागा बढ़कर ताड़ के बराबर हो गया; लेकिन अभी तक खाने के समय मुँह बाने नहीं आता । कौर लेते समय कौआ के ढोढ़ के समान ओठ बना देता है ।”

“यह किस भैंस का दूध है मइया, ! बड़की का या छोटकी का ?” बोलते समय नन्हुआ के मुँह से दूध का कौर गिर गया । माँ ने हल्के से गाल पर एक थप्पड़ मार कर झिड़की दी ।

“अभागा आँचर खराब कर दिया ।” नन्हुआ ठुनकने लगा । माँ ने



## २१ अंधा सूरज

उसे पुचकार कर एक-एक कौर खिलाया । खुश होकर तन्हुआ ने कहा,—  
“माँ, वह दुलरा है न, अपने कबड्डी और गुल्ली डंडा खेलता है और  
हमसे मैस गाय हँकवाता है । देखो न, पाँव में काँटे चुभ गये हैं । माँ ने  
कहा,, “आज आने दो, मैं संभा को उसकी माँ से पूछूंगी ।”

तन्हुआ को खिला-पिलाकर उसकी माँ ने मैस के पीछे लगा दिया ।





---

गंगा के किनारे पर फूल के बजाय सूखी पत्तियां हवा में तिरती हुई झर रही हैं। पसीने से लथपथ दौड़ता हुआ एक आदमी आया और मांझी को पुकारने लगा। उसकी चीख से सबके कानों पर कांटे उग आये।

---

गंगा के शस्य-स्यामल तट पर श्वेत वक्र-पंक्ति लहरों को उठती गिरती ताक रही है। कगार पर फेनिल जल तिल-तिल कर अड़ार को काट रहा है। गाय-भैंसों को चरने को छोड़कर चार बच्चे गंगा के किनारे खड़े हो गये हैं।

किनारे से थोड़ा हट कर एक पीपल का वृक्ष है। उसकी अधिकांश डालियां ठूठ हैं। भैंस को पत्ते खिलाने के लिए नेटुए-नगाड़ सारे के सारे पत्ते काट लिए हैं। नंगी, झुकी डालियों पर रस्सी से घण्ट टंगे हैं। अभी कल परसों एक घण्ट टांगा गया है। उस पार से घास लाते समय गंगा मइया की लहरें शिवचरण को निगल गई। अट्टारह-बीस बरस की चढ़ती हुई जवानी। रोज सुबह, गंगा की लहरों को चीरता, तैरता गंगा के उस पार घास काटने जाता और गदबेले के पहले लहरों पर घास-डाल कर उस पर बैठ जाता और लाठी से पानी को खेता इस पार चला आता है। लहरों का एक तोड़ आया और घास सहित शिवचरण पता नहीं किस अतल गहराई में चला गया। श्राद्ध-क्रिया प्रारम्भ होने के दूसरे दिन दूध लगा। पुरोहित ने उसके बाप को लाकर इसी पीपल की डाली पर घण्ट टंगवाया। घण्ट से बूंद-बूंद पानी टपक रहा है। यह पानी शिवचरण की मां के आंसू हैं।

माँ गंगा, शिवचरण कहाँ चला गया ? कल ही तो उसकी पत्नी की मांग भरी गई थी। उसकी सुहाग की साड़ी की अभी धूमिल भी नहीं हुई है।



अभी कल ही तो उसकी कलाई में कंगन बाँधा गया था। आज उसकी कलाई सूती हो गई।

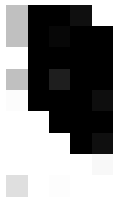
चरवाहे बच्चे घण्ट के नीचे पैसे खोज रहे हैं। मन्त्र पढ़ने के बाद पुरोहित ने अक्षत फूल, कुश और पैसे यहीं कहीं फेंका है। बच्चे उसी पैसे को खोज रहे हैं।

अचानक नन्हुआ के हाथ दस पैसे लग गये। वह खुशी से नाचने लगा। उसके नाचने से गमछे की रोटी खुलकर दूर फ़िंक गयी। नन्हुआ दौड़कर रोटी उठाकर भाड़ने लगा। पीपल की फुबुगी पर एक गीध आकर बैठ गया। उसके पंख की फटफटाहट से सारे बच्चों की नजर फुनुगी की ओर टंग गई। गीध की गरदन में मांस का लाल झालर था। चोंच में लहू सना मांस का लोथरा था।

नदी के तट पर एक औरत भागती हुई आई और हाँफती हुई नाव का इन्तजार करने लगी। कुछ अन्तराल के बाद, चौबिस पचीस बरस का नौजवान भागता हुआ आया और औरत के लम्बे बाल पकड़ कर घसीटने लगा और लात मुक्के से कचारने लगा। औरत चीखने-चिल्लाने लगी। घसीटने से उसके कमर की साड़ी खुल गयी। ब्लाउज फट गया। कलाई की चूड़ियों के टूटने से लहू बहने लगा। वह अपनी अधनंगी देह ढकने की असफल कोशिश करने लगी।

गंगा में नहाते औरत-मर्द, औरत की चीख-पुकार सुनकर दौड़कर आये। मर्दों ने झपट कर पीटते हुए आदमी को अलग किया। वह अब भी गुस्से से तमतमाया-सा काँप रहा था। गुस्से में उसके होंठ हिल रहे थे और मुँह से गालियाँ मक्खी के समान भर रहीं थीं।

मार खाकर औरत लुन्जपुन्ज हो गई थी। उसके केश खुले थे। चेहरे पर कई खरोचें आ गई थीं। दांत के होठ में गड़ जाने से मुँह से लहू टपक रहा था। औरतों ने उसे पुचकार कर पूछा,—“कहो, क्या बात है? मारने वाला तुम्हारा कौन है?” औरत ने सिसक कर कहा—





‘मेरे माँ-बाप ने मेरे दुश्मन को मेरे गले में बाँध दिया है। इसके माँ-बाप कसाई हैं। रात-दिन दासी-लौंडी के समान खटती हैं। तब भी इसकी माँ मेरे माँ-बाप को सात तरह के नाम रखती है और खाना-पीना बन्द कर देती है। हार कर मैके जाने को ठान कर चली हैं। मुझ भौंसा का माँ के सामने मुँह नहीं खुलता। म्यांऊ-म्यांऊ बोलता है। मुझ अबला पर जब्बर बन गया है।’

औरतों ने देखा। गठरी में तीन-चार गहने, दो पुरानी साड़ियाँ और दो-दो ब्लाउज और पेटीकोट।

औरतों ने कहा, ‘गहने लेकर रात-विरात को तुम घर से अकेली निकल गई। तुमको डर नहीं लगा। चोर-चाई, डाकू बदमाश अगर लग जाते तो धन और आबरू दोनों जाता जान भी चली जाती तो कोई ताज्जुब नहीं। ठीक ही कहा गया है—‘औरत को नाक न हो तो गुह खाय।’

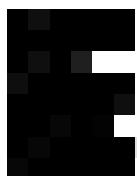
उन औरतों ने बहुत समझाया, —‘देखों अपना मरद चाहे लाख बुरा हो, फिर वही काम आयेगा। मैका किसका होता है। माँ-बाप मर जाय तो भाई-भौजाई पहचानते तक नहीं। दरवाजे पर जाने पर एक लोटा पानी को भी नहीं पूछते। —‘जाव घर लौट जाव। दिन-दुनियाँ बहुत खराब है।’

सबने समझा बुझाकर उन दोनों को अपने घर के रास्ते लगाया।

लड़कों ने पूछा क्या है चाची ?

औरतों ने जवाब दिया—‘रूसतिहार है, बेचारी किस्मत की मारी है’।

घूप गाढ़ी हो गई। बीच रेत में खड़े आदमी की नजर में ऐसा लग रहा है, जैसे नदी जम कर बर्फ बन गई है। पानी पर तैरती हुई नावें जहाँ की तहाँ खड़ी हैं। पाल हवा में फहरा है। नाव पर बैठे लोगों के चेहरे जैसे पथरा गये हैं। एक घबड़ाई हुई स्थिति नाव के आस-पास



## २५ अंधा सूरज

जमती जा रही है। स्नान कर पानी से निकलते लोग उचटती दृष्टि से उन नावों को देखकर पूजा का मन्त्र बुदबुदा कर जनेऊ से पानी गाड़ रहे हैं या ललाट से पानी पोंछ रहे हैं।

हवा में धूप इस तरह हिल रही है जैसे किसी के दरवाजे पर पीला पर्दा हिल रहा हो।

नहाकर जाने वाले यहाँ से किनारा काट कर जा रहे हैं। यहां एक गूलर का पेड़ है। उन लोगों के बीच की एक औरत ने कहा कि गंगा—स्नान के बाद गूलर की छाँह में चलने से आधा पुण्य बंट जाता है। एक आदमी पेड़ पर चढ़ा गुच्छा का गुच्छा भोले में, छोटे-छोटे फल तोड़ रहा है। एक औरत ने कहा, —“माँग लाऊँ ! गूलर की तरकारी बड़ी अच्छी होती है।”

दूसरी औरत ने डपट कर कहा—“अभी सुन चुकी है कि गंगा—स्नान के बाद गूलर के पास जाने पर आधा पुण्य बंट जाता है। फिर कहती है, माँग लाऊँ।” उस औरत ने बात खतम कर मुंह बिचका दिया।

किनारे पर फूल के बजाय सूखी पत्तियाँ हवा में तिरती हुई भर रही हैं। पसीने से लथपथ दौड़कर एक आदमी आया और मांभी को पुकारने लगा। उसकी चीख से सबके कान पर काँटे उग आये हैं।

हरसू और रामधनी दो गरीब किसान सिर पर हाथ रखकर अपना—अपना दुखड़ा रो रहे हैं।

हरसू रामधनी से कहते हैं, कि आगे के जेठ-बैसाख में बिना घर के कैसे रहोगे ? क्या पेड़ की जड़ के पास बाल-बच्चे दिन गुजारेगें। ऐसे में महतो सुन लो, अपनी मड़ई को ठीक कर लो। नहीं, तो पुरवा-पछुआ की हवा मड़ई के एक-एक खर-पात को उड़ा ले जायेगी। तुम्हारी बुढ़िया माई दमे की मरीज है। वह भर दिन मड़ई के दरवाजे पर खाँसती रहती है।



रामधनी रो-रो कर अपना दुखड़ा गा रहा है। कुदाल टूट कर दर-वाजे पर छः माह से फँका गया है। हल का फाल मोथरा हो गया है। एक बैल तो डकहा कई रोज हुये मर गया। एक ही धवला बैल है। वह भी कल शाम से कान और पूछ गिराये हुए है। लगता है, उसको भी कोई बिमारी हो गई है। अबकी बार खेत में पाँस कैसे पहुँचेगा, मैं इसी की चिन्ता में हूँ। दोनों किसानों की आँखों से आँसू ढरक रहे हैं।

बगल में खड़े चरवाहे-लड़के ढेले से पानी में बैठे बगुलों को मार रहे हैं। बगुले क्रैंक-क्रैंक करते हुए उड़ते चले जा रहे हैं। हवा में पंक्ति बना कर उड़ते देख एक लड़का दूसरे से कह रहा है, —“अरे यार, लगता है शंख की माला हवा में तैर रही है। वह देखो वहाँ, दूर चले जा रहे हैं।

दूसरे ने कहा, आखिर ये आये कहाँ से और जा कहाँ रहे हैं ?

दूसरे ने कहा, “पता नहीं कहाँ जाते हैं आज रात को सोने के पहले दादी से पूछूँगा। मैं भी अपनी बुढ़िया चाची से पूछूँगा।

—“राम नाम सत्त है। माटी में गत्त है।” कहते हुए लोगों की की टोली एक अरथी पर मुरदा लेकर आयी। किनारे मुर्दा रख दी गई। आसपास बैठकर सबने गमछे और तौलिया से पसीना पोछना शुरू किया।

आठ-दस बरस का एक सिकुड़ा-सहमा-सा लड़का मुर्दे के पाँव तले बैठ गया। लगता है बेचारा बहुत रोया है। गालों के आँसू अभी सूखे नहीं हैं। उसके मन की पीड़ा का किसी को थाह नहीं है।

एक ओर किनारे के बालू के रेत पर गीली मिट्टी पड़ी है। खेत वालों ने खेत जोतने में देरी कर दी। मिट्टी चीकड़ हो गई। हल से उसे जोतने की कोशिश की गई है। लेकिन उसमें सिराउर उगकर रह गया है। उसमें गिराये हुए बीज बहुत कम जमे हैं।

धूप में थोड़ी गरमी आ गई है। नन्हें अपने साथियों के साथ गुल्ली डण्डा खेल रहा है। भैसे घास चर कर किनारे पानी पीने के लिए आ गई हैं।



## २७ अंधा सूरज

समय यहाँ ऐसे बीत रहा है जैसे बिना आवाज के अँधेरे में रेत भर रहा हो। जैसे सब कुछ, इलरा-ठहरा सा लग रहा है। हिलती हुई चीजों के साथ उसकी परछाइयाँ हिल रही हैं।

दोपहर का समय जैसे पीला चीवर लबादे के रूप में धारण कर मन्त्र पढ़ता हुआ खेतों, पेड़ों और किनारे पर प्रभाव जमा रहा है। भैसे किनारे से गंगा में उतर रही हैं। सवारी से लदी एक नाव किनारे पर लग जाती है।

नन्हें गुल्ली-डण्ठा के खेल में हार गया है। वह रुआंसा होकर खड़ा है। लड़के डण्डा से मार कर गुल्ली फेंकते हैं। वह कबड्डी-कबड्डी पढ़कर गुल्ली को लाता है। बार-बार दौड़ने से वह पसीना-पसीना हो गया है। खेतों के आंचल में फूल भरे हैं। घूप हल्दी का उबटन लगा रही है।

“ऐ चेतन, जाओ तुम डोम को बुला लाओ। तुम रामू, इसमें से दो जने को ले जाकर लकड़ी खरीद लाओ। लकड़ी इस समय शायद आठ रुपये क्विटल मिलती है। चन्दू सिंह ने टेंट से चालीस रुपये निकालकर रामू के हाथ में रख दिया। रास्ते के बाजार के हलवाई से पूड़ी बनाने को भी वे नहीं भूले, लौटती बार लोग भूखे घर कैसे जायेंगे ?

पता नहीं, इन किनारे के खेतों में कितने आदमियों की लाशें जलीं हैं। यह हरियाली, ये फूल अन्न के बीज से भुकी फसलों की टहनियाँ, लगता है, मरे लोगों की हड्डी और मांस से उपजी हैं।

ओ गंगा मइया, तुम्हारी लहरों में कितने लोगों के रुदन का संगीत है। मनुष्य की हड्डियाँ थाली के रूप में तुमने कहाँ छिपा रखा है। ओ किनारे को तिल-तिल काटती लहरों तुम में जातीय जीवन का इतिहास छिपा है।

युद्ध के लिए आया हुआ अब्दुल्ला अरबी घोड़े पर सवार हवा में चमकती नंगी तलवार नागिन सा लहराता गंगा के रेत को रौंदता भागा जा रहा है। हिरनी-सी आँखों वाली युवती गंगा में स्नान कर भीगे वस्त्रों में





रेत की ओर आँखें भाड़ कर देखती है।

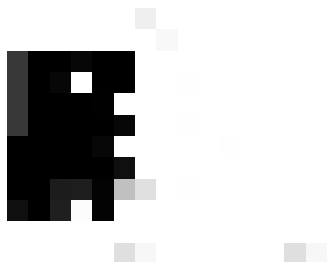
—“ओ पिंगल केशों वाले अरबी घोड़े के सवार रूको-रूको ? क्या यहाँ की गीली मिट्टी तुम्हें बाँध नहीं रही ? यहाँ नीला आकाश, हवा में तैरते, चहचहाते चिड़ियों के झुंड तुम्हें रोक नहीं रहे हैं ?” युवती की खुली आँखें आह्वान कर रही हैं। अब्दुल्ला ने नंगी तलवार को गंगा की लहरों में फेंककर प्रेम की खेती शुरू कर दिया। उसकी गुस्से में लाल आँखें प्रमाथ्रु से भीग उठीं।

बोलो गंगा मझ्या, अब्दुल्ला की हड्डियाँ कहाँ चली गईं। युवती की हिरणी सी विस्फारित आँखें आज भी हवा में खुली हुई टंगी हैं।

माँ गंगे, माँ गंगे कहते हुए पुरोहित पानी से निकल कर घाट पर खड़े हो जाते हैं।—“लाना गमछा सोमना जरा देह पोछ लूँ। पवित्र होकर कर्मकाण्ड का मन्त्र पढ़ा जाता है।”

सोमना-हजाम जीहुजूरी की मुद्रा में गमछा लेकर किनारे पर खड़ा हो जाता है। लाश के पयाताने बैठा लड़का ढर-ढर आँसू बहाता रो रहा है। कोई उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देखता।





---

मुर्दे को आग देने वाले डोम ने रुपये को जमीन पर से नहीं उठाया। चन्दू सिंह के मुँह की ओर प्रश्न और जिज्ञासा भरी निगाह से देखने लगा।—यह क्या कर रहे हैं बाबू साहब ! समय देखकर काम करना चाहिए। अब वह जमाना गया जब मेरे बाप मुर्दे के मुँह में एक रुपये में आग देते थे। तब का एक रुपया आज के पचास रुपये के बराबर है।.....

---

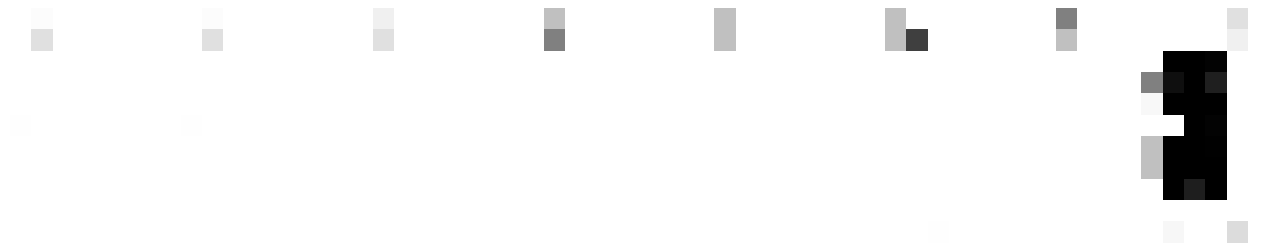
सभी चरवाहे लड़के, जहाँ लोगों ने मुर्दा रखा था, वहाँ इकट्ठे खड़े हो गये। नन्हुआ ने देखा, उसी की उमर का एक लड़का मुर्दा के पयताने बैठा आँख से ढर-ढर आँसू बहा रहा है।

अरे, उसको हो क्या गया ? उसकी इच्छा भी रोने की कर रही है। उसके कलेजे में एक अव्यक्त हूक पैदा हो उठी। यही मानवीय राज है जो, कष्ट, क्रोध, प्रेम और विभिन्न वृत्तियों में प्रतिफलित होता है। इस समय नन्हुआ का अपना आपा नहीं रहा। वह उसी बच्चे का प्रतिरूप हो गया। उसके भी आँसू भरने लगे।

भैंसें गंगा में पानी पीकर किनारे की ओर चढ़ने लगीं। एक औरत किनारे पर कपड़े रख कर पानी में नहा रही थी। एक भैंस कपड़े पर खुर रखकर आगे बढ़ गयी। औरत पानी में से गाली देती दौड़ी।

“अभागे भैंस चराने आते हैं कि सूअर-कुक्कुर का गुह खाने आते हैं।”

लड़कों ने उधर चौंक कर देखा। भैंसों की देह से जो पानी गर रहा था, उससे औरत के रखे कपड़े भीग गये। वह क्या पहनेगी ? यह



सोच कर और कुपित हो गई। और लड़कों की ओर आखे तरेरकर ताकने लगी।

सुर्खा लाने वाले लोग आपस में गपगप कर—“अरे यार कल बी० डी० ओ० ने गजब ढा दिया। सरयू की चौखट-किवाड़, माल-मक्की सब सिपाहियों से उठवा कर चला गया।” बिकरम ने कहा।

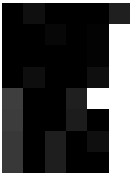
‘सरकार का करजा लेकर लोग सो जाते हैं। आदमी बैठता है। करजा का पैसा नहीं बैठता। वह तो बढ़ता ही जाता है। सरकार जितने दिन पैसा छोड़ेगी, पैसा सूद सहित मोटा हो जाता है। फिर बाड़ी वारन्ट, -भाग पड़ाव। लेना है तो देना पड़ेगा ही। आज नहीं तो कल। इसमें बी० डी० ओ० का क्या कसूर?’ जोधन सिंह ने-बात का तोड़ दिया।

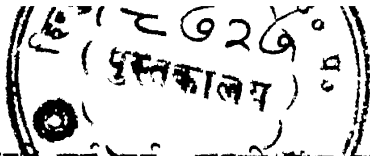
“नहीं भाई, ग्राम-प्रधान बड़ा कसाई आदमी है। सरयू को वह तीन बरसों से खोज रहा था। बच्चा कहीं दांव पर नहीं चढ़ते थे। अबकी पकड़ में आये हैं। कहां जाता है दुश्मन और सांप दिखाई पड़े तो उसे मार देना चाहिए।” सरीखन ने ताव खाकर कहा।

तीनों गर्मजोशी से बहस करने लगे। तीनों में बिकरम ही ऐसा था, जो सरयू के प्रति सहानुभूति रखता था। जोधन सिंह तो उससे इसलिए खार खाये हैं कि गाड़ी बाजार ले जाने पर सरयू ने अपना धवला बैल नहीं दिया था। सरीखन कांग्रेस का चवन्निया में घर है। वह सरकारी मुलाजिमों के हर काम को जायज सिद्ध करने की कोशिश करता है।

चेतन डोम को बुला लाया। वह सबसे अलग रेत पर बैठ गया। गांजा पीने से उसकी अधपकी ढाढ़ी भूरी हो गयी थी। कौड़ी के समान मिचमिचीं आँखों में कीचड़ भरी थी। चेहरा काला भुच्च। टाँग तक फटी मैली धोती, फटा कुर्ता और सिर पर फटा गमछा बाँधे था। वह पलथी मारकर निरीह सा बैठ गया।

दो जने, जो लकड़ी लाने गये थे, सिर पर लादे आ गये। लकड़ी को उन लोगों ने बालू पर पटक दिया। कुछ देर तक वातावरण में सन्नाटा।





रहा। गंगा की लहर छर-छर करती थी। दूसरे से टकरा रहीं थीं। तीन-चार चिड़ियाँ आकाश से नीचे आयीं और लहरों के ऊपर तैरतीं मछलियों को चोंच से भगदटा मारकर पकड़ कर फिर आकाश की ओर उड़ गईं।

चेतन की नजर लड़के पर गई, जो अब भी आंसू बहा रहा था। चेतन के मन में करुणा भर उठी। ओह, बेचारे के सिर से बाप का साया उठ गया। यह जानता भी नहीं है कि बाप के मरने के बाद क्या होगा? फिर भी एक अव्यक्त, अलक्ष्य भय से वह रो रहा है। चेतन ने अपने गमछे से बच्चे के आंसू पोछे और पुचकार कर चुप किया।

नन्हूआ को रोते देखकर एक लड़के ने पूछा, “क्यों वे नन्हूआ तुम क्यों रोते हो? तुम्हारा बाप थोड़े मरा है। क्यों रे चुप होता है कि नहीं। चलो हम लोग चलें यहां से। आज इसकी माई से कहेंगे कि घाट पर मुर्दे को देखकर रो रहा था।

दूसरे लड़के ने कहा,—“किनारे भूत, चुड़ैलें, घूमती रहती हैं। वह हवा के समान होते हैं। कभी-कभी आदमी के दिमाग पर चढ़ जाते हैं और अपनी बोली बोलवाने लगते हैं। आदमी रोने लगता है और अपनी बात भूलकर भूत की बात अक्-बक् बकने लगता है। नन्हूआ को जरूर भूत लग गया है।

“चलो पानी से आखें धो लो!” पहले लड़का उसे हाथ पकड़कर किनारे ले गया।

चन्दू सिंह ने अपने हाथ से चिता सजाया। चन्दू सिंह के मन में एक अजीब खालीपन और कांटे-सी चुभन की तकलीफ हो रही है। यह तकलीफ मौत के कारुणिक रूप को देखकर नहीं, न लड़के को रोते देखकर हो रही है बल्कि इन सबसे तटस्थ होने के बावजूद तकलीफ हो रही है।

चेतन लड़के की बांह पकड़कर गंगा में नहलाने के लिए ले गया। डोम ने आग जलाकर तैयार किया। चन्दू सिंह ने डोम से पूछा,—“मुर्दा के मुंह में आग देने के लिए क्या लोगे।”

www.ck12.org



डोम ने जवाब दिया,—“खेत, बाग, धन-दौलत-आग देने का क्या नहीं मिलता है। आप लोग क्या देंगे यह मैं सुनना चाहता हूँ।” डोम ने नरमी से उत्तर दिया।

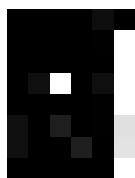
“अरे, चेतन इसे दस रुपये दे दो। इसकी यही आशा है।” चन्दू सिंह ने आदेश की मुद्रा में कहा। चेतन ने दस रुपये टेंट से निकाल कर दे दिये।

डोम ने रुपये को जमीन पर से उठाया नहीं। चन्दू सिंह के मुँह की ओर जिज्ञासा भरी निगाह से देखने लगा।—“यह क्या कर रहे हैं बाबू साहब ! समय देखकर काम करना चाहिए। अब वह जमाना गया, जब मेरे बाप सवा रुपये में आग देते थे। अब तो पहले का एक रुपया आज का तीस रुपया। एक रुपये में सिर भर बोभे का बाजार से अनाज खरीदने पर मिलता था। अब तो पचास रुपये में सिर का पूरा बोभ भी नहीं हो पाता। विचार कर काम कीजिए !”

चन्दू सिंह लाख उलटी-सीधी कहते, डोम सुन ही नहीं रहा है। हार कर उन्होंने चेतन से कहा, दो रुपये और दे दे। “चेतन ने चन्दू सिंह के मुँह की ओर देखा और मन में सोच—” डाक बोल रहें हैं। यह नहीं सोचते कि पैसा कहां से आया है ? लावारिश बच्चा कल किस घाट लगेगा ?

नन्हुआ की आंखें धुनाकर बच्चे पीपल के पास चले आये। धूप के बड़ जाने से सबको पसीना सा आने लगा। सबने अपनी-अपनी गठरी की रोटी निकाली। नन्हुआ का मन जैसे छोटा हो गया। रोटी तोड़कर खाता था लेकिन गले से उतर नहीं रही थी। उसने औरों से पूछा,—  
“तुम लोग खाना चाहो तो ले लो, मुझसे खाया नहीं जाता। उसने रोटियों को औरों को दे दिया। अपने किनारे जाकर पानी पिया।

धूप से भैसे पीपल के पास इकट्ठी होने लगीं। नन्हुआ ने अपनी भैंसों को देखा। पेट भर गया है। खा पीकर सभी लड़के भैसे लेकर घर चले। घाट पर चिता जल उठी। लड़के दूर-दूर से धुँआ उठते देखते रहे।



### ३३ अंधा सूरज

गांव के लोग खेतों से काम कर लौट गये थे। दोपहरी में लोग रोटियों पर झुक गये। पेड़ों और अन्य चीजों की छायायें पता नहीं किस भय से फरार हो गई हैं। इस समय चारों तरफ गांव की सड़कों और चौराहे पर सन्नाटा ही सन्नाटा है। आंगन की खामोशी से घर का हर कमरा जैसे डरा-डरा सा है।

नन्हुआ घर पहुँचने पर माँ की गोद में सिर रखकर पड़ गया।

बच्चे की दशा देखकर माँ जैसे हताश सी हो गई। माँ ने पूछा,—  
“कुछ खालो नन्हू, तुम्हें हो क्या गया है?”

नन्हुआ ने जवाब नहीं दिया। गोद में और सिर छिपाकर सो गया। माँ देवी देवताओं को गुहराने लगी।

“हे शिव पार्वती, हे सती मइया! मेरे बबुआ की रक्षा करना। तुम्ही लोग इसके सहायक हो।” आंचल के खूंट को लेकर कर जोड़े माँ सिर झुकाकर पुत्र की खैर मनाने लगी।

नन्हुआ की माँ ने दरवाजे की ओर देखा। तीन-चार लड़के आते हुए दिखलाई पड़े।

आंगन में आकर एक ने कहा,—“अरे आ कर देखो ना, पता नहीं उसको क्या हो गया है? जब से आया है, गोदी में सिर छिपाये हाँफ रहा है। पूछने पर कुछ नहीं बताता। समझ में नहीं आता क्या करूँ?”

दूसरे लड़के ने कहा,—“हो क्या गया है। इसको भूत लग गया है। कितारे जब हम लोग खेल रहे थे, तो एक मुर्दा जलाने के लिए लोग आये। हम लोगों के साथ यह भी गया। यह मुर्दे को देखकर रोने लगा। लगातार रोता रहा। इसी के रोने से हम लोग जल्दी घर लौट आये। यहाँ भी वैसा ही रो रहा है क्या?”

माँ ने रुआँसी होकर कहा,—“जब से यह आया है, रह-रहकर कराहता है। आँखें खोलता नहीं। हल्की-हल्की देह गरम होती जा रही है।”



लड़के भौंचक्के और दुखी होकर नन्हुआ की चारपाई की ओर ताकने लगे। घर के भीतर माँ के जाने पर एक लड़के ने उसे धीरे से पुकारा,—  
अरे नन्हुआ नन्हुआ मे । माँ अकल्ला मे ।”

का मुंह ताका और वहीं जमीन पर मौन-भाव में बैठ गये।

उन लोगों के दायें, जूटी थानी रखी थी। जिम पर मक्खियाँ भिन-भिना रही थीं। कोने में एक बिल्ली सिकुड़ी बैठी थी। आँगन को देखने पर लगता था कि सूरज ढल गया है इसलिए धूप मीठी हो गयी है।

आँगन के एक कोने में अमरुद का एक पेड़ है। उससे एक पका अमरुद धब्ब से गिरा। उन लड़कों में से एक लड़का दौड़ा और अमरुद उठाकर ले आया। तब तक माँ कटोरी में गाय का घी लेकर चारपाई के पास आयी। माँ का चेहरा रूआँसा जैसा है। लेकिन आँखों में आँसू नहीं हैं। दुख के भाव को व्यक्त करने के लिए होंठ थोड़ा सिकुड़े हैं और वह रह-रह कर घुट-घुट कर लम्बी साँस लेती है।

माँ के चेहरे की ओर ताक कर लड़के अमरुद खाने की हिम्मत नहीं करते। सब पके अमरुद की ओर उत्सुकता से ताक रहे हैं। लड़कों के मन की बात जानकर माँ ने अमरुद मांग लिया और उसे चार टुकड़ों में चीर कर लड़कों में एक-एक बांट दिया और कहा लो सब खाओ। सारे लड़के सहमे हुए दाँत से अमरुद कुतरने लगे।

कटोरे से उंगली से घी निकाल कर माँ नन्हुआ के लिलाट पर धीरे-धीरे मलने लगी। छाती के पाँजर, कनपट्टी और आँखों के पपोटे पर घी लपेट कर मल-मल कर उसे सुखाने की कोशिश करने लगी।

कोने की बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज सुनकर बच्चों ने बिल्ली की ओर सिर घुमाकर देखा। बिल्ली भाग गई।

चारपाई पर पड़े-पड़े नन्हुआ को बुखार आ गया। माँ ने उसे चादर से ढक दिया। नन्हुआ धीरे-धीरे कराहने लगा।

नन्हुआ की माँ ने पड़ोस की चाची को लड़कों से कहकर बुलवाया।



### ३५ अंधा सूरज

चाची ने नन्हुआ को देखते ही कहा—“अरे, इसे तो हवा-बतास लगा है । जरा सा भी चूकोगी तो बच्चे से हाथ से बेहाथ हो जाओगी । इ अभागी जानती है कि दीन-दुनियां कितनी खराब है फिर भी बच्चे को मुर्दघटिया भेज देती है । जानती नहीं कि पलभर में क्या से क्या हो जाता है । गांव में कितने ओभा-जोइस हैं ? किसी को बुलाकर दिखा देना चाहिए ।”

चाची की उलाहना भरी बात सुनकर नन्हुआ की मां ने कहा,—  
“मैं अकेले कहाँ-कहाँ छिछियाऊँगी ? आप भी साथ चलो चाची ।”

—“अच्छा ठीक है । मैं अभी बहू को कहकर आती हूँ कि वह घर-घरआर करके रखे । ।” चाची यह कहकर अपने घर चली गई ।

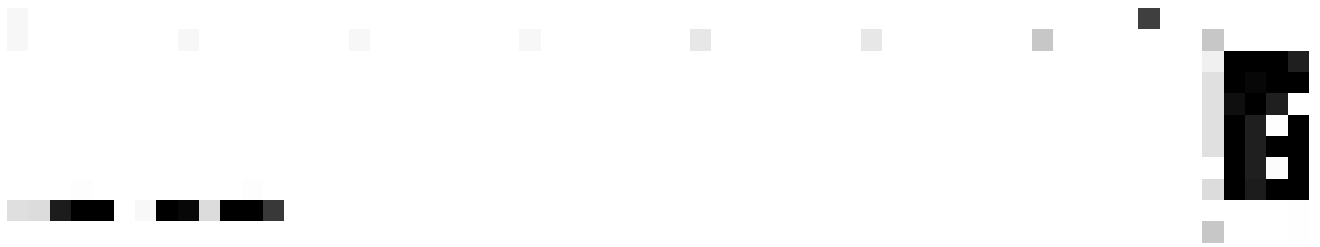
बाहर डुग डुगी की आवाज सुनकर लड़के सड़क की ओर दौड़ गये । एक चौकीदार डुगी बजाकर घोषणा कर रहा था ।

—“सुनो पंचों, कल से गांव में मथुरा की पार्टों की तौटंकी होगी । शाम को सात बजे शिव के मन्दिर के पास आप लोग इकट्ठे होंगे । डुग-डुग, डिम-डिम की आवाज से गांव के लोगों के कान खड़े हो गये ।

चाची बहू से कह रही है । —“देखना बहू, खेत से भिंडी तोड़कर लाई हूँ । उसकी सूखी सब्जी बना देना । आटा गूथ कर रोटी पकाकर रखना ।”

बाहर अंधेरा बढ़ने लगा । एक काली छाया गांव के छप्परो, पेड़ों की फुनगियों से उतरकर धीरे-धीरे धरती पर रूई के काले फाहे के समान फैलने लगी । लगता है कि आकाश से आदिमकाल का कोई विराट पशु उतर रहा है, जिसकी छाया धरती तक आ रही है ।

नन्हुआ की मां चाची को लेकर चमारों की बस्ती की ओर चली । सुना है देवन भगत ने एक नये बड़म का चौरा बांधा है । टोना-टोटका के लिए ताबीज देते हैं । अगर प्रेत-बाधा सम्हाल के बाहर हो जाती है





तो खुद देखने चले आते हैं। हाथ में लालटेन लेकर चाची नन्हुआ की मां के साथ भगत के थान के पास पहुँची।

नीम के एक झवरीले पेड़ के नीचे दिया जल रहा है। चटाई पर तीन-चार लोग बैठे चिलम दगा रहे हैं। एक आदमी चिलम में कसकर टान लगाकर अंधेरे में चिमनी के समान धुआ फेंकने लगा। अंधेरे में उसकी आखें चमक उठीं। चिलम पर आग दहकने से धोड़ा उजाला हो गया।

चाची ने पहुँचते ही पुकारा—“देवन भगत हैं।” बैठे लोग चिढ़ाकर नशे में ताकने लगे। देवन भगत उठकर खड़े हो गये।

—“कौन, चाची! क्या है?” देवन ने विनम्र स्वर में कहा।

—“देखिये न, बहू के नन्हूके को हवा लग गई है। मुर्दहा घाट अभाग भाँस चराने गया, तब से आखें बंद किये पड़ा है। न खाता-पीता है, न कुछ बोलता है। बुखार भी हो आया है।” चाची ने कहा।

—“लवंग पढ़कर देता हूँ। पीसकर पिला दीजिएगा। कलुआ नट की कृपा से अच्छा हो जायेगा।” भगत ने नहीं चलने का बहाना किया।

—“नहीं भगत जी, चलना होगा।” चाची ने जैसे जिद्द करके कहा।

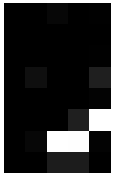
भगत ने लाठी ली। लालटेन लिया, और खंखार कर कहा—“लालचन मेरी भाँस को दुह कर जाना। बल्कि मैं जल्दी ही, करीब आधा घंटा, पैतालिस मिनट में चला आऊंगा, जाना मत।”

घर पहुँचने पर देखा कि घर भाँय-भाँय कर रहा है। नन्हुआ का ही पता नहीं।

—“अरे, यह क्या? घर में एक भी बर्तन नहीं है।” नन्हुआ की मां चीख मार कर बेहोश होगई।

×                      ×                      ×                      ×

रामपुर बाजार में एक पगली शाम उतरने के बाद रह-रह कर



## ३७ अंधा सूरज

चीख पड़ती है। उसके चीखने से रात का बदहवास अंधेरा कांप कर रह जाता है। बाजार के ग्राहक और दुकानदार उसकी चीख से कभी-कभी चौंक जाते हैं।

“बबुआ है रे ! रे नन्हूआ !” नन्हूआ होतब तो बोले। रात के अंधेरे में उसके पुकार की प्रतिध्वनि गूँजती रहती है आधीरात तक।

×

×

×

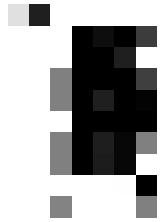
ट्रेन में तीन साधुओं के साथ बैठा हुआ नन्हूआ पत्थर की मूरत बना है। किसी से कुछ पूछता नहीं। साधुओं ने कुछ खिलाना चाहा, लेकिन उसने सिर घुमा दिया।

यह सच है कि नौटंकी पार्टी अपनी सुरक्षा के लिए शांतिर बदमाशों को साधु-सन्यासी के वेश में रखती है। नौटंकी पार्टी का मालिक जब जान गया कि इस गाँव में कोई खतरा नहीं है वे टहल-टिकोरा के लिए साधु-वेशाधारी निकले और खाली घर देखकर नन्हूआ को बेहोशी की हालत में उठाकर ले गये। बर्तन चुराने की उनकी इच्छा नहीं थी लेकिन खाली मकान देखकर बिना बाधा के उसे भी उठाकर ले गये।

सुबह में ट्रेन ने सीटी दी। रात के जागरण के कारण सब अलसाये, उन्तीदे हैं। चाय गरम, गरम चाय ! पूड़ी। “स्टेशन पर हाकरों ने हाँक लगायी। कुली.....कुली !” आवाज गूँजने लगी।

साधु बच्चे को गोदी में उठाकर प्लेट फार्म पर उतर गये। सबने हाथ मुँह धोकर नाश्ता और चाय पी। नन्हू ने मुँह में कुछ नहीं डाला। हाँ, यह हुआ कि उसके मन में करुणा और आतंक का प्रभाव था और जिस वजह से उसके मानस पर विपरीत प्रभाव पड़ा था, वह इस सम्भावी आतंक से बदल गया।

आश्रम तक जाते-जाते नन्हू का मन फरहर होने लगा। आश्रम के फर्श पर कंबल बिछाकर नन्हू को साधुओं ने लिटा दिया। वह अतमना लेट गया। कुछ रात्रि जागरण से, और कुछ नहीं खाने से वह इतना लस्त हो गया कि घास के समान पसर गया।



करीब आधा-पौन घंटे के बाद गुरू जी महाराज आये। सिर पर जटाजूट, सफेद लम्बा श्मश्रु, लाल भूल पहने, सिर पर भभूत लगाये, हाथ में त्रिशूल लिए नन्हू के सामने खड़े हो गये।

देखा, बच्चा मरीयल-सा पड़ा है। जिस आश्रम में गायें खाकर मस्त हो जुगाली करती हैं वहाँ यह लड़का मरियल बन कर कैसे रह सकता है। बाबा दाढ़ी-मूँछ के भीतर बुदबुदाये। आश्रम के भीतर जाकर उन्होंने एक जड़ी को टटोला और उसे पीसकर नन्हूआ को पिला दिया। बाबा ने कहा,—“बेटा, सो जाओ।” उन्होंने आश्रम के टहलुआ को पुकारा “ऐ रोसना, दो घंटे के बाद इस बच्चे को मूँग की दाल की खिचड़ी बनाकर खिला देना।”

शाम हुई, सुबह गुजरी। इस तरह कई दिन गुजरे। नन्हूआ को बाबा ने इतना प्यार दिया कि उसके मन का सारा रोग दूर हो गया। कमंडल में पानी लेकर वह चहकता हुआ तुलसी, गुलाब बौर बेला के पौधों की जड़ में पानी देकर पटाने लगा।

घूप में उछलते बछड़ों से खेलता। बाबा जब सोने जाते तो संस्कृत का श्लोक रटाते। महा भारत, रामायण की कथा कहते। इस बीच वह बाबा का पाँव टीपता।

कहाँ गाँव गंवई का वातावरण। धान-जुआर के खेत। गंगा का अच्छोर किनारा। आम और महुआ के बाग और कहाँ मथुरा के सन्यासियों का आश्रम।

बालक की बिकासशील प्रतिभा से चमत्कृत हो कर एक रात सोते समय बाबा ने सोचा, नन्हें को संगीत का आचार्य बनाया जाय तो कितना अच्छा हो। एक दिन बाबा उसे खालियर लेकर चले गये। वहाँ उसे संगीत के एक विद्यालय में दाखिला कराकर लौट आये।

सुबह का वातावरण। नन्हू कमरे के बाहर चारपाई पर सोकर उठ बैठा था। फूलों की पत्तियों से ओस की बूंदें भर रहीं थीं। घास के नोकों पर ओस घूप में ऐसी चमक रही थी जैसे सोने की बूंदें चमकती हों।



## ३६ अंधा सूरज

आकाश खुला है। चिड़ियाँ झुंड के झुंड चिर-चिर बोलतीं उड़ रही थीं। आज का आकाश कितना सरल और स्वच्छ है। आज रह रह कर नन्हूआ का मन इतना गदगद क्यों हो रहा है। क्यों सामने को हर चीज उसे सुन्दर लग रही हैं। उसी समय एक वयस्क संगीतज्ञ उसके सामने से गाता हुआ गुजरा।

बीती विभावरी, जागरी,

अम्बर पनघट पर डुबो रही

तारा घट उषा नागरी.....

संगीत की स्वर लहरी ने नन्हें को पवित्र बालक-मन पर कैसी छाप छोड़ा इसका लेखा जोखा तो नहीं दिया जा सकता, लेकिन नन्हें को ऐसा लगने लगा कि उसकी आँखों के सामने रंगीन तितलियाँ उड़ने लगीं। जीभ पर कैसा मीठा स्वाद भर गया।

सिंधिया दाईं रोज सुबह विद्यालय के बर्तन माँजने आती है। उसकी आठ-दस बरस की बेटी माँ का आँचर पकड़े चली आती है। बासी रोटी-भात खाकर वह इधर उधर कुलेल करती बिना मतलब ठी-ठी, ठी-ठी हँसती रहती है। इस बखत उस छोकड़ी का हँसना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन उस अच्छा लगने के स्वाद को व्यक्त नहीं कर पाने के कारण नन्हूआ चिढ़ जाता है।

“इच्छा करती है कि इस छोकरी को एक तमाचा मारूँ। निर्लज्ज बात-बात में बतीसी दिखाती है।” नन्हू मन ही मन बुदबुदाया।

अभी चैत चढ़ा नहीं था। गेहूँ की बाली पक कर लटक गयी थी। मेड़ों पर गौरैया फुर्र-फुर्र पंख फड़काती उड़ रही थी। बगल की कच्ची सड़क से बैलगाड़ी जा रही थी। नन्हें खेतों की ओर लोटा लेकर टट्टी फरागित को निकला है। बैलों के गले की घंटी की दुन्न-दुन्न और पंछियों की चहचहाट सुनकर उसकी ऐसी इच्छा हो रही है कि वह फसल लगे खेतों में दौड़े। खूब जोरों से हंसे। वह भी चिड़ियों के समान अनाप-शनाप स्वर में गाये। सामने खाई थी। चमारों ने मरे हुए मवेशी की





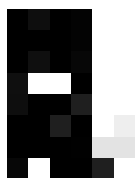
खाल उतार कर उसके शरीर के सिरजना (डाँचे) को तंगे डाल दिया है। खून से लाल लाश पर पचासों गीध जुटे हुए उसे नोच रहे हैं। कुत्ते माँस खाने के जोश में गीधों पर टूट पड़ते हैं। इस दृश्य को देखकर नन्हें पवित्र और सरल अजीब कड़वाहट और धिनीनेपन से भर उठा। उसका रोम-रोम कंपकपा गया।

रूप और कुरूप का एक साथ दर्शन कर नन्हें का का कैशोर्य-जन्य सुकुमार मन रिक्त भाव से पीड़ित हो गया। वह खुले पाँव घास पर चल रहा है। घास की मुलायम नोंकें नन्हें के तलवे में गड़ने से उसे सहलाने का आनन्द मिल रहा है। उसने झुक कर मिट्टी का ढेला उठाया और लोटे में रख लिया।

विद्यालय में आने पर उसका मन उचट सा गया। सामने, आम के पेड़ के नीचे चिड़ियाँ टी-वी, टुट्ट-बुट्ट, चिर्र-चिर्र बोल रहीं हैं। बगल में गायें बैठी हुई जुगाली कर रही हैं। नन्हें बिना हाथ और लोटा धोये सुस्त होकर बैठ गया। उसने सुना कोई तानपूरा बजाने लगा। तानपूरा बजने पर ऐसा लगा कि उसके मन के अशान्त में तल में बैठी मछलियाँ ऊपर आ गई। मन में जैसे एक अव्यक्त हलचल होने लगी। वह अनमना होकर उठा और पानी लेकर हाथ धोने लगा।

नन्हें अपने अकेलेपन को संगीत के स्वर में भर लेना चाहता है। माँ के आँचल की छाँह जब से उसके सिर से उठी उसके अस्तित्व की जड़ जैसे हिल गई हो। लेकिन बाबा के स्नेह के जल ने उसमें रस पैदा कर उसको मजबूत बना दिया। वह जब से विद्यालय में संगीत सीखने आया है, स्नेहविहीन उसका मन उचाट सा रहता है। कभी उसे दासी की दस वर्षीया बेटी आकर्षित करती, कभी संगीत की स्वर-लहरी उसे बाँधती। लेकिन उसे चैन नहीं मिलता। माँ का प्यार गंगा जल है जिसे पाकर वह तृप्त रहा करता था।

देखते-देखते सुबह के दस बज गये। लोगों की आवाज ही से गहमा गहमी लगने लगी। नन्हें खा-पीकर विद्यालय में चला गया। तबला का



...



४१ अंधा सूरज

क्लास चल रहा था। शिक्षक एक छात्र को तबले का रियाज करा रहे थे।

“ना-धी, धिन्ना, ता टिक् तिन्ना,  
धिर किट तिन्ना ... धा ...।

तबले का बोल निकालने के लिए एक छात्र भरपूर प्रयास कर रहा है। वह कोशिश करने के बावजूद बोल नहीं निकाल पा रहा है नन्हें अनमना बैठा टुक्-टुक् ताक रहा है।

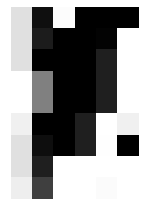
—“इस मूरख को अभी तक तबला पर हाथ रखता नहीं आता। तीन बरस गुजर गये।” तबले का शिक्षक छात्र को झिड़कने लगा। छात्र सुन कर सहम सा गया।” नन्हे क्लास की कार्रवाई को अवाक ताक रहा है। छात्र फिर तबले पर रियाज करता है,—

“ना-धी धिन्ना ता तिक, तिन्ना  
धिर किट तिन्ना ... धा ...

दोपहर होते ही नन्हें अपने कमरे में चला आया। उसने देखा, कमरे के कोने में मकड़े ने जाला लगा रखा है। एक छिपकली मकड़े की ओर धीरे-धीरे बढ़ रही है।

अरे, छिपकली मकड़े की टांक पकड़कर निगलने लगी। मकड़ी छटपटाने लगी। नन्हें ने भाड़ से मकड़ी को छिपकली से बचाने के लिए उकसाया। भाड़ के लगने से छिपकली की पूंछ कट कर जमीन पर तड़पने लगी। उसने देखा,—“अरे छिपकली पर कोई असर नहीं हुआ।” एक बार चारा काटते समय उसके बचपन के लंगोटिया लखन की ऊंगली छट से कट गयी थी। वह भाई-बप्पा करके घण्टों चिल्लाता रहा। उसकी भी कटी ऊंगली जमीन पर तड़पी थी। उसे खूब याद है।

जमीन पर बेल के गिरने से धम्ब से अवाज हुई। वह चौंक कर कमरे से बाहर आया देखा कि रत्न शंकर बेल का फल लूटने के लिए दौड़ रहा है।



बेल उठाकर उसने नन्हें को पुकारा —“अबे चूलिए, वहाँ क्यों खड़ा है, आओ बेल फोड़कर खायें ।

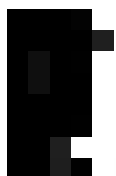
रत्नशंकर और नन्हें, दोनों ने बेल को खाया । हाथ और मुंह से उसके लस्से को छुड़ाने के लिए रगड़-रगड़ कर पानी से धोया । नन्हें ने मौज में आकर रत्नशंकर से कहा, यार टांसुरी गले से कोई लोकगीत गाओ । मन बड़ा उदास है ।

रत्नशंकर ने गाना शुरू किया—

गंगा जी के ऊँची अड़रिया, तिवइया एक रोवेला हो,  
गंगा मइया अपना लहरिया हमके दे तो त हम धंसी मरती न हो  
किया तोरे सासु ससुरे दुख किया नइहर दुरि बसे हो  
ए तिवई किया तोरे सइयां परदेश कवने दुख रोवेलू हो  
नाही मोरे सासु ससुरे दुख नाहीं नइहर दुरि बसे हो  
गंगा मइया नहीं मोरे सइयाँ परदेसे कोखिया दुखे रोइलें हो  
सात बलक दइबा दिहले त सातों कंस हरि लिह ले हों  
ए गंगा मइया अठवें गरभ अवतार त सेहो ना भरो सीले हो ।

गीत सुनकर नन्हें की आंखों में सांसू भर आये । स्त्री के लिए कोख से बढ़ कर कोई दुख नहीं होता । गंगा के ऊँचे कगार पर एक नारी रो रही है । हे गंगा मइया, यदि आप अपनी लहर मुझे दे देती तो मैं उसमें डूबकर मर जाती । उस नारी का करुण क्रन्दन सुनकर गंगा मइया ने उससे पूछा कि हे नारी तुझे सास-ससुर द्वारा दिये गये संत्रास का दुख है अथवा नइहर दुर बसने का दुख है, या तुम्हारे पति परदेश हैं—आखिर तुझे कौन-सा दुख है ?

जवाब में दुखी अबला कहती है,—“मेरे पति परदेश में हैं—बल्कि मैं अपने कोख के दुख से रो रही हूँ...। मुझे दैव ने सात बालक दिये और सातों को कंस ने हर लिया । अब आठवीं सन्तान मेरे गर्भ में है । उसे भी जीवित रहने का भरोसा नहीं रखती । मां गंगे, तुम्हारा कलेजा तो



## ४३ अंधा सूरज

पानी का है । रो मत तिवई मैं अपने कोख की सन्तान मार तुम्हारे कोख को आबाद करूँगी । धन्त मां ।

नन्हें विलप उठा । दोनों दोस्त बहुत देर तक मौन साध कर बैठे रहे । सन्नाटे को भेदती हुयी सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट की आवाज आ रही है । पत्तों के बीच से धूप छन कर उन दोनों की देह पर पड़ रही है ।

बैठे-बैठे नन्हें की आँखें बंद हो जाती हैं—दुग्ध धवल सैकल-शय्या पर बचपन का किलोल । खेत वक-पंक्ति का गंगा की चंचल लहरों पर तिरना । मां का स्वस्थ गेहुआ रंग का मुखमण्डल-सिन्दुर भूषित मांग । सब कुछ तो साफ दृष्टिगत होता है । विद्यालय के संगीत शिक्षक कभी-कभी प्रभात काल भाव विह्वल हो कर गाते हैं ।

प्राणधन को स्मरण करते । नयन भरते-नयन भरते ।

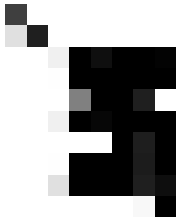
माँ की याद में नन्हें की आँखें टप-टप भरती हैं ।

रामपुर बाजार उसर जाने पर नन्हें की माँ जो पागल हो गई हैं, अंधेरे में नंगे दौड़ती है ।

“बबुआ है रे ! बबुआ है रें ! ! गहन अंधकार की ओर ताक कर हाँक लगाती है । मां गंगे तुम्हारा कलेजा तो पानी का बना है । तुम अपना कोख मार कर नन्हें को क्यों नहीं लौटा देती ?

अहसास पूर्ण नग्न विक्षिप्त नारी की चीख निविडतम निगल जाता है । शायद यही ध्वनि शून्य में गूँजती है । नन्हें रह-रह कर उदास हो जाता है । वह रात को उठकर खिड़की से ताकता है ।







---

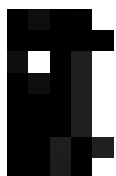
.....—‘हे, ठीक नौटंकी की जानकी की छम् ! बैलगाड़ी में बैठी दुलहिन का गोरा मुँह देखकर रकटुआ का मुँह खुला का खुला रह गया। उसने अचरज के साथ निठलुआ के कान में कहा। निठलुआ ओठ पर उँगली रखकर आँख फाड़े ताकता रह गया। .....दुलहिन ने पर्दे में मुँह छिपा लिया।

---

रामपुर बाजार के बगल में एक गाँव है सोनपट्टी। पक्की सड़क से जो सड़क फूटकर निकलती है, वह सीधे सोनपट्टी पहुँचा देती है। इस समय तो सूखा दिन है। बरसात में इस पर इतनी कीचड़ और पानी का जमाव होता है कि किसी राही-बटोही का चलना दुसवार हो जाता है। पक्की सड़क से उतर कर आधा मील चलने पर यह कच्ची सड़क धनुषाकार हो जाती है। सोनपट्टी के लोग इसी सड़क के किनारे गाँव का मुर्दा जलाते हैं। लच्छू भगत का एक आम का पेड़ है। इसे कुबराहा आम कहते हैं। आँधी में इसका अंग टूट कर गिर गया है। चैत चढ़ते ही स्कूलिया इस पर ढेला फेंकना शुरू कर देते हैं। लगातार चिता की धुआँ लगने से आम के पत्ते ऐसे हो गये हैं जैसे तीन महीने के बच्चे की आँख में काजल किया गया हो।

कल सुबह यहाँ एक चिता जली थी। अभी हाथ से छूने पर राख गर्म लगती है। मस्तक का चउर सफेद दिखलाई पड़ता है। चरवाहे लड़के उसे गेंद के समान लाठियों से मार-मार कर उछालते हैं।

“यह देखो, चन्नर साबका सिर कितना बरियार है।” यह कहते हुए रकटुआ ने एक लाठी उस पर मारा। सिर का चउर फूट कर चकनाचूर



हो गया। सड़क से बैलगाड़ी ले जाते हुए एक गाड़ीवान ने डाँटा।—  
“ऐ, क्यों मरे हुए आदमी का अपमान करते हो। तुम लोगों को जरा भी विचार नहीं।” गाड़ी के ओहार में छिपी हुई दुलहिन ने पर्दा उठाकर देखा। सामने अछोर धान का शस्य विहीन खेत। घास-चरती हुई गाये-भैंसें।

“दिदिया की संसुराल यही है। धान खेती के उधर.....उधर।”

दुलहिन का गोरा मुँह देखकर रकटुआ का मुँह खुला का खुला रह गया।

“हे, ठीक नौटंकी की सीता जी के छप (समान)।”

उसने अचरज के साथ निठलुआ के कान में कहा। निठलुआ ने होठ पर उंगली रखकर अचरज से कहा,—“हाँ रे!”

ओहार का पर्दा गिराकर दुलहिन ने अपना मुँह छिपा लिया। गाड़ी-वान के बैल हाँकने से बैल के गले की घंटियाँ टुन-टुन बज उठीं। चरवाहे खेलते हुए मसान से दूर चले गये।

यहीं से आधे घंटे का रास्ता है,—सोनपट्टी। कच्चे पक्के मकान का गाँव। कुछ दूर उत्तर मुसहरों की बस्ती है। गाँव के बीचोबीच एक दालान है। दालान के भीतर छः आदमी बैठे हैं। दो आदमी चारपाई पर और चार चौकी पर बैठे हैं। दालान के पिछवारे जनानी घर है। लाल-पीले वस्त्रों में सजी गाँव की औरतें सरसों, तीसी और ओढ़ल के फूल जैसी लग रहीं हैं।

चारों ओर हाँक परी है नउनिया कहाँ गई। घर की मलकाइन को तो साँस लेने की फुरसत नहीं है। आँचल के छोर से रह-रहकर ललाट का पसीना पोंछती है। आँगन में तीन-चार कमसिन लड़कियाँ भूम-भूम कर गीत गा रही हैं।

हेराइ गइल कंगना, हो नदिया नारे

पहली पठवनी चललन ससुर जी

तबो ना मिलल कंगना, हो नदिया नारे



दुसरी पठवनी चललन ससुर जी  
तबो ना मिलल कंगना, हो नदिया नारे  
तीसरी पठवनी चललन देवर जी  
तबो ना मिलल कंगना, हो नदिया नारे  
चउथी पठवनी चललन सइयाँ जी  
बहत आवे कंगना हो नदिया, नारे

गीत के अनुगूँज में चाची की आवाज डूब जाती है ।

“अभी तक न चौका पूरा गया, न छउंरी को उबटन लगाकर नहवाया गया । बेचारी कब से कोने में बैठी, पड़ी है ।”

चाची की बात पर कोई कान नहीं देता । बारात कल आने वाली है । दालान में बैठे मरद चिन्ता में है, कैसे इज्जत बचेगी ? बारात वाले बड़े सरकस हैं । उन लोगों ने धमकी दी है, गाँव के कुँए का पानी नहीं रहने देंगे हम लोग । बेटे वाले पार्टी ने अपने समूचे गाँव-जवार को हाँक लाने का कड़ा है ।

दुर्गा सिंह से सब कोई राय-सलाह ले रहे हैं । वह गाल पर हाथ रखे चौकी पर बैठे हैं । अरे, मौसी आई नहीं । जाकर देखो तो ।

कुसुमी ! बिना काम के भर-भर दिन आँगन में बैठी गलचौर करती है । आज जग-पुरोजन का दिन है तो घर के कोने में मुँह छिपा लिया । जिस गोतिया-देयादिन को न्यौता गया, सब चले आये । पता नहीं आज उनको क्या हो गया है ?

मौसी घर के ओसारे में बैठी नाती को खेला रही हैं । दालान से निरंजन सिंह उठकर आये । माँग पूछने लगे—“मइया, क्या तुमने मौसी से कुछ कहा तो नहीं । वह क्यों अठान-कठान जोते घर बैठी है । गाँव के हर आदमी का चेहरा बराती के स्वागत में खुशी से चमकता है । उनके मुँह पर क्यों कालिख लगी है ।

आँगन में गाती हुई लड़कियों का गीत, गाते मुँह नहीं दुखता है,—



भल हउ रानी कोसिला रानी किन बउरावल हो,  
आरे करउ रमइया जी के मंडन उहि सुख पावहु हो ।  
घर-घर फिरेली कोसिला रानी गोतिनी बोवावेली हो,  
गोतिनी हमरे मड़इया तरे आव रमइया जी के मंडन हो ।

गोतिया त अइली अंगन भरि गोतिनी ओसारा भरि हो  
आरे एक नाहीं अइली केरइया मड़उआ नाहीं सोहई हो ।

निमन्त्रित करने पर आंगन पर गोतिया आये और ओसारे गोतिन ।  
लेकिन निरंजन सिंह की मौसी नहीं आई । मौसी की गोदी में चार वर्षीया  
नाती, जमीन पर चिट्ठा दौड़ते देखकर गोदी से निकल जाता है । वह  
बार-बार चींटे को पकड़ना चाहता है । चींटा उसकी पकड़ में नहीं  
आता । उसे पकड़ कर अलग करने पर चीखने लगता है ।

— “प्रणाम मौसी, “निरंजन सिंह हाथ जोड़े मौसी के आंगन में  
खड़े हो गये । मौसी का मतभारी सा है । उसने कहा, — “आओ बबुआ,  
खटिया पर बैठो ।”

निरंजन सिंह चारपाई पर बैठ गये ।

— “क्यों मौसी, सन्देशा पर सन्देशा भेजा । सुबह नउनिया आई ।  
उसके बाद कई लोग बुलाने आये । हम लोगों से कौन-सा चूक हुआ ?”

— “अरे बबुआ, मेरे बिना क्या बेटी का ब्याह रुक जायेगा ?  
लोग-बाग तो सब आये हैं । हमारे बिना तुम्हारा कुछ भी सूना नहीं  
होगा । जाव आज जज्ञ का दिन है । भीड़-भाड़ का स्वागत करो । मेरी  
चित्ता मत करो ।” चाची ने गम्भीर होकर कहा । — “मौसी, शुभ-मंगल  
के दिन में आपका यह रुठना-फुलना अच्छा नहीं लगता है । मौके पर  
अपने खून को सब कोई खोजते हैं । जब तक तुम चलोगी नहीं तब तक  
मैं जाऊँगा नहीं ।”

हार कर चाची चलने के लिए तैयार हुई ।

इधर आंगन में लड़कियाँ लंहगा फहरा कर गा रही हैं,—





तूह त जालऽ पिया पुरुबि बनिजिया हो,  
हमरा के का होलेअइब रावल जोगिया ।  
तोहरा के लइबों धनिया कसक-मसक चोलिया  
अपना के पुरुबी बंगालिन रावल मुनिया ।

दुर्गा सिंह चौकी पर बैठे अपने बेटे निरंजन सिंह से पूछते हैं,—क्यों,  
हुसैनपुर के पाहुन अभी नहीं आये । कहाँ-कहाँ के हित कुटुम्ब आये ।”

—“रज्जपुर से अभी सिर्फ बहगी कहार लाया है । लक्खी टोला  
से चेतन सिंह आये हैं ।” निरंजन सिंह ने जवाब दिया ।

तब तक रामपुर बाजार की पगली धड़-धड़ाती निरंजन सिंह के आँगन  
में पहुँच गई । गाती हुई लड़कियाँ ओसारे में भाग गई । आँगन में काम  
करती नउनिया ने उसे एक ओर ओसारे में बैठाया । चाची को दया आ  
गई । बेचारी का एकलौता बेटा पता नहीं कहाँ गायब हो गया । चाची  
ने निरंजन सिंह को दरवाजे बुलाकर कहा,—“इसको एक साड़ी एक  
ब्लाउज पहना दो ।” फिर नउनिया की ओर मुँह घुमाकर कहा,—“इसे  
पहना दो ।”

नउनिया ने पगली को साड़ी ब्लाउज पहना दिया । लड़कियों में से  
एक ने माँग में भरपूर सिन्दूर लगाया और लिलाट पर बड़ी सी टिकुली  
साँट दिया । साड़ी के आँचल का कोर पकड़कर पगली ने गौर से निहारा,  
फिर ठठाकर हंस पड़ी । लड़कियाँ पगली को घेर कर नाच-नाच कर  
गाने लगी,—

ठाढ़ी जमना जी में टिकुली भलके, आरे जिपया जी गइले कचहरिया  
ए सखी...

चाची ने लड़कियों को चटाई पर बैठे-बैठे फिड़का,—“अभागिन, सब  
को जरा भी विचार नहीं है, काँह तक गरीब अम्यागत को कुछ खाने को  
देगी, कहाँ उसको खिलौना बनाई है सब ।” उसने नउनिया से कहा,—  
इसे पत्तल भर पूड़ी, तरकारी दो और पुरवा में पानी ।”



## ४६ अंधा सूरज

पगली को बैठकर खाते देखकर चाची के मुख मण्डल पर तृप्ति की लहर दौड़ गयी । दूसरे ओसारे में बेठी टोला-पड़ोस की बूढ़ी बुजुर्ग औरतें गीत गाने लगीं—

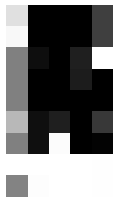
छापक पेड़ छिड़लिया त पतवन गहबर हो  
आरे ताहि तर ठाढ़ि हरिनिया त मन अति गहबर हो  
चरत ही चरत हरनिवा त हरिनी से पूछेला हो  
हरिनी की तोर चरहा भुरायल की पानी बिनु मुरभेलू हो  
नाही मोर चरहा भुराइल न पानी बिनु मुरभिला हो  
हरिना ! आजु राजा घरे छठिहार त तोहें मारि डरिहें नु हो  
मचिया ही बइठलीं कोसिला रानी हरिनी अरज करे हो ।  
रानी मसवा त सीभेला रसोइया खलरिया हमें देतु न हो  
पेड़वा से टांग बिखलरिया त मने समुभाइबि हो  
रानी, हिरिफिरि देखबि खलरिया जनुक हरिना जीअत हो  
जाउ हरिनि घरवा आपन खलरिया नाहीं देइबि हो  
हरिनि खलरी के खंजड़ी मढ़ाइबि राम मोर खेलिहें नु हो  
जब-जब बजत खंजड़िया सबद सुनि हरिनी अइ'केली हो  
हरिनी ठाढ़ि ढकुलिया के नीचे त हरिना के बिसेरैली हो

निरंजन सिंह इस गीत को एक नामी गायक के मुँह से सुने थे । औरतों के गले से गीत का स्वाद बदला लगा । उनकी आँखों में आँसू छलक आये ।

खा-पीकर पगली घर से बाहर निकली । पगली जब तक घर में रही, औरतों का गीत प्रतीक के रूप में व्यक्त होता रहा ।

गाँव के लोग सड़क पर, अपने-अपने दरवाजे के आगे भाड़ू लगा रहे हैं । कोई बाल कटा रहा है । और कोई दाढ़ी बना रहा है । जीउत तेली का बेटा कुएँ के जगत पर कुर्ते में साबुन रगड़ रहा है ।

—“क्यों राजा, छैला बनकर कहां जाना है ? ”उसका लंगोटिया यार सिधारी ने टिटकारी दी ।—“अरे यार जाना कहां है बाबू साहब



बेटी की कल शादी है। गांव की इज्जत का मामला है। उनके दरवाजे पर जाकर टहल टिकोरा तो करना ही पड़ेगा। चीकट पहन कर सबके सामने कैसे खड़ा होऊंगा? लोग-बाग क्या समझेंगे? कुर्ते में साबुन रगड़ते हुए रामरीत ने कहा।

रामरीत के चेहरे पर पसीने की बूंदें चुचुआ आई हैं। वह सिर उठा कर देखता है कि कुएँ के जगत के नीचे की कीचड़ में एक कुत्ता ठंडक पाने के लिए पड़ा है। सामने पीली साड़ी पहन कर पगली आयी।

—“वाह री पगली, आज तो दुल्हन बन गई है। अच्छा बता तुम्हारा दुल्हा कहां है? बतायेगी तब पानी पिलाऊंगा। नहीं तो भागो, यहां से।” रामरीत ने चुल्लू में पानी लेकर पगली की देह पर छींटा मारा। पगली छींटा पड़ने से दो कदम पीछे हट गई।

सिधारी ने कहा “तो पानी क्यों नहीं पिला देते हो। एक तो बेचारी भाग की मारी है। पानी पिला दोगे तो कौन सी देह घट जायेगी।”

“अच्छा लो, पिओ। मुनती क्यों नहीं। जल्दी पानी पीकर यहां से खिसको।” रामरीत ने पगली से कहा।

पगली को पानी पिलाकर रामरीत ने रीढ़ सीधी करने के लिए अपनी देह को मरोड़ा। देह की हड्डियों से पट्-पट् की आवाज हुई।

रामरीत को खड़ा हुए देखकर कीचड़ में बैठा कुत्ता हड़क कर भागा। सामने बिल्ली जाते हुए देखकर वह भूंकता हुआ लपका।

कुत्ते को पगली ने देखा, उसी की ओर दौड़ता हुआ आ रहा है। वह चीखती हुए बाजार की ओर जाने वाली सड़क पर दौड़ी।

पगली को बाजार में पहुँचते ही, उसको देखने वाले बाजार के लोग खुश हो गये। छोटे-छोटे लड़के तालियां पीट-पीट कर उसे चिढ़ाने लगे। वह ढेला चलाकर बच्चों को मारने दौड़ी।

गढ़देवी की पुजाई करते गांव की औरतें गीत गाती जा रही हैं। चान्नी पगली को देखकर अपनी पड़ोसिन से बोली, “यह लोना, पगली



## ५१ अंधा सूरज

यहाँ कैसी चली आयी” ? “ऐ पगली, इधर आओ”

पगली उधर ताक रही थी जिधर मिठाई की दुकान थी ।

औरतें गीत गाती आगे बढ़ गई ।

कांचही बंसवा के बंसहर हो

आरे बंसवा नइय नई जाला भलहि भरे बंसहर ।

ताहि पइसी सूतेंले कवन दुलहा हो

आरे गोदिया कवन देई रानी भलहि खरे बंसहर...।

गच्चे बांस का बंसहर (बांस का बना घर) है, अतः वह झुक-झुक जाता है । इससे लगता है कि यह शिष्ट एवं शालीन घर का बंसहर है । उस घर में प्रवेश करके अमुक दुलहा सो रहा है, और उनका गोद में अमुक देवी सो रही हैं ।

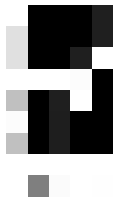
गीत सुनकर सोनार की दुकान पर बैठे लोग बाहर आ गये । जदू सिंह और राजा सुकुल हंसने लगे । —“अरे दादी भी आयी हैं । कैसे टुगुर-टुगुर सबके आगे चल रही है ?”

दन्तहीन भुर्रीदार मुखड़े पर गीत गाने के उत्साह ने एक चमक लादी है । इस समय साठ वर्षीया दादी के चेहरे की समूची भुरिया गायब हो गई हैं ।

जवान छोकरियाँ तो हंसते-हंसते लोटपोट हो गई हैं । —“दादी तो हम लोगों से भी जवान हो गई हैं ।” एक ने टोकारी दी । दूसरे ने एक चुटकी धूल दादी के सिर पर रख दिया । दादी ने फिर कर देखा, “कौन है रे अभागी ! हाथ में रोग हुआ है क्या ?” दादी ने खुले मुंह से गाली दी ।

—“चुप रहो, क्यों मंगल की घड़ी में मुंह खाली करती है ।” चाची ने फिड़का ।

गीत गवनिहार औरतों ने पीछे देखा कि पगली पीछे लग गई है । गोद में चीथेड़े को लड़का बनाकर खेला रही है ।





सासु मोरी कहेली बभिनिया ननद बिरिजा बासिन हो  
ललता जिनके मैं बारी बियाही से घर से निकारेले हो  
घरवा से निकरि बभिनिया जंगलवा में ठाढ़ि भइली हो  
ललता कवन विपतिया तोहरे परली त बनवा में ठाढ़ि भइल हो ।  
सासु मोरी कहेली बभिनिया ननद बिरिजा बासिन हो  
बाघिन जिनके मैं बारी बियाही से घर से निकारेले हो ।  
जहंवा ही से तुहू अइलू लवटि उहां जाहू से हम नाही खाइब हो ।...  
बाभिन जाहू हम तोहरा के खाइब हमहू बाभिन होइब हो ॥...

छोकरियों के दल एकवट होकर गीत गाने लगी ।

गीत सुनकर चाची ने कहा,—“यह सब क्या गाती है । मेरे कलेजे में हूक पैदा हो जाती है । इस गीत से लगता है कि करेजा काटा जा रहा है ।”

सामने मिठाई की दुकान है । चाची ने एक रसगुल्ला पगली को खरीदकर दे दिया । पगली गप्प-गप्प खाने लगी ।

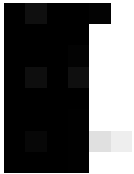
—“भिक्खी-दुक्खी के खिलाने से घर दूधे-पूते भरा रहता है ।”  
चाची खुशी से फूल कर बुदबुदायी ।

बाजार के नकटा के मन में पाप समाया है । जब से पगली को लाल साड़ी में देखा है उसके मन में गुदगुदी सी हो रही है ।

×                      ×                      ×                      ×

डालडा पक्व पक्वान और खुशबूदार सब्जी की मंहक से घर के आस-पास कुत्ते पैतरा कर रहे हैं । दालान के आगे के आम के पेड़ पर सैकड़ों कौवे कांव-कांव कर रहे हैं । कुत्ते आपस में लड़ते हुए कट्टम—कुट्टी कर रहे हैं । दालान के कोने में दो चूल्हे जल रहे हैं । दो हलवाई बैठे पूड़ियां बना रहे हैं । दुर्गा सिंह पूछते हैं,—“क्यों साहब, मिठाइयां अभी बाद में बनाओगे क्या ?”

—नहीं मालिक, उसे तो आठ बजते-बजते बना डाला । दो रात से रात भर चूल्हा जल रहा है ।”



## ५३ अंधा सूरज

साब ने खंखार कर कहा,—“जरा तम्बाकू बनाकर दीजियेगा मालिक, हाथ फंसा है।”

—“जरा तम्बाकू बनाकर दे दो ? “दुर्गासिंह ने लकड़ी चीरते चुल्हना से कहा।”

चौकी पर बैठे न्योतहरी पाहुन देश-विदेश की बातें कर रहे हैं।

—“...पश्चिमी बंगाल में मजदूरों का राज हो गया है। ज्योति-वसु वहां का सबसे बड़ा नेता है। उन्होंने मिल मालिकों से बहुत सारा अधिकार छीन लिया है।” विश्वनाथ सिंह ने गम्भीर होकर कहा।

—“आप को पता है, पश्चिम बंगाल की सरकार ने कितने नक्सली तो जवानों को मार डाला है, और कितनों को जेल में सड़ा रही है। ऐसा अत्याचार तो कांग्रेस शासन में भी नहीं हुआ कभी।” रामचन्दर सिंह ने बात का तोड़ दिया।

—“क्यों बिहार, यू० पी० में जो हो रहा है वह किसी से छिपा है। वर्षों से सरकार तेल और डालडा के नाम पर चर्बी खिला रही है। क्या इससे भी बढ़कर अन्याय हो सकता है ?” विश्वनाथ सिंह ने अपनी बात रखी। दुर्गा सिंह ने बैठे-बैठे चुल्हना से कहा,

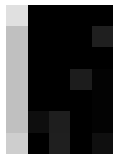
—“पाहुन लोगों को जलखई चाय कराओ।”.....एक पाहुन, “बतकही बाद में होगी, पहले चाय-चू हो जाय।”

सबने हाथ-पांव धोया। आंगन की बहुओं से जलखई लाने के लिए चुल्हना चला गया।

तीनों जेठानी, देवरानी आंगन बैठी बाजार से आई नई साड़ियों को रंग रहीं थीं।

चुल्हना ने बड़की से कहा,—“मलकिनी पाहुन लोग जलखई करेंगे। बुढ़ऊ मालिक ने कहा है। उन्होंने चाय बनाने को भी कहा है।”

—“उनको तो बैठे-बैठे ठेससाही (चुहल) करने आता है। जिसको काम करना पड़ता है, वह न समझता है।” बड़की ने झमक कर के कहा।



—“हे, दादी बूढ़ जवान को एक ही लाठी हांकती हो। रहो चूल्हना, में तसतरी में जलखई लगाती हूँ।” भभली ने कहा।

बेरा ढल गई है। आंगन में आधार धूप रह गई है। मुड़ेर पर कौआ के काँव-काँव करते सुनकर छोटकी ने कहा, “उचरो तो कौआ, भइया आने वाले हैं। तुम्हें दूध-भात दूँगी।”

कौआ काँव-काँव करते उड़ गया। छोटकी को आस लग गई, भइया बेर-कुबेर जरूर आयेंगे। वह रह रह कर दरवाजे की भनक लेने लगी।

चूल्हना दरवाजा गया और फिर लौट आया। छोटकी से कहा, “बहू जी आपके भइया आये हैं।” वह साथ-साथ बंहगीवार को भी लाया है। जिसके साथ न्यूता का सामान था। छोटकी ने कहा, “इतना ही आया है, मेरे नइहर से।”

—“नहीं बहू जी, और दरवाजे पर है।” चूल्हना ने कहा। तब तक दुर्गा सिंह अन्दाजन चार बरस के गोल मटोल लड़के को गोद में लिए आंगन में खेड़े हो गये।

बड़की ने थोड़ा सिर का आंचर खिसका कर कहा, —“इ कौन है बाबूजी”

—“छोटकी का भतीजा है।” दुर्गासिंह ने कहा।

दुर्गा सिंह ने लड़के को जमीन पर खड़ा कर दिया। छोटकी ने हुलस कर अपने भतीजे को गोद में उठा लिया। आंचल से उसका गाल, लिलार, और मुंह पोंछा।

—“बाबू इसे, रास्ते में डर तो नहीं लगा है। बचवा को भूख लगी होगी।”

जैसे गाय प्यार उमड़ने पर बछड़े को चाटने लगती है, उसी भाव में बच्चे को कलेजे से साटकर छोटकी चूमने लगी।

पके अन्न की महक से मुड़ेरों पर कौवे बैठे चोंच से पंख खुजला रहे



## ५५ अंधा सूरज

हैं। घर की पाली हुई कुतिया अघायी हुई आंगन के कोने में सोयी है। बिना बिछावन की चारपाई पर गन्दे कपड़े उलटे-पुलटे रखे हैं। कल माड़वा-मटकोर का दिन है। गाँव-पड़ोस की लड़कियों के लिए तो लगता है जैसे महोत्सव हो रहा है।

ऐसे अवसरों पर इस गाँव के लोग एक जुट हो जाते हैं। जिसको जो बनता है उसी के द्वारा मदद करते हैं। जिसके घर भैंस-गाय दुधारू होती है वह बिना कहे न्योते के रूप में दही-दूध पहुँचा जाता है। कोई तरकारी पहुँचाता है। जिसके पेड़ पर कटहल फला रहता है, अचार-तरकारी के लिए अपने आदमी से तोड़वाकर भेजवा देता है।

—“क्यों स्साले मंहंथवा कुछ भेजा कि नहीं। रंडी-मुंडी में लाख-हजार खर्च करने में स्साले को सरम नहीं आती। इस साल कटहल और बड़हर से पेड़ की डालें टूटी जाती हैं। शाम तक नहीं भेजा तो साले की खैर नहीं।

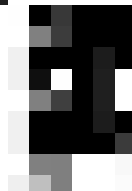
राजू पंडित ने चौकी पर बैठे खंखारते हुए कहा—‘अरे मठिया का सारा धन कोठारिन के...में चला जायेगा एक दिन। देखियेगा आप लोग। जब से वह आयी है, कोई भी मठ पर उठता-बैठता नहीं है। उस कुत्ती ने एक दिन शारदानन्द की भाड़ू से खबर ली। लाज-शरम की बात बेचारे कहें किससे। चुपचाप भोला-कमंडल उठाये और चेलादाही चले गये। जब मूड़ मूड़ा लिया तो यहां रहे या वहां।’

अगर दुर्गासिंह बीच में नहीं टोकते तो राजू पंडित का प्रवचन धारा-प्रवाह पता नहीं कब तक चलता।

—“पंडित जी पत्रा-पंचांग लाए हैं कि नहीं? देखिये तो हल्दी चढ़ाने की साइत आठ बजे रात ठीक है न! मेरे पुरोहित लोग तो वैसे ही हैं,—लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर।”

राजू पंडित भोले से पंचांग निकाल कर साइत देखने लगे।

घर के भीतर से लड़कियों के गाने की आवाज और खिलखिलाहट





छत-छत कर दरवाजे पर आ रही है ।

राम कहेलें हम कासी नहाए जइबों  
सीता कहेली हम जइबो जरूर अगम बहे नदिया  
खेवइया रघुवीर अगम बहे नदिया  
राम कहे तिरबेनी नहाए जइबो  
सीता कहेली हम जइबों जरूर अगम बहे नदिया  
खेवइया रघुवीर अगम बहे नदिया

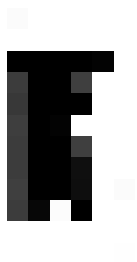
गीत का स्वर सुनकर राजू पंडित का ध्यान बंट-बंट जाता है । तेज बरसते भ्रम-भ्रम पानी में बरसते समय तैरती मछलियों को बूंदों की चोट खाते समय देखा है कभी आपने । अगर नहीं तो राजू पंडित से पूछ लीजिए । इनका मन मछली के समान बूंदों की चोट खा-खाकर तैर रहा है—स्वर धारा में ।

राजू पंडित उंगली पर गिनते हैं, मेष, वृष, तुला, वृश्चिक..... लड़की धन राशि की है न...तब ठीक है,.....आठ बज कर पैंतालिस मिनट पर हल्दी चढ़ाने की लगन है । सूर्य और चन्द्र एक ही घर में है, मंगल दाहिने पड़ते हैं ।”

आंगन से आते हुए गीत के स्वर चांदी की नन्हीं गोलियों के समान आपस में टकरा कर राजू के कानों के पास टूट रहीं हैं ।

विधिना करम लिखल गति न्यारी हो  
काहे के चन्दन रत बन उपजे हो  
काहे के रेड़ अंगनबा में हो...विधिना.....  
काहे के बगुला उज्जर होनु हो  
काहे के फोइलिया कारी हो...विधिना.....  
काहे के भइया घरही रहत हैं,  
काहे के बहिनिया ससुरारी हो.....विधिना.....

हे ईश्वर, भाग्य में लिखी हुई स्थिति न्यारी होती है । नहीं तो चन्दन जैसी सुगन्धित चीज क्यों भाड़ भँखाड़ युक्त वन में उत्पन्न होती



## ५७ अंधा सूरज

और रेंड़ आंगन में उगती । कपटी बगुला श्वेत क्यों होता है ? कोयल की वाणी मीठी होती है । वह काली क्यों होती है ? माई शादी के भाई अपने ही घर में रह जाता है मगर बहन परदेश ब्याही जाती है ।

रामपुर बाजार में पश्चिम के रास्ते घुसते ही एक बड़ा-सा नीम का पैड़ है । उसकी जड़ की छाती भर ऊपर कूबड़-सा निकल गया है । उस कूबड़ के बीच से कट गया है । बरसों से उसमें से रस चूता है रात को पगली वहीं सोती है ।

इस समय पगली देवी पुजाई करने वाली औरतों के पीछे-पीछे चल रही है । एक छोकरी ने दस पैसे का सिन्दूर खरीद कर उसकी मांग को भर दिया है । दोनों गालों पर सिन्दूर पोत दिया है, —साक्षात् दुर्गा का रूप धारण कर पगली चल रही है ।

औरतें गा रहीं हैं, .....

हम तोहसे पूछिला पतरी तिरिअवा हो कि कइसे कइसे ना  
आपन दिनवा बितवलू कि कइसे-कइसे ना

ससुरू त हउए हमरे रूप नारायण ससुइया हमरी ना

हई जमुना के नीर ससुइया हमरी ना

जेठवात हउएं हमरे पढ़ल पंडितवा जेठानी हमरी ना

हई दल के सिंगरवा जेठानी हमरी ना

देवरा त हउएं हमरे नैना के कजरवा ननद हमरी ना

हमरे गरे के हुमेलवा ननद हमरी ना . . . .

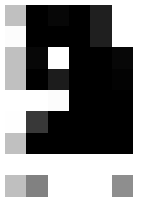
एतना न सुख धना तोहरा जे रहलें काहे के धना ना

कहलू मनवा मलिनवा हो काहे के धना ना

एतना त सुख राजा कमरे जे रहलें तोहरे बिना ना

हमरी सूनी अजोधिया हो तोहरे बिना ना.....

परदेश से लौटा हुआ पति कहना है कि हे पतरी नारी मैं तुमसे पूछता हूँ कि मेरे परदेश जाने पर अपने दिन कैसे बिताये ? यह सुनकर



पत्नी ने कहा, “समुद्र मेरे रूप नारायण है और सास यमुना का जल हैं। जेठ विद्वान पंडित हैं और जेठानी दल की शृङ्गार है। देवर नयनों के काजल हैं और नन्द गरदन की आभूषण है। इस पर पति पूछता है जब तुम्हें इतना सुख था, तो तुमने अपना मन मलिन क्यों किया? यह सुनकर पत्नी कहती हैं कि हे पति देव यद्यपि मुझे इतना सुख था किन्तु तुम्हारे बिना मेरे लिए सारी अयोध्या सूनी थी।

नकटा पगली की ओर एक टक ताकता है। उसके अकेले खिल खिलाकर हँसने से गाल पर लार चूने लगता है। गीत का स्वर पकड़ कर पगली गाने की कोशिश करती है। छोकरियाँ उसे छेड़ कर खिल-खिलाती हुई दुहरी-तिहरी हो जाती हैं।

चौराहे के दाहिने ओर चाय की दुकान है। सामने तीन-चार बेंचें बिछी हैं। नाछू गाँजा मल रहा है। उसके तीन और साथी-चलित्तर, निरसू और रामपरस मन मारे बैठे हैं। गप्पें हाँकी जा रही हैं।

चलित्तर—“जब तक इन्निरा गान्ही का राज रहेगा इन बनियों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मौके पर यही सरकार की मदद करते हैं। चुनाव का चन्दा से लेकर जीप-गाड़ी तक की मदद यही करते हैं।”

निरसू—“अरे कहाँ का पचरा ले बैठे। क्यों नाछू गाँजा तैयार हुआ जल्दी करो।

रिक्सा की सवारी अगर कहीं चली आई तो गाँजा तुम्हारा धरा का धरा रह जायेगा।”

चौराहे से ब्लाक की ओर एक जुलूस जा रहा है।

हर जोड़-जुल्म के टक्कर में।

संघर्ष हमारा नारा है।

एक आदमी भीड़ की ओर मुंह किये नारा दिये जा रहा है। हंसिया-हथौड़ा छाप का लालभंडा हाथ में लिए कई जवान भूम-भूम कर और चीख-चीख कर नारे पर नारे दे रहे हैं।



गली से दनदनाते पहलवान चौराहे पर पहुँचे। हर जोर जुल्म के टक्कर.....में का पूरा जुमला अभी मुंह से निकला भी नहीं था तब तक पटलवान ने नारा देने वाले को उठाकर दे पटका। जुलूस में बाकी जितने थे सबक चहर पर तमतमाहट पाए गए।

पान की दुकान पर दो-तीन खादी टोपियाँ इधर-उधर चलती फिरती दिखाई पड़ीं। बाजार की दुकानों की किवाड़ें फटाफट बजती हुई बन्द होने लगीं। लोग छिपने के लिए इधर-उधर भागने लगे। गली के नुक्कड़ पर मूंगफली बेचने वाला भबू जल्दी-जल्दी में अपना समान समेट न सका। भागती हुई भीड़ के ठोकर लगने से मूंगफली चारों तरफ बिखर गई। वह मूंगफली चुनने का असफल प्रयास करने लगा। उसका आठ वर्षीय छोटा भाई, जो बगल में खड़ा है चीख-चीख रोने लगा।

“तुम्हारे घर पर और कोई कमाने-धमाने वाला है कि नहीं।”

सिरपत ने बच्चों को धार-धार रोते देखकर छोहा कर बड़े भाई से पूछा।

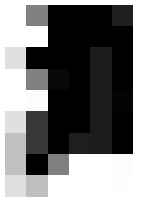
“बप्पा तो दो बरस पहले टी० बी० से मर गये। कई जगह नौकरी के लिए धाव-धूप किया। जब कोई जुगाड़ ना बैठा तो मूंगफली बेचनी शुरू की। एक यह भाई और है जो एक घर पर है। मां दूसरे के घरों बर्तन मांजती हैं।”

मूंगफली बेचने वाले लड़के ने सूखे होंठों पर जुबान फेरते हुए कहा।

सिरपत ने गौर से देखा, लड़के की आंखों में आंसू नहीं हैं। लेकिन रुलाई पलकों से भांक रही है।—“खाने-खेलने और पढ़ने-लिखने के बजाय समाज ने इसे खोमचा लगाने को विवश कर दिया है। ऐसा एक लड़का हो तब तो कोई उपाय हो। ऐसे लड़के तो हर जगह भटकते-ठोकर खाते मिलते हैं।” सिरपत ने लम्बी सांस ली और भीड़ में गुम हो गये।

कुछ ही देर में बाजार में पुलिस की सीटियां बज उठीं। भूरी वर्दियां,

■





लाल पगड़ियां इधर-उधर दीखने लगीं और बूटों की पट्-पट् की आवाज चैतावनी के रूप में गूँजने लगी ।

×                      ×                      ×

निबिया की डार मइया लादेली हिंडोलवा कि भूलि-भूलि  
मइया गावेली गीत हो कि भूलि-भूलि ।  
भूलत-भूलत मइया के लगली पियसिया कि चलि गइली ।  
मलनिया अवास मइया चलि गइली ।  
सूतल बाड़ू कि जागल हो मलनियाँ कि बूंद एक  
मोहि पनिया पियाउ मालिनि बूंद एक... ..

तीम की डाल पर देवी हिंडोला डालती है और हिंडोला भूलते हुए गीत गाती है । भूला भूलते-भूलते देवी प्यासी हो जाती हैं । वह माली के निवास स्थान पर पहुँच कर पुकारती है कि हे मालिन ! सो रही हो या जगी हो, मुझे एक बूंद जल तो पिला दो ।

औरतें गीत गाती हुई देवी के मन्दिर के पास पहुँच गईं । सूरज सिर के ऊपर आ गया है । बोलचट के बावजूद दोपहर का सन्नाटा कहीं गहरे बैठा है । फागुन की धूप चमड़ी को नहीं जलाती परन्तु रोमों में चिन-चिनाहट-सी लग रही है ।

पगली भक्तिन को बेंत लेकर उछलती देखकर निरर्थक खिलखिलाहट भरी हंसी हंसती है । वह भी हाथ मटका-मटका कर नाचती है और गीत गाने वालियों के गले के स्वर में स्वर मिलाती है ।

देवी-थान के दाहिने गोंडे की आग धूह-धूह जल रही है । उस पर मिट्टी की नई कलसी रखी है जिसमें दूध खोल रहा है ।

भक्तिन एक हाथ से आकाश की ओर बेंत हिलाती, हांक लगाती है, — हे देवी, हे काली !'

और मुट्ठी के अक्षत को खोलते दूध में छोड़ती जाती है ।

भक्तिन के गले में सोने का कंठहार है । बांहों में चांदी का बाजूबंद है । और मस्तक पर सफेद मलमल का वस्त्र है ।



## ६१ अंधा सूरज

वह देवी के मन्दिर के चारों तरफ उछलती हुई घूमती है। और आकाश की ओर बेंत दिखाती हांक लगाती है,—“हो रण चण्डी, हो काली नरमुंड धारिणी !”

आठ दस गवैये मांदर बजाते गा रहे हैं,—

कइसे क दरसन लइ हो माता  
तोहर सांकर दुअरिया हो माता  
माता के दुआरे एक अंधरा पुकारे  
देहु नयन घर जाई हो माता

हे, माता ! तुम्हारा दर्शन कैसे प्राप्त करूँ; क्योंकि तुम्हारा द्वार संकीर्ण है। अतः तुम तक जाने में कठिनाई हो रही है। माता के द्वार पर एक अंधा पुकार रहा है कि हे मां ! मुझे नेत्र-दान दो कि मैं घर जाऊँ।”

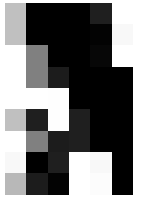
बुम्बा.....बुम्बा.....मांदर बज रहा है।

नौम की डालियों पर नये पुराने हजारों-हजार नये-पुराने कपड़ों के टुकड़े बंधे लटक रहे हैं।

किसी की भैंस का बच्चा पेट में फंसा हो। किसी औरत का बच्चा निकल नहीं रहा हो। किसी बांभ की कोख सूती हो.....तुरत मनौती मानी जाती है, जबकि मेरी आस पूरी मइया कर देगी तो सवा गज का चीथड़ा डाल में बाधूंगी...माताएँ बहुएँ.....दूर-दूर की औरतें अपने मन की आशा को इन डालों में अटकाये बरसों उसके पूरे होने की प्रतीक्षा करती हैं।

ये चन्द मिट्टी की मूर्तें अबोध मानव मन को कितने गहरे जाकर आशा के किन तन्तुओं से बांधे हुए हैं उसे आज तक किसी ने देखा नहीं है। यह भूठ है या सच, इस पर बहस नहीं चल सकती। अगर आदमी को मानना है, उसकी भावनाओं को आदर करना है तो मिट्टी के इन पुतलों को जिन्हें आदमी ने बनाया है, मानना ही होगा।

आदमी ने भावनाओं से माटी की इन मूर्तों को बनाया है। ये



भावनायें ही मां हैं। आदमी इन्हीं भावनाओं के बूते जिन्दा है। इनकी पूजा करता है। शादी हो, ब्याह हो,—मां पूजा मांगती है। धूप-दीप, नैवेद्य और फूलों की माला का अर्पण चाहती हैं।

चार-पांच आदमी कछौटा कसे एक मोटे-मुस्तण्डे सुअर को पकड़े पटके हैं। एक आदमी बांस के भाले के समान खोपचारी लिए उसके पांजर में घोंप रहा है। वह भयंकर चीखें चीखे जा रहा है। सुअर के चिंगवाड़ने से और औरतों के चांदी की घंटियों की टुनटुनाहट से गीत झबते जा रहे हैं।

एक काली कलूटी औरत छर्-छर् बहते लहू को थाली में ओढ़े जा रही हैं। उसके ऊपर के आगे के दांत निकले हैं जिस पर ऊपर के होंठ ओछे पड़ रहे हैं। बाल खुले पीठ और छाती पर झूल रहे हैं। मांग में सिन्दूर की आभा चेहरे को भयातक किये जा रही है !

मांदर मुम्बा-मुम्बा बज रहा है और गाने वाले उछल-उछल कर गा रहे हैं—

“आजु की रतिया धीरज धर माता हो सबेरा होत ना

चूनरी तोहके हम चढ़इबों हो सबेरा होत ना।

“हे माता, आज की रात धीरज धारण करके रहो। सबेरा होते ही मैं चूनरी निश्चय ही चढ़ाऊँगी।”

चीखते-चीखते सुअर ठंडा पड़ गया। थाली को चारों ओर से पर्दा कर दिया गया। भक्ति उस पर्दे के भीतर सुर्र-सुर्र लहू पीने लगी।

खून और मांस के लोभ में तीन-चार-कुत्ते जो बहुत देर से लुभियाये हुए हैं, आपस में कटुम कुट्टी करने लगे।

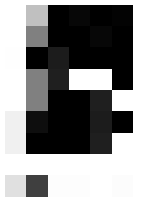
पगली अचरज भरी निगाह से सारे कार्य व्यापार को देखती है। होंठों पर उंगली रखे पता नहीं क्या सोच रही है। दूर-शून्य में उंगली से संकेत कर-कर के ठी-ठी, ठी-ठी हंस रही है।





× × ×  
 इन खेतों में बीज नहीं  
 भूख से मरे लोगों की  
 लाशें बोयी जाती हैं ।  
 इस गंगा गडक के मैदान में  
 हरी फसलें नहीं  
 भूखी लोगों की आंखें  
 लाल-लाल फूलती हैं ।

हमने नहीं तोड़ी कोई सीमा  
इसलिए कि नहीं हैं  
अपनी गति की मर्यादित सीमा  
कहाँ है कोई ठीहा-ठिकाना  
कि हो विश्वास-अविश्वास  
अपनी आस्था —  
भविष्य का गहन अंधकार  
मूते गलियारे की गति-निरुद्देश्य ।





एतवरिया की मौत के बाद उसके दो बच्चे और पत्नी लावारिश हो गये हैं। कितनों की नजर उसकी जवानी पर है। किससे-किससे वह अपने को बचाये। जो देखता है, वही लगता है कि खा जायेगा।

अभी कल बारात का दिन था। गली के अंधेरे में राम लगना से बतियाते उसकी जेठानी ने देख लिया था। हाकासी-पियासी टोला-पड़ोस की औरतों के कान में एक के तीन पिरोने लगी।

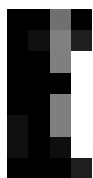
—“ए बहिनी ! ई अभागी ने हमारे घर को रंडी खाना बना दिया है। किससे अपना दुःख कहूँ, सात पुश्त को इसने नरक में डूबो रखा है।”

बात कानों-कान पानी पर तेल के समान फैलने लगी। बरगद के पेड़ के नीचे लोग एकजुट होने लगे। तेंतरी और शरीफवा दोनों पकड़ कर लाये गये। हज्जाम बुलाकर दोनों के सिर के आधे केश काट डाले गये। आधे मुंह में कालिख और आधे मुंह में दोनों के चूना पोत दिया गया।

भीड़ के बीच में धुंधुआती एक फुट ही लालटेन रख दी गयी। उसकी नीम रोशनी से गहन अंधकार और गहन लगने लगा। बरगद पर हजारों-लाखों-असंख्य जुगुन भुक-भुक जल उठे। बरगद के पके टपकते फलों की मंहक को पाकर सियार अंधेरे में जमीन सूँघते इधर-उधर घूमने लगे। पंचों से कुछ दूर हटकर चार-पांच कुत्ते आपस में लड़ते-भगड़ते गुत्थम-गुत्था करते रहे और सियार की भनक पाकर बिजली के समान उस पर अंधेरे में झपटे।

एक दुबले पतले मरियल से आदमी ने तेंतरी के गाल पर एक थप्पड़ तान कर मारा। वह दुहरी तिहरी हो गई। उसके कान में झूलती पीतल की बाली से कान उसका फट गया और भर-भर लहू गालों पर बहने लगा। उसकी चोली फट गई और स्तन बाहर झूल गये। उसके दांत होठों में धंस गये।

पंचों से दूर खड़े तेंतरी के दोनों बच्चे टुक-टुक ताक रहे हैं। अंधेरा



## ६५ अंधा सूरज

हांफ रहा है। अंधेरों में सबका चेहरा डूबा हुआ है।

ये वही लोग हैं। जिन लोगों ने तेतरी को खेत में दबोचने की कोशिश की थी। जिन्दा गोश्त नोचने की कोशिश की थी। जवानी से खेलने की कोशिश की थी।

फूटे हुए लालटेन से रोशनी कम निकलती थी, धुआ अधिक निकल रहा है। दोनों बच्चे रो-रोकर सन्नाटे में आये खड़े, बेसहारा पंचों की भीड़ की ओर ताक रहे हैं। उनके गाल पर आंसू की लकीरें सूख गयी हैं। अब भी रह-रहकर वे बच्चे लम्बी सोसें ले लेते हैं।

पहले तो तेतरी ने मारने वालों के पांव पर गिर कर दया का भाव जगाने की भरपूर कोशिश की। वह जितना पांव पर गिरती लोगों का गुस्सा उतना ही उफान पर होता। वह मरियल सा आदमी तो इस समय और बहादुर बना उछल रहा है। उसने फिर गाल पर हुमच्च कर थप्पड़ मारा। उसके चेहरे की तमतमाहट और मुट्ठी बांधकर हवा में भांजते हुए देखकर सिरिकान्त कौलेजिया से रहा नहीं गया। उसने एक हाथ गरदन में लगाकर और दूसरे हाथ से पहुँचा पकड़कर उसे पीछे घसीट दिया।

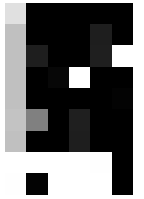
“स्साले बहादुर बने हैं। तुम्हारी मइया बहिनिया को कोई मारे तो ? सिरिकान्त ने दांत पीसकर कहा।

अंधेरे में डूबा बरगद का पेड़ और घने अंधेरे में डूब-सा गया। पेड़ के पश्चिम कुत्ते आपस में लड़ रहे हैं। सियार को रगेदते हुए एक कुत्ता घों-घों और भांव-भांव करता दौड़ पड़ा।

तिवारी जी और महन्थ जी एक ओर अंधेरे में खड़े होकर फुसफुसा कर आपस में बातिया रहे हैं,—“इ, बुजरी उसी साल से बिगड़ गई, जिस साल अकाल पड़ा था। पेट सही-गलत हर तरह के रास्ते दौड़ा देता है।” तिवारी जी ने कहा।

महन्थ जी लोगों को मारते देखकर तमतमा उठे। अकाल में उनके भी तीन बैल मर गये थे।

घोर अकाल। आकाश से एक बूंद नहीं बरसा। धरती की छाती



फटने लगी। ताल-तलैया सूख गये। खेत में परिहृत्य नहीं गया। शहर के सर्वोदयी नेताओं ने गांव-गांव गरीबों के खाने के लिए खैराती बांटने की व्यवस्था की।

जेठ की चिलचिलाती धूप में दूर-दूर गांवों के भुक्खड़ बूढ़े, बच्चे-सयाने, औरत-मर्द पेट की आग बुझाने आते।

“ए रे इमिरितिया : इधर ढकना लेकर बैठ इधर-यहां !

“एक कटोरा दरिया बाबू जी, इधर-यहां।”

“क्यों जी रखनी, और खिचड़ी चाहिये...ओर...ओर...ओर।”

“नहीं...बस...।”

पाकड़ की छितनार घनी छांह में दलिया या खिचड़ी सुड़कते अबालवृद्ध स्त्री-पुरुष...दूर...दूर...हवा से लपलपाती धूप की ओर ताकते जो ऐसे लगती जैसे आंखे फाड़े शेरनी जीभ लपलपाती उन्हें की ओर ताक रही है।

पेट भरकर डकार लेते बखत छांह कितनी नरम और शीतल हो जाती है।

“अरे इसका पेट तो टिमकी की तरह हो गया। अन्न सयानों की तरह उठाता है। भरपेट खा लिया अब गाओ तो...रेखवा गाने लगा,—

मकइया रे तोरे गुनवा गवलो ना जाला।

आगे आगे हर चले पीछे से बोवाला

ओकरा पीछे हेंगा लेके हेंगाला। मकइया रे...

बीता भर के हो लात खुरपी से सोहाला

कमर भर के होला त मड़ई छवाला। मकइया रे...

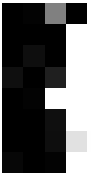
बाल जब फूटेला त टीनवा पिटाला। मकइया रे...

भात करे फुदुर-फुदुर रोटी छितराला

भईसी के मट्ठा से सट-सट घोटाला। मकइया रे...

“वाह खूब गाया। इसके गमछा में दलिया बांध दो।” रामू काका

■



## ६७ अंधा सूरज

ने जीतन से कहा ।

“क्यों री तेंतरी ! तुम्हारे दोनों बच्चे खा लिए । तुम संभा बेरिया दलिया के दालान में आना, समझी ।” रामू काका ने तेंतरी की ओर मुंह घुमाकर कहा ।

“रोसत, ए रोसता ! उधर क्या बाप की ओर देख रहे हो । चलो दलिया का बोरा दालान में पहुँचाओ तुम भी साधू, हंडे और बाल्टी को सिर पर लो !” रामू काका ने रोब गाँठते हुए कहा ।

रोज संभा बेरिया तेंतरी दलिया लाने जाती है । दालान के पिछुआरे गली के अंधेरे में साँय-साँय की आवाज होती । दो हांफते दृश्य जूझते और निढाल होते । चलती बार तेंतरी का आँचर दलिया, चावल से भर जाता ।

धान की रोपनी हो या मकई की सोहनो —तेंतरी एक की तीन मजूरी देकर बुलायी जाती । मकई के भुरमुट में ईख के ओट में या बांध के अलोट दो बाज चोंच से चोंच पंजे से पंजे जाँघ से जाँघ लड़ाते । छाती पर नन्हे-नन्हें तारे टूटते ।

क्या आपने रात में जंगल का सफर किया है ? अंधेरे में बाघिन-शेरनी की कैसी आंखें चमकती हैं ? उनके गले की घरघराहट नाग-नागिन के ती ती ती फों...चीतल-मोर तरह-तरह के जानवर, परिन्दों के मिले जुले स्वर...पत्तों और डालियों से हवा की सरसराहट...एक अपूर्व अद्भुत संगीत का उद्भव होता है ।

तेंतरी की देह का पोर-पोर उसी तरह लहू के संगीत से गूँजता रहता ।

“ऐसा कितने दिनों तक चलेगा तेंतरी ! मदर मधुमक्खी की तरह तुम्हारी देह के शहद को पीकर उड़ जायेंगे । रह जायेगा नीरस छत्ते-सा शरीर ।”

साँभ को भक्तिन ने तेंतरी को को उल्टा-सीधा, झूठसाँच हजार तरह की बातें समझायीं ।





—“किसी एक से गांठ जोड़ लो । दीन-दुनियां बहुत खराब है । देह-नेह को कौन पूछेगा । समय थाकने परे कोई पूछवैया नहीं होता । समझीं.... ।”

तेंतरी सिर झुकाकर भक्ति की ऊंच खाल बातें सुनती रही ।

उसके दो दिन बाद...अभी सूरज की पहली किरण हरी-हरी दूब की नोकों को छुई तक नहीं है । फसलों के आंचल में ओस कण के मोती के दाने के समान यहां से वहां तक फैले हैं । सूरज ने उन्हें अभीतक समेटा कहाँ है ?

सरीफवा कंधे पर हल लिए लोहसार में जा रहा है । गेहुँए रंग में जवानी के निखार ने दमक पैदा कर दिया है । चौड़ी छाती, पुष्ट भुजायें और नसों में बेगवान् लहू की लहर से उसकी बोटी-बोटी फड़कती है ।

—“क्यों सरीफा एने ना आवोगे !” तेंतरी ने ललचायी निगाह से सरीफवा को देखकर पुकारा और लजा कर आंचल से मुंह छिपा लिया ।

चुम्बक के आकर्षण से खिंच कर सरीफवा तेंतरी के पास जाकर खड़ा हो गया ।

दूर धान के खेत से होकर कोई गाता जा रहा है,—

—“लगलें थावे के हो मेलवा हमें गहनवा

बनवा द ए बलमू ।

खेत ना जोतइलें एकौ बैल ना बिकइलें

तोहके दिन-रात सभेला गहनवा ए गोरी....

पत्नी अपने प्रियतम से कहती है कि हे बालम, गांव के पास का मेला लग गया है । उसमें जाने के लिए गहनवा बनवा दो । पति उत्तर देता है कि अभी न खेत जोता गया, न कोई बैल बिका फिर भी ए गोरी, तुम्हें दिन-रात गहनवा ही गहनवा दिखाई दे रहा है ।”



६६ अंधा सूरज

“क्यों, क्या, कुछ कह रही हो ?” सरीफवा सकपकाये खड़ा हो, पूछा :

—“कहूँगी क्या, सोना-चांदी से आंचल भर दोगे क्या ? बड़े भोर-भोर कहाँ चले ?”

तेंतरी ने होठों-होठों मुस्कान बिखेर कर कहा—

—“देह-नेह की बात हो तो चले आना । मैं किस दिन-रात के लिए हूँ ।”

तेंतरी ने अंगड़ा कर कहा ।

सरीफवा के रोम-रोम कंटकित हो उठे । उसने धीरे से आंचल की ओर हाथ बढ़ाया

“भाग, कोई देख लेगा तो ! इनको लाज सरम नहीं लगती है ।”

आंचल से एक आंख और एक गाल ढक कर तेंतरी ने दूसरी आंख से मुस्करा कर तिरछी आंखों से ताका ।

सूरज चरा कर लौटती उसकी जेठानी सुकनी ने दूर से ही ताका ।

—“अच्छा रहो, नजरमार छीनाल अभागो ! धीरज धरो, तुम्हारी आंख में लुक्का ना लगा दिया तो मेरे नाम पर कुत्ता पालना ।”

सुकनी होठों ही होठों में बुदबुदायी ।

तीन-चार लड़के पगली के पीछे हुलकाते, धूल माटी फेंकते इधर ही आ रहे हैं । पगली ई सब से लापरवाह, नाचती गा रही है,—

हमरे धीया के जोगे वर खोजीं बाबा हो

धीया मोर भइलीं सयान ।

...

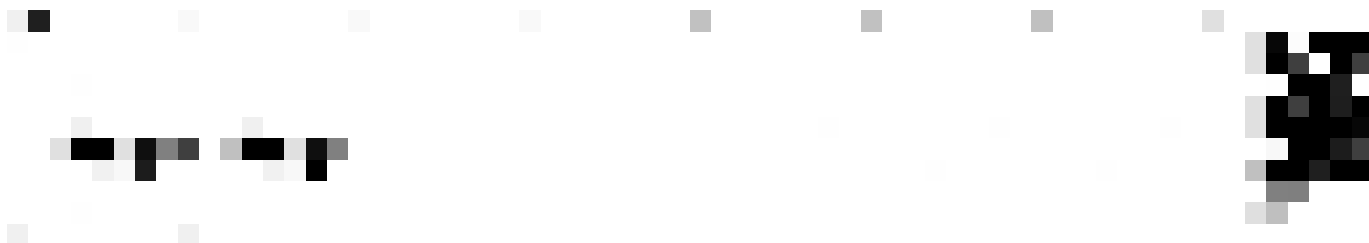
...

...

...

अइसस धीया बाबा मोर बढि गइली हो

जइसे बाढ़े दुइजी के चान ।



“हे बेटी के पिता, हमरी बेटी के योग्य बर ढूढिये । वयों कि अब मेरी बेटी सयानी हो गयी । मेरी बेटी ऐसी तीव्र गति से बढ़ गयी है जैसे दूज का चांद अचानक बढ़ जाता है ।

पगली के पीछे लड़के धूल उड़ाते इधर ही आ रहे हैं । सरीफवा कन्धे पर हल लेकर आगे बढ़ गया । तेंतरी अपने आंचल की धूल झाड़ने का बहाना करने लगी ।

जेठानी बुदबुदाती छड़ी से सुअर को हांकती सड़क की ओर चली गयी,—

— “रहो छीनाल, जारलाहो ! तुम्हारे कोख में आग लगा दूँगी । मेरे घर को इ मांगजारी ने रंडी खाना बना दिया है ।”

×

×

×

आजकल डीह पर रोज बतकही होती है । तेंतरी और सरीफवा को लेकर बतकुच्चन (बतकही) में समय कितना सरक जाता है, किसी को पता नहीं चलता ।

सीतल सुबह आठ बजते न बजते डीह पर आ जमते हैं । चुक्के-मुक्के बैठ गमछे से जांघ और पीठ को बांध लेते हैं । उनके आगे पलक, सिव-टहल, पलटू आ जमते हैं । सूकनी आंख नचाकर और भौहों को चढ़ा-उतारकर एक में तीन बात को फेंटती, लहरा लगाती, दिन-दिन भर बतियाती है ।

—“ए चाचा ! लाज की बात किससे कहूँ, अभागिन सियारिन की तरह गन्ने के खेत में पैठ जाती है । देहगिरना .सरीफवा पहले से बैठा राह देखता रहता है । अब रात-बिरात घर में चला आता है । रात-रात भर फुदुर-फुदुर दोनों पता नहीं क्या-क्या बतियाते और ठी-ठी हंसते रहते हैं । सुन-सुनकर मुझे सरम लगती है ।”

—“एक दिन पकड़वा दो । देखना कैसी दुरगत होती है उन दोनों की । झोंटा काटकर मुंह में करिखा लगा कर गांव भर क्या जवार भर नहीं घुमाया हम लोगों ने तो देखना ।”



सीतला ने अपने स्वर पर जोर देखकर कहा । पलक ने लाठी को जमीन पर फटकारते ललकारा—“बोलिए महावीर जी की जै । इस लाठी में तीन पाव सरसों का तेल पिलाया है । एक ही बार में यहाँ से तीस कोस दूर शिव मन्दिर की ध्वजा दिखाई पड़ जायेगी । जरा आने दो तो वह टेम, फिर देखना मेरे हाथ का करतब \*\*\*।”

सिवटहल बात के तोड़ में जोड़ मिलाते रेंघाते बोले—“अरे, काका ऐसा कभी नहीं हुआ है इस टोला में । अब कुछ सहा जायेगा, इ अनरथ नहीं सहा जायेगा । समझे\*\*\*।”

आम के छांव में खेत-बघार से गाय-भैंसे चर कर बिटुरने लगे । उधर, एक ओर तीव्र बैल बैठे जुगाली कर रहे हैं । डीह पर आम, महुआ की बगिया छित्तनार पत्ते किये छांह दे रही है । बाग के उदास वातावरण में इन चारों-पांचों की बतकही की आवाज और पके गूलर के फल तोड़ते बच्चों की किलकारी की आवाज बीच-बीच में शीशे सी टूटती है । बैलों के मुंह से सफेद भाग बतासे की तरङ्ग जमीन पर टपक रही है ।

सभवा नचनिया लम्बी टान लेकर गाता बाग में प्रवेश कर रहा है,—

“बनवा के दिहल रे माई

भिमिर-भिमिर दइया देव बरीसें अउर बहे पुरवाई

कवना बिरिछ तर भींजत होइहैं राम लखन दूनो भाई

भूख लगी कहं भोजन पइहें प्यास लगी कहं पानी, बनवा०

नींद लगी कहं डासन पइहें कांट कूस गड़िजाई ॥ बनवा०

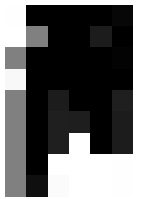
गीत के स्वर से सन्नाटा टूट गया, और बैल जो शान्त जुगाली कर रहे हैं, उठकर खड़े हो गये ।

सीतल ने अपनी जांघ से गमछा खोला । चूतड़ से धूल झाड़ते उठ खड़े हुए ।

—“अच्छा तो अब चलना चाहिए ।”

सबके मन को टोहते हुए सीतल ने कहा ।

■





—“हां चाचा, जरा मेरी बात पर ध्यान रखियेगा। भूल मत जाइयेगा।” सुकानी ने याद दिलाते हुए घर की ओर रुख किया।

+ + +

नाली के पानी गिरने से घरती सरदा गई है। जहां तक पानी का सरद है मुलायम हरी-हरी दूबें लफरी फैली हैं। एक कुत्ता अगले पंजे से वहां की मिट्टी बकोट कर करवटिगे पड़ा हांफ रहा है। वह मुंह खोले एक बित्ते की जीभ हिला रहा है। चार सूअर गों-गों की आवाज गले से निकालते गन्दगी और पखाने की टोह में धूथन से जमीन को इधर-उधर संघते भाग-दौड़ कर रहे हैं।

तेंतरी हाथ में अरहर की जड़ लिए जामुन के पेड़ की छाया के नीचे खड़ी अपने सूअरों को चरा रही है। गाढ़े हरे, चिकने जामुन के पत्तों से धूप फिसल कर उसकी जवान मूंगिया रंग की देह पर भर रही हैं। धूप से लिलाट और नाक की नोक पर मोती के नन्हें-नन्हें दाने के समान बूंदें झिलमिला रहीं हैं।

पेड़ पर चुर-चन्न, चुर-चन्न की लगातार ध्वनि करता चिड़ियों का समूह इस डाल से उस डाल पर फुदक रहा है। पेड़ के दाहिने कांस की झुरमुट है और उस पर लतरें फैली हैं जिसमें चांदी के छोटे-छोटे कटोरे के समान सफेद फूल खिले हैं जिससे खुशबू छन-छनकर हवा में फैल रही है। उधर सूअर जहां गों-गोंकर रहे हैं पखाने की बदबू आ रही है।

शरीफवा हाथ में डलिया लिए खेत की कटनी में जा रहा है। माथे में गमछा का मुरैठा बांधे वह उधर ही आ रहा है। शरीफवा की नजर तेंतरी की नाक पर गई, नाक के छेद में वह रोलड-गोल्ड का तथ पहने है जिसमें तीन छोटे-छोटे मोती जैसे नग चमक रहे हैं। उसके होठों पर मुस्कराहट की पीली चिकनई फैल रही है जिस पर होली की यह कड़ी फिसल रही है,—

“मोरी सरिया न रंगलू मुरारी सासु दीहें गारी।

हे मुरारी मेरी साड़ी न रंगों नहीं तो मेरी सास मुझे गाली देंगी।



वहां शिव हैं न पार्वती । आज के लिए सिर्फ इस घड़ी के लिए शरीर-  
फवा शिव की भूमिका में उतर गया है । तेंतरी पार्वती सी जामुन की घनी-  
छाँव के नीचे खड़ी है । पत्तों से छनकर सूरज की किरणें उसके नथ के  
नग पर पड़ रही हैं । शरीरफवा के लिए जैसे स्वप्न में चांदनी रात में पानी  
में मछली चमक कर गायब हो गई हो ।

रे तेंतरी तुम्हारे द्वार पर एक अनुपम योगी आ रहा है । उसके हाथ  
में त्रिशूल नहीं है न ही सिर पर जटाजूट है । लोहे की धारदार हंसियां  
चांदी के समान चमक रही हैं और सिर पर गमछे का पाग है । देह में  
भसम नहीं पुती है । धूल मिट्टी लगी है । मनका दरवाजा खोल और उसे  
अपने प्राणों की भिक्षा दे । जोगी लौट जायेगा अभागिन ! वह सोना-चांदी  
नहीं लेगा न राज-पाट । तुम अपने बोल से अपने प्राणों के अमृत को  
उसके प्राणों में उड़ेल दे ।

रात टोला-पड़ोस की लड़कियाँ सब विवाह के गीत गा रही थीं,—

जोगिया एक अनूप दुआरे मोरे आवेला

हाथ लवंग केरा बटुआ त भसम रमावेला

अंगना बहारति चेरिया त अडरी लउँड़िया

चेरिया जोगिया के भिच्छा देइ आऊँ

छोड़हि दरवाजा मोर

तर धइली धन-धन सोनवा उपर तिल चाउर

लेहु जोगिया आपन भिच्छा छोड़हु दरवाजा

छह डाल अनधन सोनवा अवरुँ तिल चाउर

जेहि रं बोलेली तिन आवें जबहि भिच्छा लेइब ।

बोलिया त ए जोगी बोलेल बोलहि ना जानेल

सुनि पइहें बाबा हिमाँचल तोहके मरवाह दीहें

काहे के बाबा तोहरे मरिहें काहे के गरिअइहें

फूल लोढ़े गइलु फुलवरिया बचन हारि आवेलु ।



एक अनुपम योगी मेरे द्वार पर आया है। उसके हाथ में लौंग का बटुआ है और देह में भस्म पुती है। दासियां आंगन बुहार रहीं हैं। हे चरिया ! योगी को शिक्षा दे आओ जिससे दरवाजा छोड़ दे। दासी ने नीचे धन रखा और उसके ऊपर सोना रखा तथा उसके ऊपर तिल और चावल रख कर योगी से कहा कि हे योगी ! अपनी भिक्षा ले लो और दरवाजा छोड़ दो ! योगी ने उत्तर दिया कि अपना अन-धन-सोना रखो-यह तिल चावल भी लौटा लो। जो भीतर से बोल रही है वही आये तो भिक्षा लूंगा।—‘ यह सुनकर पार्वती ने कहा कि हे योगी, बोली तो बोल रहे हो, किन्तु बोलना नहीं जानते हो। तुम्हारी यह बातें हमारे पिता सुन पायेंगे तो तुम्हें मरवा डालेंगे। यह सुनकर योगी ने कहा कि तुम्हारे पिता क्यों मारेगें या गाली देंगें ? तुम फूल चुनने के लिए बगिया में गई थीं तो वहां से वचन हारकर आई हो—हमारा तुम्हारा प्रेम हो गया है।

रे तेतरी, तुम कटुआनी में वचन हारकर लौटी हो। अठा मुंह क्यों फेर रही हो। लाल साढ़ के टील्ह के समान गेंहूँ की बालियाँ खेतों में हिल रही हैं। देखों, ठंडी माटी में पसरा कुत्ता हरी-हरी दूबों में अंगों को छिपाकर कैसा सुख महसूस कर रहा है। जामुन के चिकने पत्तों के फांक से धूप से रंगा आसमान कितना सरल और चमकीला दिख रहा है।

इस वखत क्या तुम्हारे करेज में गुदगुदी नहीं होती है क्या ? क्या किसी फूल की खुशबू तुम नहीं भोग रही हो ?

इस समय तेंतरी सुअर चराती गांव की यवन्ती नहीं है। उसकी नसों में जीवन फिर से नया बनकर बहने लगा। इस समय के अपने मन के अनुभव को किससे कहे ? जमीन पर पड़े खर-पात गम-गम महक रहे हैं। इस हर चीज को आंचल में बांध लेना चाहती है। यह जो अनदेखा अनजाना आनन्द का वाद्य बज रहा है उसमें हिलोरे लेना क्या उसके लिए अच्छा है ?



## ७५ अंधा सूरज

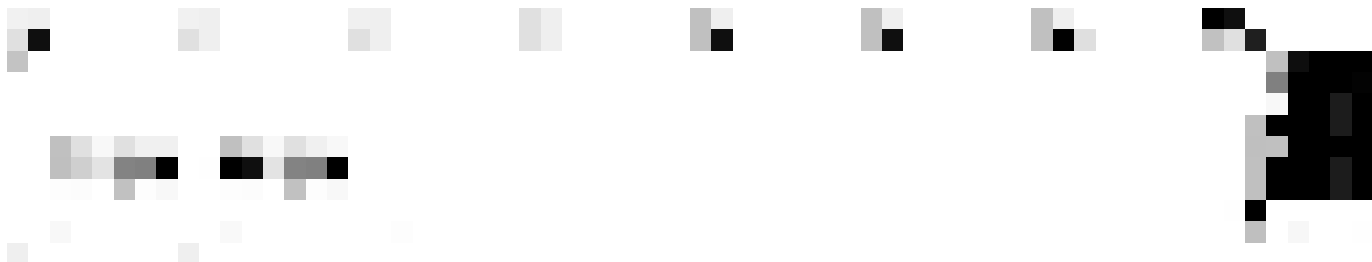
शरीफवा तैतरी की ओर बढ़ता जा रहा है। तैतरी का मन ना जाने क्यों चंचल हो उठा ? विविध राग रंग और गन्धों के अनन्त भरने उसके मन के आँगन में आकर गिरने लगे। तुम्हारा इस पल का सुख सच है, धोखा नहीं है तैतरी ! तरह-तरह के रंगों और गंधों के अमृत से देह रूपी माटी के बरतन को लबालब भर ले और खूब छक कर पी। तब तक पी जब तक तुम्हारे मन के सारे दरवाजे न खुल जाँय।

तू नहीं जानती। युग-युग से तुम्हारा प्रेमी तुझ से मिलने के लिए निरन्तर निकट से निकट आता जा रहा है। सुबह और सांझ तेरे चरणों की ध्वनि उसके हृदय की देहरी पर गूँजती रहती है। तू नहीं समझ पा रही है कि आज यह इतना परेशान क्यों है ? उसके मन की बात सूरज और चांद अपनी रोशनी से तेरे सामने उजागर कर रहे हैं। सब काम-काज टाल कर आज तू उससे मिल। उसके आने की खुशबू को क्या तू हवा की खुशबू में अनुभव नहीं करती ?

टेढ़का बांध से जाते हुए गनेसी कान पर हाथ रखे अलाप लेते हुए खलिहान की ओर बघार से लौट रहा है—

पूरब गइलें रामा पच्छिम गइले लोभाइ रे ले ले ना  
उहे देस के बिटुइया लोभाइ रे ले ले ना  
हम तोह से पूछिले पातर बलमुआ कि कहसन हवे ना  
कमरु देस के बिटुइया कि कइसन हवे ना।  
पान अइसन पातरि, लवंग अइसन दुरुहुर, कि दुबिया अइसन ना  
उनकर हवे करिहइयां कि दुबिया अइसन ना।

एक पत्नी अपने पति के बारे में बताती है कि मेरे राजा पूरब-पच्छिम को परदेश गये। वहाँ की बिटिया ने उन्हें लुभा लिया है। जब उसका पति परदेश से लौटता है तो वह पूछती है कि मेरे पतले बालम उस देश की बिटिया कैसी हैं ?—पति उसकी प्रशंसा करते हुए कहता





है कि वह पान जैसी पतली है और लवंग ऐसी गोल-फुर्तीली है । वह दूब-घास जैसी नाजुक है और पतली कमर है ।

गीत की स्वर लहरी सुन कै तेतरी और शरीफवा के कान खड़े हो गये । सूअर अपने गले से गों-गों आवाज करते हुए कुत्ते के पास तक पहुँच गये । कुत्तों ने एक लम्बी जम्हुआई लेकर सूअरों की ओर ताका । अपने सुख में खलल पाकर वह सूअरों की ओर भांव-भांव करके लपका सूअरों में भाग-दौड़ मच गई । गों-गों और भांव-भांव की तेज आवाज से तेतरी का ध्यान भंग हो गया । वह डंडे से मार-मार कर सूअरों को इकट्ठा करने लगी ।

— — —

E

.

.

.

.

.

\_\_\_\_\_

---

बाट के बटोहिया तू भइया मोरे अवरू बीरनवां मोरे हो ।  
 भइया हमरो सनेसा लिहले जइह साजन आगे कहिह  
 बेइलि कुम्भि लाइल मन्दिर बहराइल हरिअ  
 नाही आवेले ।

---

×                      ×                      ×

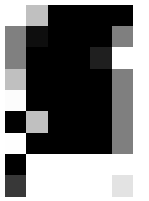
हरखू कहते  
 रामधनी से— 'सुन लो महतो बात ।'  
 इस मड़ई में कैसे बीती  
 यह जाड़े की रात ।  
 पुरवा पड़भा हवा उड़े तो  
 मड़ई उड़-उड़ जाय  
 ऐसा जाड़ा ! ऐसा पाला !!  
 उहके बुढ़िया माय ।

×    ×    ×

टूटा फाल कुदाल है, टूटा  
 धवला बैल बीमार  
 कैसे खेत में परिहृत्य पहुँचे  
 बतियाते मनमार.....।

---

घूप दीवार पर चढ़ रही है । तेतरौ ने गाय के गोबर से आंगन लीप  
 कर चटाई बिछा दी । पीतल की कलसी को मांज कर कुण से पानी लाई



और नल की ओर ओसारे के कोने में रख कर कटोरे से भांप दिया । देखते-देखते धूप भाग गई । आंगन के ऊपर का आकाश लेकिन लाल दिख रहा है ।

अरे ! तो इस तेंतरी का मन सांभ के आवग होते क्यों छन-मन करने लगता हैं । कभी दरवाजा से सड़क की ओर ताकती हैं, कभी घर के भीतर जा गुन गुनाती और इधर-उधर चीजों को रखती-उठाती है ।

उसके गले से गीत के बोल फूट रहे हैं :—

तू हू तू जात पिया पुरुबी बनिजिया हो  
हमरा के का होले अइब रावल जोगिया ।  
तोहरा के लइबों रानी कसक-मसक चोलिया  
अपना के पुरुबी बंगालिन रावल जोगिया ।

परदेश जाते हुए प्रियतम से उसकी पत्नी पूछती है कि हे पिया, तुम पूर्व देश में व्यापार करने के लिए जा रहे हो, वहां से हमारे लिए क्या लावोगे ? पति जवाब देता है कि हे रानी, तुम्हारे लिए चुस्त चोली लाऊंगा और अपने लिए पूरब की बंगालिन लाऊंगा ।

गोबर से लीपने पर आंगन सोंधा-सोंधा मंहक रहा है । तेंतरी के दोनों बच्चे बाहर खेलने चले गये हैं । उसका मन अपने आप हंसने को कर रहा है । तीज-त्योहार के दिन उसका मन ऐसा नहीं फुलाता है ।

सुबह महन्थ के तालाब में नहाने गई थी । फगुआ में छींट की जो साड़ी खरीदी थी, उसे घाट पर पीट-पीट कर साफ किया । पीली मिट्टी पाके गिलट के छागल को रगड़-रगड़ कर भलकाया । नाक के बूंदे और कान के एयरिंग को भी बहुत आहिस्ते-आहिस्ते रगड़ा । भबे से पांव को घिस-घिस कर रगड़ा । घर आकर आइना लेकर बैठ गई । नारियल का तेल मल-मल के केश को मुलायम किया । नल के पास कुछ गेहूँ के दाने



गिरे थे । पानी से फुले-गदराये । फरहे आइने में उसका चेहरा उन्हीं गेहूँ के दानों के समान गदराये ललछाँह सफेदी लिए दिखलाई पड़ते हैं ।

केश भाड़ कर तेतरी ने चोटी गूथ कर जूड़ा बांधा ।

—“ओह, मांग सिन्दूर के बिना कितनी सूनी लगती है ? एक चुटुकी सिन्दूर ! ओह !!” तेतरी ने एक लम्बी साँस लेकर आइने को जमीन पर रख दिया और चिन्ता की मुद्रा में बाँई उँगली को दाईं हथेली पर रगड़ने लगी ।

दोनों बच्चे धूल-मिट्टी में सने किलकारी करते आंगन में पहुँचे । बच्चों को धूलभरे देख कर वह जलभुन गई ।

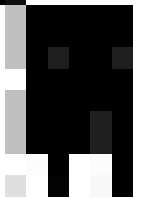
—“ये अभागो जीने नहीं देंगे । सांझ को कैसे नहवाऊँ ? कहीं कफ खाँसी से हाँफने लगे तो ।”

तेतरी की इच्छा नहीं हो रही थी कि अपने हाथ से उन बच्चों की देह छुए । उसने आज अपनी देह रगड़-रगड़ कर साफ किया था । लेकिन ऐसे कैसे छोड़ दे, —माँ का मन ।

अलगनी पर से फटी साड़ी उतार कर वह दोनों बच्चों की देह भाड़ने लगी । और बखत होता तो अपने आंचल से ही उन्हें भाड़ती-पोंछती । इस वक्त तो वह माँ बनना नहीं चाहती—किसी का इन्तजार कर रही है । किसी की प्रेमिका बनी है ।

उस दिन, जब पहले पहल अपने घर में शरीफवा का इन्तजार कर रही थी, रात्रि का अंधकार छा गया था । दिन भर के सब काम समाप्त हो गये थे । सब कोई खेतों पर से और बाजार से अपने-अपने घरों में लौट आये थे । पड़ोस के हर आंगन से बोलने और हँसने की ध्वनि कलरव बनकर गूँज रही थी । ग्राम के सब द्वार एक-एक बन्द होते जा रहे थे । तेतरी के पड़ोसी के आंगन की आवाज भी बन्द पड़ती जा रही थी ।

—“शरीफऊ आने का वादा किये हैं ।” उसके मन को सबर नहीं





होता था कि उसका प्रेमी आवेगा। दरवाजे पर खटक की आवाज हुई।

—“क्या वह आ तो नहीं गये। नहीं, ऐसा सम्भव नहीं लगता। हवा के सिवा कुछ नहीं हो सकता।”

तेतरी ने दिया बुझा दिया और चटाई पर पड़ गई। फिर दरवाजे पर थपथपाहट हुई। उसके मन को इतबार नहीं हुआ। “नहीं, वह हवा ही हो सकती है।”

सुनसान रात्रि में कई बार सीटियां बजीं। पेड़ों पर सोये पक्षी-शावक कच्-कच् ध्वनि कर और पंख फड़फड़ा कर मौन हो गये। —“नहीं, शरीफऊ नहीं हो सकते। उनकी सीटी का संकेत नहीं है। बंसवारी में हवा चलने से सीटी-सी आवाज आती है।”

घर के पिछवारे बिजली के लोहे के खम्भे पर किसी ने लोहे के डंडे से दस्त-दस्त मारा। —“अरे, तेतरी इतना अलसा क्यों गई है। उसके मन को विश्वास हो गया, महन्त के मन्दिर का घड़ी घण्ट और शख बज रहा है।

—“अरे, अभागिन द्वार खोल दे, तुम्हारे मन का राजा आया है।” नहीं, कोई प्रत्युत्तर नहीं। अंधेरा भीगे हुए काले कंबल-सा हिल कर रह गया।

शरीफवा हार कर लौट गया। सुबह दरवाजे से गुजरता आनी-बानी में कहा, “दरवाजे पर आये भिखारी को भीख नहीं देती हो। मैं जानता था तुम दरवाजा नहीं खोलोगी। या हो सकता है मेरा आना तुम्हें अच्छा नहीं लगा हो। मेरा मन उड़कर तुम्हारे पास जाने के लिए कितना पंख फड़फड़ाता रहा। मैं रात सो नहीं सका, न गला खोलकर ही पुकार सका। किड़ाड़ के बाहर दरवाजे के पास, चौखट पर टप्-टप् आँसू ढारता रहा। मेरे मन में कितना दुख है, कितना कचोट है।”

शरीफवा पता नहीं, और कितनी तरह की बातें कहता। तेतरी की आँख के कोर में आँसू छलक आये। कान के पास आँचल का कोर खींच उसने एक ओर से अपना मुँह छिपा लिया। सिर मुका कर, दाँत से नाखून टुंगने लगी।

1

1

## ८१ अंधा सूरज

दोनों बच्चे तेंतरी का आँचल पकड़ कर भूल गये । तेंतरी बच्चों के सम्हालने में तन्मय हो गयी ।

छोटी-सी बेटा ने तुतला कर कहा, —“ले माई । तुम लोती क्यों हैं ? क्या किछी ने माला है का ?”

जवाब न देकर तेंतरी ने बच्ची को गोद में उठा लिया ।

अपनी बात का जवाब न सुनकर शरीफवा मन भारी कर दूसरी ओर चला गया । उसके मन में गुबार भर गया था । उसकी इच्छा हुई चला जाय । यहां से दूर, जहां तेंतरी का मुंह देखने को न मिले । न, उसे देखेगा—न दुखी होगा । वह चलता रहा—चलता रहा । वहां जाकर रुका, जहाँ गांव के बाहर मुदीहा पीपल का पेड़ था । उसी की जड़ के पास बैठ गया । गिनने लगा, —एक, दो, तीन, चार...दस, ग्यारह घण्टे टंगे हैं । उनके पेंदे में-छेद है, उनमें रुई का बतीहर पूर कर लगा दिया गया है । उन बतीहरों से होकर पानी की बूंदें टप्-टप् चू रहीं हैं । इस समय धान के खेतों में चरवाहों के गीत उसके कान को सुहा नहीं रहे हैं ।

मोर पातर बलमुआ छपित भइलें ना

सोने के थारी में जेवना परोसलों

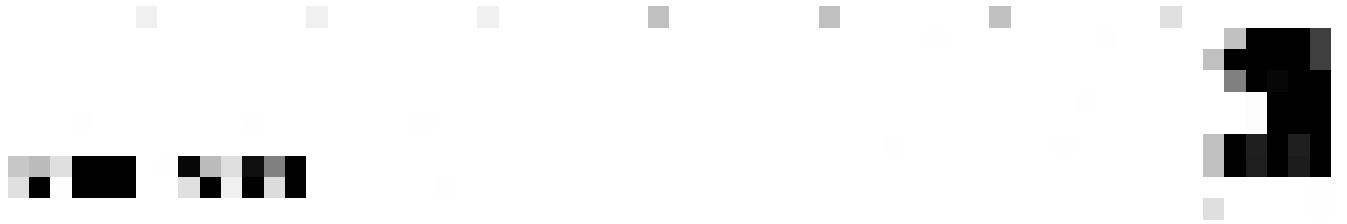
जेवना ना जेबें कुपित भइलें ना । मोर पातर...

(मेरे कमनीय प्रियतम दृष्टि से ओझल हो गये । मैंने सोने की थाली में उनके लिए भोजन परसा । भोजन न किया उल्टे गुस्सा कर बैठे ।)

पीपल की डालियों पर हारिल, मैना, कौआ—टें, टें, चिर्-चिर् और कांव-कांव का कलरव कर रहे हैं । शरीफवा का मन इन सब से दूर-दूर बादलों के उसार भटक रहा है ।

तेंतरी एक बच्चे को गोद में लेकर और दूसरे को ऊंगली से पकड़कर घर की ओर चली ।

आज फिर इन्तजार का दिन है । जैसे-जैसे दिन बीत रहे हैं—समय सरक रहा है । उसके मन की गुदगुदी बढ़ रही है ।



यह पल छिन तेतरी के लिए इतर-गुलाब सा क्यों गम्म-गम्म गमक रहा है ? आंगन के कोने में गेंदे का एक पौधा है । इस समय उसमें कई फूल खिले हैं । तेतरी की इच्छा होती कि यह सारे फूलों को तोड़कर आंचल में भर ले । उसे लगता है कि वह जीने का मतलब जान गयी है । किसी बच्चे की आंखों सा कोमल उसका मन हो गया है ।

इतना सुकुमार छन तेतरी के लिए क्यों भारी बने गया है ? वह दौड़कर आंगन से दरवाजे की ओर भांकती है । वह देखती है सड़क पार कर शरीफवा आ रहा है ।

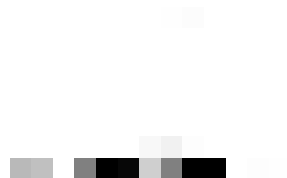
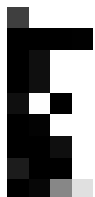
—“अबकी आ लें तो पूछती हूँ । राह देखते-देखते जैसे आंखों में कांटे उग आये हैं ।”

इस समय उसके दोनों बच्चे खेलने गये हैं । घर और आंगन में न कोई आवाज हो रही है न कोई चीज खरक रही है । मुंह फेर कर वह अपने प्रेमी की प्रतीक्षा करने लगी । मन ही मन सोचने लगी । उनका वह आखिर कौन लगता है कि उससे मिलने के लिए वह क्यों बेचैन है ? वह इस सवाल पर सोच नहीं पाती । नींद से भी सुखकर एक तन्द्रा उसके मन और प्राण पर छाने लगी । अब वह उसकी देह छुयंगा । उसकी आत्मा के आनन्द की पहली लहर उसके रोमों में दौड़ने लगी ।

शरीफवा चुपचाप आकर खड़ा हो गया । तेतरी ने मुंह फेर कर देखा । उसके होठों पर मुसकान की एक हल्की रेखा झलक गयी । आंखों की पलकें बोझिल हो गई ।

बाहर पेड़ों पर पक्षियों का कलख और हवा की सनसनाहट बढ़ गयी । घास, पत्ते और फसलें अधिक कोमल और हरे हो उठे ।

आज तेतरी ने कोई काम नहीं किया है । सुबह से ही उसे मन में मीठा-मीठा अनुभव होने लगा था । भर दिन अपने प्रेमी की आहट की ओर उसके कान लगे रहे । कभी-कभी बाहर से उसके बच्चे खेलकर लटते और आंगन में अपनी हरकतों से हलचल मचाते तो उसका मन



## ८३ अंधा सूरज

खीज उठता। वह चाहती कब ये अभाग घर से निकल कर भागें। उसके मन पर एक दूसरे ही प्रकार की नींद छायी रहती थी जो सिर्फ शरीफवा के पांवों की पदचाप से भंग होना चाहती थी। इस समय उसके मन का द्वार सिर्फ शरीफवा के लिए खुला है।

तेतरी ने फिर मुंह फेर कर देखा। शरीफवा क्यों खड़ा है। बीच में सिर्फ दो हाथ का फासला है। इस दो हाथ की जमीन पर फूल बिछे हैं या कांटे, यह दोनों में से कोई नहीं बता सकता। इस समय दोनों के पास भाषा नहीं है, न ही कोई शब्द है। एक सन्नाटा और खालीपन है जिसमें दोनों के मन के सपने हैं, और एक अलक्ष्य फूल की खुशबू है।

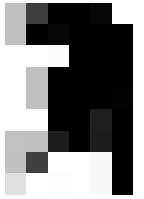
+ + + +

तेतरी की जेठानी दरवाजे-दरवाजे दौड़ लगा रही है। एक-एक कर गांव मरदों के कान भर रही है। पलक तिवारी की माँ रास्ते में मिल जाती है। वह पांव पकड़ कर कहने लगती है।—“ए दादी लाज सरम की बात किससे कहूँ? घर में बैठे दोनों दिन भर फुसुर-फुसुर बतियाते रहते हैं। जब देखा नहीं जाता तो घर छोड़ कर खेत-खलिहान चली जाती हूँ। घर में एक मरद-मानुस रहता तो यह दिन देखने को नहीं मिलता।”

बात सुनकर रामलाल गरम हो गये। उन्होंने मटर राउत से कहा, —“पहलवान ! टोला मुहत्ला में यह बहुत गलत बात हो रही है। यह सिर्फ तेतरी की बात नहीं है। इस बात की हवा बह जायेगी तो हर मुस्समात यही रास्ता पकड़ लेगी। फिर कोई किसी को न रोकेगा न टोकेगा। समूचा गांव नरक हो जायेगा।”

“हां भइया आप ठीक कह रहे हैं। अब कौन-सा उपाय?” मटर राउत ने चिंता व्यक्त की।—“उपाय क्या है? छोटी जात लतिआये और बड़ी जात बतिआये...। बिना दण्ड जुर्माना और शासन कौन किसकी सुनता है।” रामलाल ने मटर राउत को समझाया।

—“अच्छा तुम और लोगों को इकट्ठा करो, तब तक मैं माल-जाल





देख लूँ।” रामलाल ने मटर राउत को आदेश दिया।

मटर राउत ने रतन, खलिका, शिवधन पंडित, देव शरण मांभी, छठी-पासी, —पन्द्रह बीस जवानों को इकट्ठा किया। बात सुनकर समूचा युवकों का दल लोहे सा गर्म हो गया।

सबके जोश को उमड़ते देखकर लल्लू तेली ने रोकना चाहा। “कोई अपनी देह को कुछ करे। तुम लोगों का क्या लेना-देना? लेकिन कौन सुनता है? तीन बीते का जवान मंहगुआ तड़प कर बोला,—“यह कहते आपको सरम नहीं लगती। यहाँ इज्जतदार घर बसते हैं। कोई रंडी खाना थोड़े है!”

—“तब क्या किया जाय?,, राम लाल ने सबकी ओर प्रश्नसूचक मुद्रा बनाकर पूछा।

—“किया क्या जाय? दोनों को राजदंड मिलेगा। गाँव में बाबू मझ्या हैं न। पहले पकड़ा तो जाय।” रतन खलिका ने कहा।

कुछ देर वातावरण में सन्नाटा रहा। सब जोश में हैं। सन्नाटा से सबका दम घुटने लगा। —“तो चला जाय।” शिवचन्द्र पंडित ने कहा। —“चलें, हम सब।” मटर राउत ने कहा।

अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है। फसलों की फुत्तुगी पर लाबी चादर के समान फैली है। खेतों में काम करने वाले अभी घर नहीं लौटे। गांव का एक भी चूल्हा नहीं जला है। घर-घर की गृहिणियां बर्तन मांज रही हैं।

तेतरी के आंगन में चटाई बिछी है। उस पर बैठा सरीफवा तेतरी से मुस्कुरा-मुस्कुरा कर बतिया रहा है। चटाई के किनारे तेतरी थोड़ा आंचल खींच कर होठों में हंसी और आंखों में लाज किए उसकी बातें सुन रही है।

अचानक सारे के सारे जवान आंगन में खमाखम खड़े हो गये। इतने लोगों को एक साथ सामने देखकर सरीफवा के मन से प्रेम के देवता रफू चक्कर हो गये। उसको काटो तो खून नहीं। तेतरी ने घर में भागकर



## ८५ अंधा सूरज

क्विड़ लगाने की कोशिश की। मटर राउत ने झपट कर उसका भोंटा पकड़ लिया। वह मुंह के बल गिर पड़ी। गिरा हुआ देख कर शिवचन जोश रोके नहीं रुका। उसने पीठ पर एक लात लगा दी। मार के दर्द से तेतरी चीख पड़ी।

सरीफवा भय से थर-थर कांपने लगा। राम लाल ने तपक कर उसके गाल पर एक तमाचा दिया जब तक वह सम्हले रतन खलिफा ने अपना पहलवानी हाथ दिखा दिया ! हुमक कर एक घूसा पीठ पर मारा, सरीफवा कराह कर जमीन पर बैठ गया।

सरीफवा की अंधाधुंध लात मुक्का से पिटाई शुरू हो गई। उसके चीख मारने का भी लोग मौका नहीं दे रहे हैं। तेतरी का भोंटा पकड़कर मटर राउत ने आंगन में घसीटना शुरू किया।

तेतरी के दोनों बच्चे बगीचे से खेलकर घर चले। दरवाजे पर भीड़ देखकर दोनों ने समझा कि मदारी बन्दर का खेल कर रहा होगा या भालू लेकर आया होगा। जैसे दोनों दरवाजे के पास पहुँचे टोले घे लड़कों ने कहा,—‘मार स्साले को’ दोनों चिहाकर ताकने लगे।

तब तक तेतरी और सरीफवा को आंगन से घसीटते हुए लाते देख कर दोनों बच्चे चीख पड़े। उन दोनों को चीखते देखकर तेतरी आंचल से छाती ढकती गाय के समान हुमकती उन दोनों की ओर दौड़ी। मटर राउत ने उसके पीछे से एक लात दिया। वह उन बच्चों को लिए-दिये जमीन पर मुंह के बल गिर गई। बच्चे एकाएक चीख पड़े। उस चीख से किसी के ऊपर किसी प्रकार का असर नहीं है।

सब कोई मिलकर घसीटते हुए गाँव की ओर चले। रास्ते में जो देखता वही भीड़ में शामिल हो जाता। देखते-देखते पचासों आदमी का जुलूस हो गया।

तेतरी की जेठानी बैठी नहीं है। गाँव राजपूत, बामनों और अहीरों के घर दौड़ रही है।



+ + + +

“ऐ माई, देखिये तो बरगद के तले कैसा हल्ला गुल्ला है ? आंगन में बर्तन मांजती बहू ने अपनी सास से कहा ।

हाथ में लाठी ठेकती उसकी सास घर से बाहर की ओर चली । शाम के तीस अंधेरे में कुछ लोग लाठियां लिए दौड़ते जा रहे हैं । उनके पावों की धमक और अंधेरे में हांफने की आवाज सुन कर बुढ़िया ने पूछा—  
“कौन जा रहा है बबुआ ! गांव में कुछ हुआ है क्या ? जाने वाले ने दौड़ते-दौड़ते कहा,—“बरगद के पास चोर पकड़ा गया है ।”

बहू ने दौड़ कर सास के हाथ में लाठी थमा दिया । बुढ़िया सास धीरे-धीरे भीड़ के पास पहुँची । उसने सूना । एक औरत चीख रही है, “बाबू जी हो, बाबू जी ! हमारे बच्चों का मुँह देखकर मेरी जान छोड़ देव ।”

उसके अनुनय-वितन पर और गर्जन-तर्जन सुनाई पड़ती है ।

बुढ़िया लाठी ठेकती भीड़ में घुस गई । उसने देखा कि एक औरत और एक मर्द को गांव भर के मर्द खड़े होकर पिटवा रहे हैं । दोनों अनुनय-वितन करते हैं चीखते धुकारते हैं । कोई नहीं, उनकी बात पर कान नहीं देता ।

लालटेन की धुंधली रोशनी में बुढ़िया ने देखा कि उसका बेटा चंदर सिंह उस भीड़ में खड़े हैं । जिनकी आखें तरेरने पर पूरा इलाका कांपता है; सामने मां को देखकर उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । मां की त्योरी चढ़ गयी । मां और बेटे का आमना-सामता भीड़ ने देखा । क्रमान से जैसे बाण उतरता है वैसे सबके चेहरे उतर गये ।

मां ने दांत पीस कर कहा,—“तुमको नौ माह गर्भ धारण यही दिन देखने के लिए किया था । तुम यहां हो और ये कायर इस औरत पर कैसे हाथ छोड़ रहे हैं । धिक्कार है तुम्हारा देह धरना । मैं क्या जानती थी कि तुम मेरा दूध लजाओगे । ओह ! हे भगवान ! “चन्दन सिंह की मां



## ८७ अंधा सूरज

सिर पकड़कर भीड़ के बीच में बैठ गई ।

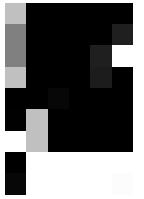
सहारा पाकर तेतरी माई जी हो माई जी कहती हुई बुढ़िया के पांवों पर लोट गई । भीड़ से अलग खड़े तेतरी के दोनों बच्चे सकायाये खड़े, पत्थर की मूर्ति बने खड़े हैं । उनकी आंखों के रुके हुए आंसू बह चले ।

सरीफवा का चेहरा मारपीट से सूज गया । बरौनियो के ऊपर जहाँ कट गया है । वहाँ लहू जमकर थक्का हो गया है । एक गाल फटकर लटक गया है । कुर्ता और धोती विददी-चिदछी हो गई है । वह सिर झुकाये सबके सामने बैठा हुआ । समूची भीड़ सन्नाटे में आ गई है । अंधेरे में सब एक दूसरे का मुंह ताकते हैं । इस समय किसी में किसी से कुछ कहने की स्थिति नहीं है ।

वरगद से दूर आम का काग है । वहाँ नटों का दल टिका है । शराब के नशे में धुत्त उनका शोर-शराबा यहां तक आ रहा है । बाग से आते हुए शोर को सुनकर सबके कान उधर टंग जाते हैं । कुछ देर के लिए प्रस्तुत घटना से सबका मन उचट सा जाता है । उस बच्चे के आंसू की ओर किसी की निगाह नहीं जाती । बूढ़ी मां ने बच्चे को पुचकार कर अपने पास बुलाया और हृदय का द्वार खोलकर उन्हें अपनी गोद में भर लिया ।

मां ने बेटे से आदेश के स्वर में कहा,—“सरीफवा को सरकारी अस्पताल में ले जाओ । मैं तेतरों को जीवन डाक्टर से दवा-दारू करावाती हूँ । ओह बेचारी को..... । धीरे-धीरे एक-एक कर मारने वाले खिसकने लगे । जहाँ कुछ देर सैकड़ों आदमी की भीड़ थी । चीख और गर्जन-तर्जन था । अंधेरे में आदमी के सिर ही सिर दिखते थे, सन्नाटा छा गया । रह गये दो बच्चे, तेतरो, सरीफवा, चन्दन सिंह और उनकी बूढ़ी । बाग से नटों का शोर साफ सुनाई पड़ने लगा ।

उसी समय कहाँ से एक पगली आयी, लगातार भूकती...बुदबुदाती और रह-रह कर अस्पष्ट किसी का नाम लेकर चीखती । बूढ़ी मां दोनों





बच्चे और तेतरी को लेकर घर की ओर चली। हाथ में लालटेन उठाकर चन्दर सिंह अस्पताल की ओर सरीफवा को पीछे लेकर चले।

सबके चले जाने पर कुत्ते बरगद के तीचे के अंधकार में गुत्थम गुत्थी कर लड़ने लगे। पगली जोर-जोर से चीखती अंधकार में तंगी दौड़ने लगी बरगद के पत्तों पर जुगनू चिनगारियों से भरने लगे। नटों का शोर और बढ़ गया।

---

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

---

● काला सूरज और अंधे की आखें

---

दोपहर में बाग का सन्नाटा बढ़ गया था। पेड़ों के परिन्दे मैदानों में दाना जुगने चले गये थे। लुचुई भोपड़ी के सामने बर्तन मांज रही थी। महीनों से तेल नहीं मिलने से जटा से बने केश कंधे और पीठ पर हिल रहे थे। इससे कुछ दूर दो चार नंगे बच्चे, काले-कलूटे घूल और पसीने में सने गुरदेल लेकर चिड़िया मारने की टोह में पेड़ों की फुनुगी की ओर एक टक ताक रहे थे।

छाँह में बैठी भैंसे निश्चिन्त भाव से आँखें बन्द कर जुगाली करती सफेद फेन जमीन पर टपका रही थी, जहाँ मक्खियाँ भिन्न-भिन्न करके सन्तटे को और बढ़ा रही थी।

लुचुई का मन हुआ कि उन बच्चों को दो-दो भापड़ लगा दे। बहुत देर की चुप्पी और अकेलेपन से उसका मन भर गया था। उसने गरदन घुमाकर कुत्ते की ओर देखा जो बर्तन के जूठन खाने के लिए बैठा ताक रहा था।

नहीं, मैं नहीं मारूंगी इसे, बेचारा कब से आस लगा कर बैठा है। उसने एक मुट्ठी जूठन कुत्ते के आगे फेंक दिया। जब तक कुत्ता लपके कुछ दूर बैठी कुतिया उस पर टूट पड़ी। दोनों कट्टम कुट्टी करते, कुहराम करने लगे। लुचुई का चारों ओर से घिरा मन का वेग कुत्तों के लड़ने से आराम पा गया। उसने एक लम्बी सांस ली और फिर भूख भूल कर बर्तन मांजने लगी।



कुत्तों की आवाज से दूर खड़े बच्चे चौक पड़े। उन लोगों ने दूर से चिल्लाना शुरू कर दिया।

काली कलूटी गरदन मोटी,  
बर्तन मांजे लुचुई खोटी।

“आने दो अभागों, मरजरे !”

हाथ में सोंटा लेकर वह बच्चों की ओर दौड़ पड़ी। स्वस्थ, अधनंगे शरीर की मांसलता मछली सी बाहों और जांघों में चमकने लगी।

सामने से काले घोड़े पर सवार, हट्टा-कट्टा तैतीस-चौतीस बरस का जवान, चिलचिलाती धूप से जला-भुना, अपने आस्तीन से पसीना पोंछता, घोड़ा की लगाम पकड़े, बाग में प्रवेश किया।

बर्फ के समान जमा बाग का सन्नाटा पिघलने लगा।

बच्चे डर से चिल्लाते-लुचुई सोंटा उन पर बरसाती, उसके पहले ही आगन्तुक के मुंह से कड़कती आवाज गूँज पड़ी।

“रुको”

अप्रत्याशित मर्द की आवाज सुनकर लुचुई के हाथ जहाँ के तहाँ रुक गये। बच्चे भय और आश्चर्य से सकपका गये। भैंस हड़बड़ा कर उठ गयी।

लुचुई ने उस जवान को देखा और देखती रह गयी।

आज से कभी किसी बच्चे को नहीं मारोगी, कहो !

क्यों, तुम कौन होते हो, इन बच्चों पर रहम करने वाले। चलो रास्ता नापो।

रास्ता तो नापूंगा ही, पहले कहो, जो कहता हूँ।

घुड़सवार का असर लुचुई पर जरा भी नहीं हुआ।

अरे, तुम होते कौन हो, रूआब दिखाने वाले, लुगुई ने तमक कर कहा। उसकी जांघों और बांहों की मछलियाँ और अधिक चमक उठीं।

4

1

2

3

4

## ६१ अंधा सूरज

लुचुई के मन में बहुत देर की चुप्पी से अंधेरा बढ़ गया था। वह छटने लगा। उसके मन का निरुद्देश्य गुस्सा और चेहरे का तनाव कम होने लगा।

यह भी कोई बात है ! जान न पहचान, लगे बरसने। लुचुई ने ऐंठ कर मन में सोचा।

“तुम्हारा नाम क्या है ? घुड़सवार ने जिज्ञासा व्यक्त की।

तुमको मेरे नाम से क्या लेना देना ? पसीना सूख गया। तुम्हें रास्ता देखना चाहिए। लुचुई ने तुनक कर कहा।

लुचुई ने ध्यान से देखा, इस मर्द को हो क्या गया है ? कहाँ का आदमी, हुक्म क्यों देने लगा ?

दोनों बहुत देर तक, तने, एक दूसरे को देखते रहे।

×

×

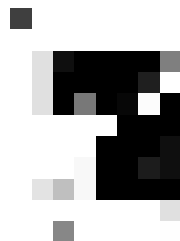
×

राम कुँवर घर से चलते समय अच्छे सगुन नहीं देखे थे। तीन दिनों से भौजाई से बोल-चाल नहीं हुई थी। भइया मिलिटरी में हवलदार हैं। भौजी ने राम कुँवर को बेटे के समान पाला है। राम कुँवर को अच्छी तरह याद है। छः बरस की उमर में उसको चेचक हो गया था। देवता पित्तर से लेकर दवा-दारु और सेवा-टहल का—अंत कर दिया भौजी ने।

“हे संभा भइया, हे शीतला सातो बहिन, मेरे बबुआ को निपुण-निरोग कर दो, में सबको पीली अंचरी चढ़ाऊँगी।”

भौजी का जुड़ा हुआ हाथ सिर से लग जाता था, और वह आंखें बंद किये बहुत देर तक देवी-देवता को गुहराती थी।

रात के आठ बज गये थे। रामू अभी तक लौटा नहीं। गुस्से में उफनती भौजी कभी आंगन में खड़ी होती, कभी दिया लेकर दरवाजे की ओर भाँकती। रामू अपने पेट का जना तो था नहीं, कि मारे-डांटे। सूनी कोख की औरत पराये के बेटे को पाकर ममतामयी तो हो सकती है, मां नहीं





हो सकती। भउजी चाहती थीं कि रामू को डांटे-शासन दे, लेकिन कह न कहीं मन में बाधा उपस्थित हो जाती थी। अंधेरे में चोर के समान, छपकता सिहरा-सिहरा आता रामू दिखाई पड़ा। रामू ने अंधेरे में भउजी को देखा, सौन्दर्य दीप्त मुख मण्डल पर करुणा और आशंका, दीये की रोशनी में स्पष्ट दीख रही थी। रामू सोचता था कि भउजी मारेगी। हाथ-पांव बांधेगी। खाना नहीं देगी। लेकिन अरे—रामू को देख कर भउजी रो रही है। गोरे गालों पर स्पष्ट चमकती आंसू की लकीर, वह दौड़ कर आंचल पकड़कर रोने लगा। दोनों मां बेटे नहीं थे। सिर्फ ममता दोनों के बीच सम्बन्ध जोड़े थी।

रामू जब बारह बरस का हुआ तो उसे घोड़े पालने का शौक लगा। वह रोज भउजी से कहता—मुझे एक घोड़े का बच्चा खरीद दो, मैं उसे खिला-पिला कर सयाना करूंगा और चढ़ूंगा। भउजी बहुत दिनों तक अनसुनी नहीं कर सकीं।

गरमी की छुट्टियों में पति के घर आने पर भउजी ने आग्रह करके अच्छी नस्ल का घोड़ा खरीद दिया। भइया जब बाजार जाते तो रामू को साथ ले जाना चाहते। भइया के सामने रामू इतना सहमा रहता कि आंखें उठा कर नहीं ताकता। भउजी लाख भिड़कती—“तो तुम्हारी आंख में लाज क्यों लग रही है। लेकिन क्या मजाल कि रामू भइया को ओर आंख उठा कर देखे।

पति-पत्नी के प्रेम-प्रसंग के बीच वह नन्हा बच्चा आंख की किरकिरी बन जाता था। भइया चाहते कि वह खेलने चला जाय। भउजी स्लेट-किताब रामू के हाथ में थमा कर कहती-अपने भइया से पढ़ो। इस जलती दोपहरी में कहाँ खेलने जाओगे। अपनी पत्नी की ओर आंखें तरेर कर पति देवता चुप हो जाते।

देवर को बीच में रख पति को पीड़ित करने में रामू की भउजी को एक दूसरा ही सुख मिलता था।



## ६३ अंधा सूरज

आप पढ़ाते क्यों नहीं हैं उसे ! अड़ोस-पड़ोस के लोग आंख पसारे ताक रहे हैं कि मेरा रामू बिगड़ जाय, आवारों के समान घूमें । मैं जानती हूँ, आप चाहते क्या हैं ? सास जी की बात मुझे खूब याद है ।

देखो, तुम मेरी बहू नहीं हो, मेरी बेटी । मैं एक भीख मागती हूँ । रामू को अपने कोख का बेटा मान लो । मेरे सामने तुम अपनी गोद में बिठा लो ।

इतना कहते-कहते भौजी की आँखें बंद हो गई थी । आज वह सरग में हैं और हम लोग धरती पर हैं ।

रामू की भउजी की आँखें आँसू से तर हो गई थी । भइया सकपकाये कभी रामू को देखते कभी पत्नी को ।

इस दृश्य को देखकर रामू ने खिसक जाना चाहा । भउजी से भला कैसे बच कर निकलते । भट से हाथ पकड़ लिया ।

“आप पढ़ाते क्यों नहीं हैं ? यह बिगड़ जायेगा । पति बुद्धू बने पढ़ाने लगे । बोलो र में साकार रा और म राम ।

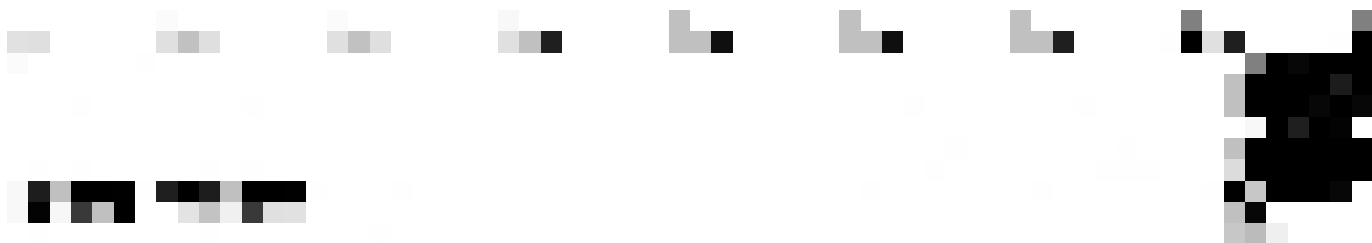
क में आकार का और म काम ।

भउजी ने देखा कि बिल्ली चूल्हे पर रखे दूध को चभर-चभर पी रही थी । भउजी दौड़ी । आज एतवार का व्रत था । बिल्ली ने दूध को जूठा कर दिया । भइया समझ गये कि इसे भूखों से जाना पड़ेगा । उन्होंने पत्नी से कहा “लाओ भोला, बाजार से कुछ फल-फरहरी ला दूँ । जाओ, खेलो रामू, क्यों इसे कैद खाने में डाल रखी हो ।

कितना मानती है भउजी रामू को, रामू का मन जानता है ।

उस दिन देवर-भउजाई को हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये थे ।

“हाँ तो भउजी, गजब का तमाशा हो गया आज बाग में । वहाँ पर एक नट ढोलक लेकर जा रहा था कि, बाग में बैठे लोगों ने उसे पुकार लिया ।



जबरदस्ती बीच में बैठा कर अल्हा गवाने लगे। बेचारा जान गया कि कुछ मिलना-मिलाना है नहीं। वहाँ कोई घर थोड़े है कि पैसा या अनाज रखा है। लोगों ने आश्वासन दिया कि आम और कटहल तोड़ कर देंगे, उसे बेच कर पैसे बना लेना। गाओ अल्हा।”

“और भउजी, वह अल्हा गाने लगा। उसकी कलाई में घुंघरूँ बंधे थे। ढोलक पर थाप देकर वह अल्हा गाने लगा तो घुंघरूँ की झनक और ढोलक की गमक के साथ जब वह गाने लगा,.....”

“चली लड़ाई गढ़ महोबा की.....”

तो सब की बोटी-बोटी फड़कने लगी। और भउजी हाहाकार मच गया। रतन काका आल्हा सुनकर इतने जोश में आ गये कि एक आम की ढाली उछल कर तोड़ लिया और ढोलक पर घड़ाम से मारा कि सब कोई हाहाकार पर छिटक कर अलग हो गये।

बेचारा नट भय और आश्चर्य से बक्-बक् ताकने लगा।

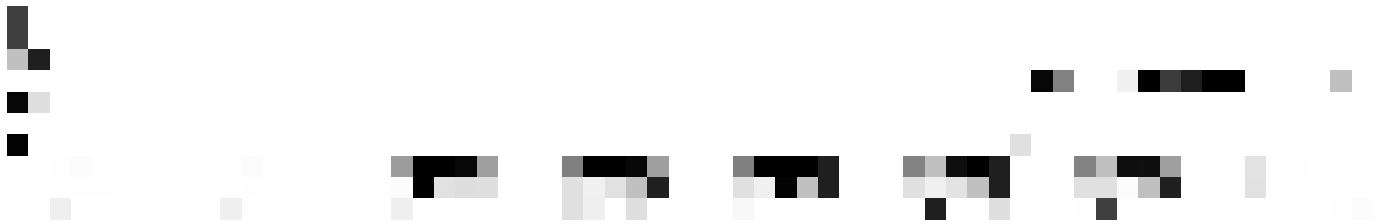
ढोलक फूट जाने से उसकी रोजी मारी गयी। अब वह गायेगा कैसे ?

बेचारा रोने लगा। चन्दन सिंह ने एक भापड़ मार कर उसे भगा दिया। कहाँ बीरता के गीत गाता था, लगा रोने।

हँसते-हँसते भउजी अफसोस में पड़ गयी। बेचारे की रोजी चली गयी। उसके पास पैसे कहाँ से होंगे कि नया ढोलक खरीदेगा ? भउजी का दिल मोम का बना है यह रामू जानता है।

जब से घोड़ा दरवाजे पर बंधा है, रामू की छाती गज भर की हो गई है।

दोस्तों-यारों में घोड़े के एक-एक गुण का बखान करता है। सुबह अखाड़े से लौट कर बड़े प्रेम और मिहनत से घोड़े की मालिश करता है, रंदा घुमाता है। सुबह शाम दोनों वखत उसे फेरता है।



सुबह धूप गाढ़ी हो चली और रामू चारपाई से उठा नहीं। भउजी चिढ़ गई रामू की आदत देखकर।

वह चिल्ला पड़ी। मेरा करम जल गया। इनको डाँट भी नहीं सकती, ये मेरे कोख के जाये थोड़े हैं ?

आँखें खोलकर रामू ने देखा भउजी को—भउजी का पहला क्रोध। रामू का अचंभा देखकर भउजी और उबल पड़ी, और सिर पकड़ कर रोने लगी। रामू भउजी के क्रोध से नहीं डरता, लेकिन उसके आँसू से डर कर दुखी हो गया।

सुबह के पवित्र मन में जहर घुल गया। रामू के मुँह का स्वाद बिगड़ गया। उसके मुँह के थूक का स्वाद ऐसा लगा जैसे कई दिनों के बुखार में झूठे आदमी को बासी पानी का स्वाद लगता है।

वह चुपचाप उठा। घोड़े की पीठ पर जीन कसा। उसका मन नहीं माना। वह मुँह धोने के बहाने आँगन में दौड़ कर गया। देखा, भउजी दो धारा आँसू बहा रही है।

करुणा की साक्षात् मूर्ति—भउजी निश्चल प्रस्तर मूर्ति बनी दीवार से उठंगी, आँखें बंद किये बैठी है।

रामू ने कुछ देर इस मूर्ति को देखा और पीठ घुमा कर चल दिया।

घोड़े पर चढ़ कर रामू ने एड़ लगायी। घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

×

×

×

भूख-प्यास से रामकुंवर का चेहरा मुरझा गया था। होठों पर पपड़ी पड़ गयी थी। रामू बार-बार होठों पर जीभ फेर रहा था। लुचुई जान गयी कि इस आदमी को भूख प्यास सता रही है। औरतें जन्म के बाद होश सम्हालते ही माँ होती हैं। लुचुई के अन्तर्मन में सोयी हुई माँ जाग उठी। राम कुंवर ने देखा—“अरे, भउजी यहाँ कैसे चली आयी।

इस दरम्यान बरतन माँजने की जगह गिरे-झूठे दाने पर कुत्ते दूद





पड़े और कट्टा-कुट्टी करने लगे। शोर सुन कर सबका ध्यान भंग हो गया।

बच्चे ढेले लेकर लड़ते कुत्तों पर दूट पड़े। मार खा कर कांय-कांय करने पर बच्चों को मनोरंजन का सुख मिलने लगा। बच्चों की हरकत को नकार कर लुचुई भोपड़ी में चली गयी। चारपाई पर चढ़ कर छींक पर से उसने हांडी उत्तारी। गुड़ का ढेला और पानी लेकर राम कुंवर के सामने खड़ी हो गयी।

दोनों हाथ फंस गये थे। आंचल फिसल गया। लुचुई घबड़ा गई। हवा में पीपल के पत्ते सी थरथरा उठी। मन के अंधकार में एक नन्हू चिराग जल उठा जिसके आलोक में समूचा मुख मंडल लाल हो उठा।

दोनों के बीच पेड़ का एक पत्ता गिरा-टप्। वहां कहीं फूल नहीं खिला था लेकिन एक खुशबू से दोनों का मन आमोदित हो उठा। दोनों ने फिर से एक दूसरे को देखा। खुले और सरल आसमान ने इस दृश्य का अभिनंदन किया।

कुत्ते अब भी लड़ रहे थे। बच्चे कुत्तों को मारना भूल कर लुचुई को चिढ़ा रहे थे।

काली कलूटी गरदन मोटी,  
आँख लड़ावे लुचुई खोटी।

गरदन मोड़कर, आँखें तरेर कर लुचुई ने बच्चों की ओर देखा, और चुस्त जुबान में राम कुंवर से कहा—“लो पानी पी लो। गुड़-पानी देकर बच्चों की ओर भपटी।

“अरे तो फिर कहाँ दौड़ी?” राम कुंवर ने कोमल वाणी में गलते ढेले की अंदाज में झिड़का।

दुनिया सब कुछ भूल सकती है, प्यार करना नहीं भूल सकती। भउजी के अन्तर्मन की माँ लुचुई में अवतरित होकर प्रेमिका हो उठी।

1

...

...

## ६७ अंधा सूरज

लेकिन राम कुंवर के कान घर की ओर लगे हुये थे—रामू है रे !  
रामू है रे ! भय से उसकी आँखें बन्द हो गयी । संध्या के अंधकार में  
भउजी दौड़ती हुई रामू को पुकार रही है ।

रामू है रे ।

कल्पना में उसने देखा, भउजी के आँचल हवा में फहरा रहे हैं ।  
बिखरे केश हवा में उड़ रहे हैं । वह दौड़ती चित्लाती जा रही है, बबुआ  
है रे ! इस दृश्य को कल्पना में देख कर वह बेचैन हो उठा । हड़बड़ा  
कर आँखें खोली । सामने लुचुई कथरी बिछा रही है, उसके बैठने  
के लिए ।

आज लुचुई के घर मेहमान आया है ।

अनाहूत; आगन्तुक ।

कथरी पर बैठने में राम कुंवर को घिन नहीं लगी । लुचुई जिस निगाह  
से राम कुंवर को देख रही थी उसके असर से उसका मन एक रसायनिक  
प्रभाव से बदल रहा था । खोरे के रोग से मरियल कुत्ते, धूल में लिपटे  
नंग-धिड़ंग बच्चे, मक्खियाँ भिनभिनाती जमीन, काले मैले, चादर बिछा-  
वन सबके प्रति अपनत्व का भाव आ गया ।

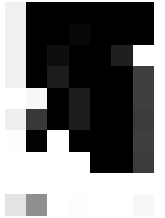
काँसे की मुड़ी-तुड़ी थाली में सुबह की दो रोटी, गुड़ और प्याज-नमक  
परस दिया ।

—“लो खाओ । धूप में चेहरा कैसा झुलस गया है ?”

आँचल को पानी में भिगोकर बड़े ममत्व और लाड़ से राम कुंवर के  
चेहरे को पोंछ दिया । रोटी टुंग-टुंग कर रामकुंवर बच्चों के समान  
खाने लगा ।

मालिक को खाते देखकर घोड़ा हिनहिनाने लगा । घोड़े के साथ ऐसा  
कभी नहीं हुआ था । राम कुंवर उसे दूब और चना भरपेट खिला कर  
खाता था ।

घोड़े की हिनहिनाहट सुनकर रामकुंवर का मन बेचैन हो उठा । आस



पास गौर किया। घोड़े के खाने के लिए कुछ नहीं दिया। मदों के मन को औरतें जल्दी भाँप जाती हैं। नमक और सत्तू एक बाल्टी में घोलकर लुचुई ने घोड़े को दिया। घोड़ा पीने लगा।

लुचुई ने प्यार भरे शब्दों में उलाहता दिया—सोते क्यों नहीं? पता नहीं रात सोये कि नहीं।

कथरी पर लुढ़क कर रामकुंवर ने आंखें बन्द कर ली। वह सो गया।

सिर की टोकरी में गोदना गोदने का सामान कई तरह के कमाई के अनाज, गृहस्थ परिवार से माँगे फटे कपड़े लेकर लुचुई की माँ आ गई। बेला ढल गई थी। किरणों की आग नरम हो गई थी। बच्चे दूर खेलने चले गये थे।

अजनबी को सोते देखकर लुचुई की माँ भौंचक हो गई।

अरे, यह कौन सोया है? बुढ़िया ने हल्की तुर्ण जुवान में कहा।

तो तुमको रंज क्यों होता है? तुम्हारा दामाद है। कांव-कांव करो मत बेचारे की नींद खराब हो जायेगी। माँ के सिर से टोकरी उतार कर भोपड़ी में रख दिया। बहुत देर तक सिर पर टोकरी रहने से माँ के सिर के जुएँ काटने लगी। वह लगी सिर बकोटने।

“आओ माँ जुएँ हेर दूँ।”

माँ सिर खोलकर बैठ गई। बेटी जुएँ हेरने लगी।

राम कुंवर के मुँह पर मक्खियाँ भुँड बना कर बैठ गई। जुएँ हेरते हुए लुचुई की निगाह राम कुंवर के चेहरे की ओर गई। वह धाय कर आँचल से मक्खियों को उड़ाने लगी।

अरे, इस छोकरी को हो क्या गया है? कहाँ का परदा, न नाम न गांव, लगी मोहमाया दिखाने। जरा भी सरम-हया नहीं।” लुचुई की माँ ने मन में सोचा।

आँचल हिलने की आहट से राम कुंवर ने करवट बदली।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

## ६६ अंधा सूरज

“भउजी एक गिलास पानी पिलाओ । नींद में उसके मुंह से आवाज निकली । फिर अस्फुट ध्वनि में बरगिया । “भउजी”

लुचुई ने अपनी मां की ओर ताका । मां का मुंह अचम्भे में खुल गया । पोपले मुंह की कुरूपता और कुरूप हो उठी । बुढ़िया मां का मुंह पसीने से अभी भीगा था । वह नाक से चूते हुए नेटे को सुड़क रही थी । बेटी के साथ बुढ़िया राम कुंवर के पास गई । नाक सुड़कने पर राम कुंवर के सिर में लगे खुशबूदार तेल की खुशबू बुढ़िया के मगज पर चढ़ गयी । एक अजब के सुख से बुढ़िया का भरींदार चेहरा फैल गया । स्वतः स्फुट हंसी पोपले मुंह पर छा गई ।

एक बार बचपन में लुचुई को प्यास लगी थी । प्यास से छटपटाती लुचुई तालाब के पास गई । वहां देखा, एक नंगा मरद नहा रहा है । उसके कंठ में कांटे उग आये थे । वह घाट पर खड़ी थी, और उसका अस्तित्व थरथरा रहा था ।

राम कुंवर के चेहरे की ओर भांकती लुचुई के कंठ में कांटे उग आये थे । सम्पूर्ण अस्तित्व थरथरा रहा था । जैसे मलेरिया के बुखार में जाड़े से देह थरथराती है ।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाके में नदों की एक यायावर जाति होती है । जो टिक कर एक जगह बसती नहीं । लुचुई उस जाति की थी । मर्द पत्थर काट कर चक्की बनाते, कुश्ती लड़ते, चोरी और डकैतियां डालते । औरतें गांवों की बहू-बेटियों के गोदने गोदती, बच्चे लोगों के कान के खूंट निकालते टूटे-फूटे फिल्मी गीत गाकर गांवों में भीख माँगते । लुचुई के दो भाई डकैती में मारे गये थे ।

लुचुई का दूसरा ही शौक था । वह भाला लेकर अरहर और ईख के खेतों में घुस जाती । गोह, साहिल, जंगली सुअर और नील गाय का शिकार करती ।

उसका बड़ा भाई बचपन से ही लुचुई से कसरत कराता, अखाड़े में ले





जाता और अपने हाथ से भैंस का दूध पिलाता। वह उसे बहुत स्नेह देता था। डकैती में मारे जाने पर लुचुई को अपने भाई की लाश भी देखने नहीं दी गई। उस दुख को जुबान बन्द कर पूरा परिवार सह गया। लुचुई को भी सहना पड़ा। भाई की मौत पर लुचुई पत्थर पर तीर लगने के समान अप्रभावित रही। सोये राम कुंवर के शांत चेहरे की ओर देखकर वह कंपकंपा गई।

“कहो लुचुई तुमको कौन सा रोग लग गया?” वर्षा में भीगते गेरू के पहाड़-सा लुचुई का अन्तर्मन गल रहा था, और उसका सांवला चेहरा लाल हो रहा था।

नाक सुड़कती हुई लुचुई की मां मुंह मोड़कर लौंटी तो देखा कि कुत्ते चूल्हे के पास रीधे अन्न का दाना ढूढ़ रहे हैं। वह भाड़ लेकर कुत्तों को मारने दौड़ी। कुत्तों के भाग दौड़ में भन्न से थाली बजी और राम कुंवर की नींद खुल गई।

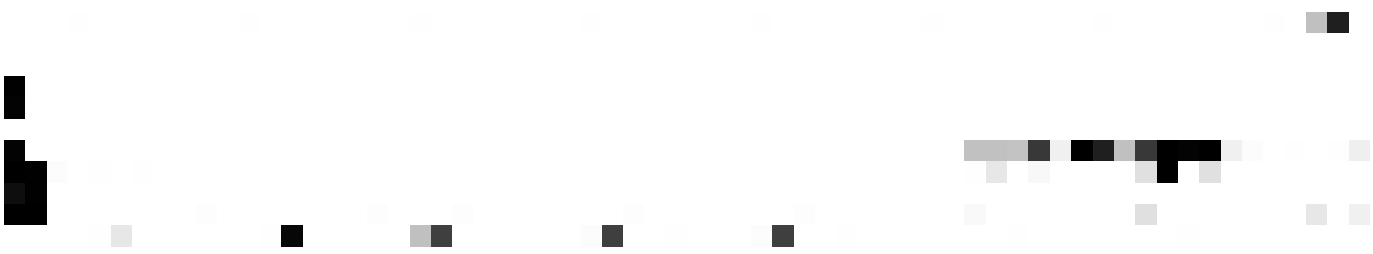
सामने देखा, लुचुई मुंह फेर कर खड़ी है, नाखून से बड़े नाखून को तोड़ रही है। उसके आंचल चेहरे पर ज्यादा खिंचे थे। गठीला शरीर ज्यादा नरम और लचीला हो गया था।

बैटी की करतूत देखकर मां जलभुन गई। उसका कोई बस नहीं चला तो कांसे के बर्तन को इधर-उधर पटकने लगी। मां-बेटी में भी प्रेम को लेकर ईर्ष्या होती है। लुचुई मां के मन को भांप गई। देह भटक कर उसने सहज होने की कोशिश की।

लुचुई बाल्टी और मिट्टी का घड़ा लेकर पानी पिलाने को चली। राम कुंवर से फुसफुसा कर कहती गई “अभी पानी लेकर आई।”

वृद्धी का तो अजब हाल हो गया। वह न नवागन्तुक से बतिया सकती थी, न चुप रहने की उसकी आदत थी।

राम कुंवर की नजर घोड़े पर पड़ी। वह करुण दृष्टि से मालिक की ओर ताक रहा था। आंखों में कीचड़ भरे थे और पानी चू रहा था।



## १०१ अंधा सरज

पेड़ों के पत्तों से सोने के थाल-सा आसमान भांक रहा था। हवा दम साधे थी। एक पत्ता भीन हीं डोल रहा था।

सोकर उठने पर भउजी लड्डू से पानी पिलाती। थी भउजी यहाँ कहाँ है। सामने एक खूबसूरत बूढ़िया खड़ी है। दबे-पिचके कांसे के बरतन हैं। राख भरा चूल्हा है और पेड़ की डाल पर बंधे छींके पर टंगी हांडी पर दो-चार सुबह की बनी रोटिया पड़ी हैं। वह बीमार सा कथरी से उठा। धीरे-धीरे घोड़े के पास गया, और उसकी पीठ सहलाने लगा। स्नेह प्रत्येक जीव को चाहिये, पीठ पर हाथ फेरने से घोड़े ने आँखें बन्द कर ली।

बूढ़िया ने फिर कुछ संबोधन करने की कोशिश की, लेकिन थूक घोंट कर रह गई। जब उसे बिना अभिव्यक्ति के रहा नहीं गया, तो दूर बँधी बकरी को लाने चली गई, जो में-में-में करती भोपड़ी की तरफ ताक रही थी।

राम कुंवर ने देखा कि बाग के किनारे एक मरे हुए मवेशी की लाश फेंक दी गई है जिसको कुत्ते, स्यार और गिद्ध नोंच-नोंच कर खा रहे हैं। एक गिद्ध चोंच में मांस का लोथरा लेकर राम कुंवर के सिर पर की डाली पर बैठ गया। मांस से खून टपक रहा था, जिसको देख कर तीव्र घृणा और अटूट ऊब से उसका मन-प्राण भर गया।

कुंए से लुचुई अभी लौटकर आयी नहीं, सोकर उठने से राम कुंवर का कंठ सूख रहा था।

एक कान में बहुत छोटा पीतल की बाली पहने, हाथों में लोहे का कड़ा पहने, लाठी में गूदर सा भोला लटका कर कंधे पर रखे, एक तगड़ा, गठे बदन का जवान राम कुंवर को ओर आता दिखाई पड़ा। वह महुअर बजा रहा था। महुअर की सुरीली ध्वनि से आस-पास का वातावरण संगीतमय होने लगा।

मन में जगी घृणा और ऊब महुअर की लय से बर्फ के समान पिघलने लगी। वह सहज होने लगा। अपने भइया को आते देख कर



लुचुई तेज कदमों से कुंए से चली। दोनों एक ही साथ भोपड़ी के पास पहुँचे। राम कुंवर अभी तक घोड़े की पीठ सहला रहा था।

भोपड़ी के सामने अजनबी को घोड़े के पास खड़ा देख कर भाई ने बहन को प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा। वह औरत है, वह क्या सही जवाब दें? वह कहे कि मैं इस अजनबी से प्रेम करने लगी। उसने कुछ नहीं कहा और लोटे में पानी लेकर राम कुंवर के सामने खड़ी हो गई। लुचुई का भाई फिल्मी गीत गुनगुनाते हुए भोपड़ी में चला गया। भोला जमीन पर रख कर इत्मीनान से उसने बीड़ी सुलगाई और बैठ कर पीने लगा। मुँह में बीड़ी दबाकर उसने जेब में हाथ डाला। रेजकारी और नोट गिनने लगा।

राम कुंवर लोटे से भर पेट पानी पिया। मुँह धोया और लोटे को लुचुई को थमा दिया। भाई ने बहन को पुकारा।

अरे, लुच्ची, इधर आ।

उसके भाई का नाम सिरोही था। बहन को उसने सारे पैसे थमा दिये, और पूछा यह आदमी कौन है?

बहन ने थोड़ा ऐंठ कर और हँस कर कहा—“तो तुम्हारे दरवाजे कोई नहीं आये, यही चाहते हो। बहन की पेट की बात भाई भाँप गया। उसे अपनी बहन से अपार स्नेह था।

वह भोपड़े से निकला। घोड़े के लगाम को थामा और राम कुंवर से कहा—“जाओ आराम से बैठो। भाई को थोड़ा टहलाने के लिए ले जाते ही लुचुई ने राम कुंवर के हाथ को थाम लिया।

“तो तुम छोड़ कर जाओगे नहीं? मेरा भाई तुम्हें बहुत मानेगा। वह मुझे भी मानता है। आओ चलो।

राम कुंवर के पुराने संस्कार साँप के केंचुल से उतरने लगे। वह चुपचाप, निरीह बच्चे सा लुचुई के पीछे लग गया। सूरज की अन्तिम किरण से दोनों का चेहरा आलौकिक हो रहा था।



## १०३ अंधा सूरज

राम कुंवर का मन अंधकार में डूबते चिराग सा थर-थर कांप रहा था। लुचुई धूप में शहद के छत्ते सी टपक रही थी।

“तो तुम्हारा नाम क्या है?”

लुचुई ने राम कुंवर की आंखों आंख में गड़ा कर कहा।

“भउजी मुझे रामू कहती है। गाँव इलाके के लोग मुझे राम कुंवर कहते हैं। तुम्हारा नाम क्या है?”

“भइया बप्पा मुझे लुचुई कहते हैं। भइया मुझे लुच्चो कहते हैं।” रामकुंवर ने निरुत्साहित भाव से कहा।

“तो तुम जाओगे नहीं। इस गाँव जवार के लोग बड़े बदमाश है। मुझे देखकर सीटियाँ बजाते हैं। भदे इशारे करते हैं। अकेले यहाँ मुझे डर लगता है। भइया-बप्पा रोजी कमाने चले जाते हैं। मैं अकेली जान दिन भर बाग के सूनेपन में घबरायी रहती हूँ। यहाँ के लोग बड़े कसाई हैं।

और लुचुई की आँखें आँसुओं से तर हो गई। आँसुओं से भरी आँखों से उसने राम कुंवर को देखा।

लुचुई की आँखों में आँसू देखकर राम कुंवर का शेर-सा मन पालतू गाय-सा हो गया। पुरुष जंगली किस्म के होते हैं। औरतें उनका शिकार कर प्रेम में उन्हें बाँध कर घरेलू बनाती हैं।

“तो साफ-साफ कहाँ, जाओगे नहीं।” लुचुई ने ठुनक कर कहा। राम कुंवर ने हिचकते हुए कहा “लेकिन घर पर भउजी बहुत दुखी होगी।

“मैं तुम्हारी भउजी को मना लूँगी। उसके पांव दाबूँगी। अपने हाथ से कंधी चोटी कछूँगी।

लुचुई ने राम कुंवर को बात में लपेटने के लिए कहा।

शाम उत्तर आयी। अंधेरा फैलने के पहले दोनों भोपड़ी में लौट गये।





सिरोही अभी घोड़ा लेकर लौटा नहीं। राम कुंवर अपने घोड़े को बहुत प्यार करता था। उसकी आँखों में आँसू भर आये। कलेजा धक्-धक् करने लगा। वह बहुत थके हुए स्वर में लुचुई से पूछा, वह अभी आया नहीं। तुम्हारा भइया कैसा आदमी है ?” इतना कहते-कहते राम कुंवर का चेहरा करुण हो उठा।

अब तक लुचुई की मां ने चूल्हा जला लिया था। उसके धुंए से चिराग की रोशनी के बावजूद भोपड़ी का अंधेरा कम नहीं हुआ था, बल्कि ज्यादा रहस्यात्मक ढंग से भर गया था।

घोड़े की घ्राण शक्ति बड़ी तीव्र होती है। अजनबी के हाथ पड़ने से घोड़ा परेशान हो गया। टहला कर लौटते समय, सरपट दौड़ता हुआ अंधकार में गुम हो गया। सिरोही को काटो तो खून नहीं।

“अजनबी मेरा क्या लेगा, लेकिन लुच्ची को क्या जवाब दूँगा। उसके पाँव में पत्थर बंध गये। किस मुंह से घर लौटे।

अंधरे में डूबे दरवाजे पर घोड़ा हिनहिनाया। रोते-रोते थक कर भउजी सिर पर हाथ रख कर करुण मुद्रा में बैठी थी। हड़बड़ा कर दरवाजे की ओर बढ़ी। देखा, घोड़ा खाली खड़ा है। भउजी को देख कर घोड़ा फिर हिनहिनाया। भउजी ने कल्प कर कहा।

“मेरे हीरे को तुम कहा छोड़ आये ?”

भउजी मद्धिम विलाप करती घोड़े की लगाम थाम दरवाजे से आँगन की ओर बढ़ी।

×

×

×

धुंए भरी रोशनी के बीच लुचुई राग कुंवर से प्रेमालाप करने लगी। बाहर पेड़ों पर जुगनू चिनगारी से बरस रहे थे ! गर्मी, धुंए, ऊमस और अथाह चिन्ता से राम कुंवर का सिर फटा जा रहा था। उसने चिराग की रोशनी में देखा—“भउजी आँसुओं से तर बैठी है। भउजी से सम्बन्धित कितनी स्मृतियाँ, कितनी बातें उसके दिमाग में कौंध गयीं, उसके मुंह से स्फुट ध्वनि निकली—“भउजी”।

2

2

दूर एक बच्चे के रोने की आवाज आयी । ताड़ के पेड़ से तीन-चार भीध पंख फड़फड़ाते हुए उड़े ।

×

×

×

आंगन के किनारे चिराग जल रहा था । नाद पर घोड़ा खाने लगा था । भउजी सिर पर हाथ रख कर चिन्ता मग्न बैठी थी । गाँव के चौपाल पर लोग ढोलक की थाप पर अलाप ले रहे थे ।

भउजी की आंखें बन्द थीं । स्मृतिया चल चित्र सी दिमाग में दौड़ रही थीं आधी रात तक रामू सोया नहीं था । सास दो महीने पूर्व मरी थी । लाख बच्चे को अपने से सटांती, वह सटाता ही नहीं था । उसकी आंखें रोते रोते लाल हो जाती थी । बाद में रोना बन्द कर दिया । पत्थर सा गुमसुम बैठा रहने लगा । आधी रात हो गयी, राम बिछावन पर पत्थर सा बैठा है । भौजी लाख पुचकारती है । उस पर कोई असर नहीं होता । भउजी न मार सकती थीं, न डाट सकती थी । पुचकारने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थीं । बहुत मनाने, दुलारने पर कही आंखें मोड़ा ।

होली का दिन था । एक दूसरे पर कीचड़ उछालने के बाद लोग नहा-धोकर रंग अबीर खेलने घरों से निकल गये थे ।

गाँव की लड़कियाँ ठट्ट की ठट्ट भउजी से रंग-अबीर खेलने पहुँच गयीं । भउजी के ऊपर रंग-अबीर की इतनी वर्षा हुई कि वह नहा गयी । जब भउजी लड़कियों से हार गयी तो रामू को गोद में उठा लिया । और लड़कियों से कहा “यह भीग जायेगा तो इसको बुखार लग जायेगा ।”

लड़कियाँ भउजी की चालाकी समझ गयीं । एक ने भउजी के गाल में चिकोटी काट लिया । रामू ने गोद से हुमक कर लात चलाया । अपने प्रति मोह माया देखकर भउजी ने रामू को कलेजे से दबा कर चूम लिया ।

घर के पिछवाड़े लोग होली गा रहे थे ।

परदेशिया अइलन ए गोरिया

परदेसियां अइलन ए गुइयां



आज पलंग पर धूम मची  
परदेसिया आइल ए गुइयां

और दरवाजे पर बूट की टप्-टप् की आवाज सुनायी पड़ी। भइया को आते देखकर खुद रामू गोद से छिटक कर घर के कोने में छिप गया।

पत्नी को रंग में लाल सूरख देखकर पति की आँखें फटी की फटी रह गयी। पत्नी बेचारी सहम कर शर्मा गयी। भारी गले से पति ने कहा—  
गाड़ी लेट पहुँची है।”

×

×

×

बूढ़ा नशे में लड़खड़ाता, बर्ताता रोशनी के पास पहुँचा। “लाव भाला इसने तेरा तीन लाख रुपया मारा है। इसे भोप कर मार डालूंगा। अब कुत्ती बुढ़ी, तुम्हारी हड्डी तोड़ दूंगा आज।” बूढ़ा धड़ाम से चूल्हे के पास गिर गया।

“अच्छा स्साले देखूंगा ! भाई-बहिन ने बूढ़े को सम्हाल कर दूर रखी चारपाई पर लिटा दिया।

बूढ़ा ऐसे थूका जैसे जीभ में रबर सटा हो। उसने हाथ से शून्य में मुँह से मक्खी उड़ाने जैसी क्रिया की।

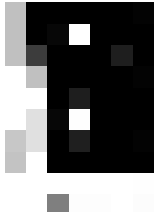
राम कुंवर को काटों तो खून नहीं। लुचुई ने दिये की रोशनी में जाकर देखा रामकुंवर का रक्तहीन चेहरा।

अरे, तो तुम पागल-सागल की बोली में आ गये। वह बूढ़ा पीये है ! वह रोज ऐसा ही करता है। तुम डरना मत।”

लुचुई राम कुंवर के ललाट का पसीना पोंछने लगी। बूढ़ा अब भी बर्ता रहा था—“अच्छा स्साले”

बाग के अंधेरे में सीटी बजी। टार्च का उजाला भोपड़ी के सामने नाचा और

सिरोही सीटी की आवाज की ओर जाने को तत्पर हुआ। बहन रास्ता रोक कर खड़ी हो गई।



नहीं जाने दूंगी ।

भाई तिहोरा करने लगा ।

मेरे दोस्त खड़े हैं । बुला रहे । जाने दो बहना ।

नहीं, नहीं जाने दूंगी । लुचुई बच्चों सी जिद्द कर गयी ।

मुझे दस मिनट का बख्त दो, मैं तुरत लौट आऊंगा । सिरौही ने हाथ जोड़कर कहा ।

लुचुई अपने प्रेमी की नजर में गिरना नहीं चाहती थी । पहले यह सब उसे खलता नहीं था, लेकिन राम कुंवर के आते ही यहाँ का सब कुछ बुरा लगने लगा ।

सिरौही अपने चोर दोस्तों के बीच गया । लुचुई ने चोर दृष्टि से देखा, राम कुंवर काठ के पुतले सा कथरी पर बैठा है । सामने चिराग जल रहा है । बुढ़िया चुल्हा फूंक रही है ।

भाई के चले जाने पर लुचुई भारी मन से राम कुंवर के पास गयी । राम कुंवर का चेहरा पत्थर हो गया था,—सवैदना शून्य, निष्प्रभ । लुचुई ने धीरे से अपना हाथ राम कुंवर के हाथ पर रख दिया । राम कुंवर चौक गया ।

अरे ! कौन, तुम !

रामकुंवर ने विस्फारित दृष्टि से लुचुई की ओर देखा ।

लुचुई के मोटे होठों पर शहद सी हँसी फैल रही थी ।

“तुमकों अपना घर बहुत याद आ रहा है न ! यह भी तो तुम्हारा ही घर है । क्यों मैं तुम्हे अच्छी नहीं लगती ? बुढ़िया बेटी की करतूत देखकर जलभुन कर राख होने लगी । जब कोई बस नहीं चला, तो जमीन पर क्रोध रौर घृणा से धूक दिया—आक्-थू” छिनाल ! और किसी अन-जानी पीड़ा से दन्तहीन मुखड़े को सिकोड़ दिया । बूढ़ा नशे और नीद में बरिया—“रंडी, छिनाल ।”





## १०६ अंधा सूरज

बुढ़िया भूमक कर सोये हुए बूढ़े के कमर की धोती ठीक करने चली। अंधेरे में ईंट से पांव टकरा जाने से नाखून से लहू निकलने लगा।

“अरे बप्पा रे” बुढ़िया चीख रड़ी।

“अरे माई रे, ऊ—हू—हू।” बुढ़िया जौर-जोर से रोने गाने लगी।

लुचुई अपना स्वप्रिल भंग होते देखकर पीडित हो गई।

चीख सुन कर बूढ़ा हड़बड़ा कर उठा और बुढ़िया को मारने के लिए तलमलाते कदम से अधजगे, नशे में धुत् टटोलने लगा।

बुढ़िया लुत्ती सी भगी चुल्हे की ओर, चूल्हा फूंकते हुए ‘हुक्-हुक्’ कर ठुनकने लगी।

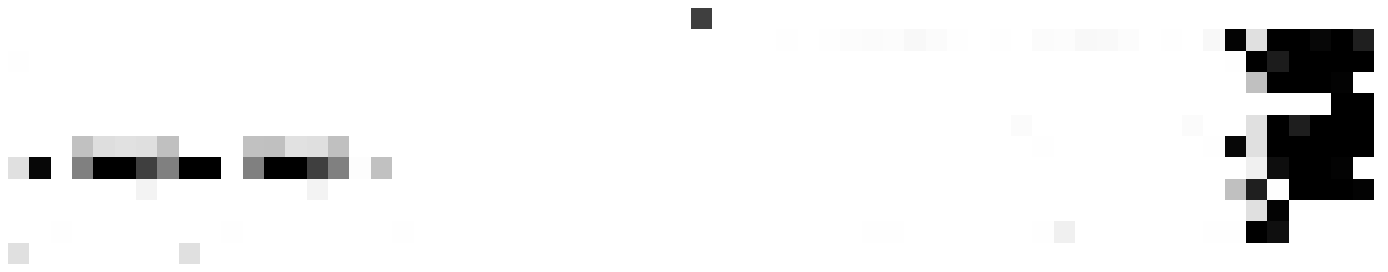
बूढ़ा नशे में भुनभुनाता चारपाई पर चित्त उलट पड़ा, और सूअर सा गुर्रा कर आँखें बन्द कर लिया।

लुचुई चिराग लेकर सूअर का तेल खोजने लगी। कुप्पी से बुढ़िया के नाखून पर तेज ढाल कर कहा कि उधर आराम करो मैं मांस रींघ देती हूँ। बुढ़िया कूथती कहरती एक किनारे बैठ गई। लुचुई ने थोड़ा दूर जाकर कान पर हथेली रोप कर आहट लेना शुरू किया। दूर—अंधेरे में बीड़ी की भुक-भुक की रोशनी दिखायी पड़ी। बाग में सियारों ने हूँआ-हूँआ करना शुरू कर दिया। सियारों के समवेत स्वर में बोलना सुनकर कुत्ते भूंकते हुए दौड़े

बूढ़ा शोर गुल सुनकर चारपाई पर हिल कर रह गया। बुढ़िया पांव पकड़े और कहंरने लगी। भोपड़ी की मद्धिम रोशनी में राम कुंवर चौंक कर खड़ा हो गया, और स्वप्राविष्ट स्वर में बोला।

“भउजी”

“क्यों तुम अकेले ऊब रहे हो। भइया अभी तक लोटे नहीं, बैठों न।” लुचुई थोड़ी चिन्ता और प्यार जता कर बांह पकड़ कर राम कुंवर को बैठा दिया।



वह राम कुंवर का होंठ चुम कर ठिल्ल से हँस पड़ी। फिर इतिमनान से बोलों—“बैठो, मैं खाना बनाकर दे रही हूँ।”

दूर सिरोही के गाने की आवाज सुनायी पड़ी।

केंकरा से आग मांगव

केकरा से पानी.....

केकरा पर छोड़ के जइब

टुटही पलानी.....

एके साथ रहे के, दूनो परानी

एके साथ रहे के,.....

सिरोही के स्वरालाप से बाग का अधिकार काले सागर की लहरों-सा टूट रहा था।

भइया बड़ा अच्छा गाते है, ना माई !” लुचुई ने गोह का मांस रींछते हुए कहा। माई को तो दूसरा ही दुख सता रहा था। वह क्या जवाब दे। लुचुई को अपने सुख के आगे माई की पीड़ा याद नहीं थी।

उसने अस्पष्ट स्वर में गुनगुनाती, मुस्कुराती हुई देखा, राम कुंवर निस्पन्द बैठा हुआ है।

गीत का स्वर पास आ गया। लुचुई खुशी में गीली होकर बुदबुदायी “भइया आ रहे है” उसने मुंह मोड़ कर, थोड़ा चौंक कर देखा, राम कुंवर घबड़ाये हुए खड़ा हो गया है, जैसे कहीं जाना हो उसे। वह दौड़ कर लुचुई के पास आया। और बच्चों सी जिज्ञासा की।

और छोड़ा कहाँ गया ?

लुचुई राम कुंवर की बाल-सुलभ जिज्ञासा देखकर हँसने लगी।

तब तक सिरोही आ गया।

भइया तुम राम कुंवर को लेकर बाँस करो, मैं अभी थाली लगाये दे रही हूँ। सिराही राम कुंवर का हाथ पकड़ कर भोपड़ी की ओर चला।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

33

34

35

36

37

38

39

40

१११ अंधा सूरज

कोड़ों का दल चिराग के चारों ओर मँडरा रहा था। दोनों अंधेरे से उजाले की ओर बढ़े।

बुढ़िया कहरते-कहरते बीमार कुतिया सी वही जमीन पर लुढ़क गयी थी, और खर्राटे भरने लगी थी।

तुम कुश्ती लड़ते हो? पुट्ठे बड़े अच्छे हैं। तुम्हें जंगली सूरज का गोश्त खिला कर इस इलाके का नामी पहलवान बनाऊँगा। लुचुई बड़ी भली लड़की है। वह मेरी बहन है। उसके मन को छोटा मत करना।”

राम कुंवर ने हाँ-नाँ कोई जवाब नहीं दिया। उसने लंबी जम्हाई ली और सिर झटक कर पुरानी यादों को भूलने की मानसिक चेष्टा की।

सामने एक कनस्तर खाली खड़ा पड़ा था। बांस के फट्टे की अलगनी पर एक फटा हुआ कुर्ता टंगा था जिसका कालर कान से हवा में हिल रहा था।

चिराग पर एक फत्तिगां गिरा और चर्-र-र से जल गया।

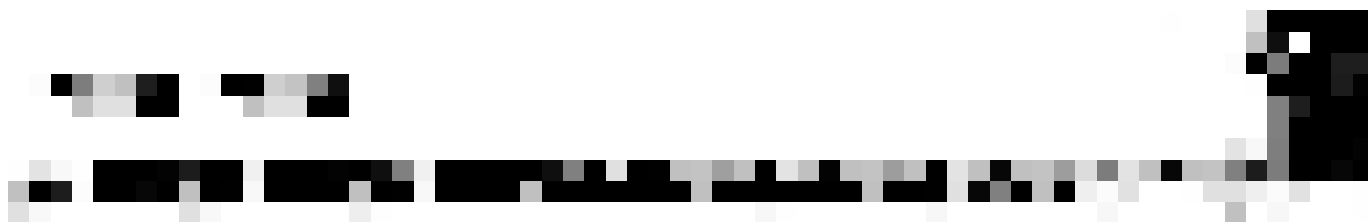
सिरोही ने धोती को दुहरा कर लुंगी-सी कमर में लपेट लिया। उसका खुला कसरती बदन देख कर राम कुंवर का मुँह खुशी से खुल गया।

लुचुई ने मांस और भात की दो थाली लगाया। सिरोही और राम कुंवर जमीन पर बैठ गये। सिरोही ने कहा—“और बप्पा को क्यों नहीं जगा कर खिला दिया।”

“क्या फिर हंगामा करना है? चुपचाप खाओ। लुचुई ने जवाब दिया।

सिरोही राम कुंवर के खाने के लिए बढ़ावा देने लगा।

अरे यार, जम कर खाओगे नहीं नो रान और पुद्‌ठों पर मांस नहीं चढ़ेगा।



×

×

×

दिन बीतते गये । राम कुंवर बच्चों-सा लुचुई पर निर्भर हो गया । सिरोही रोज राम कुंवर को अखाड़े में कुश्ती लड़ाता । लुचुई रोज राम कुंवर से इस बात को दुहराती छोड़ कर जाओगे नहीं न ।

गर्मी की निचाट दोपहरी ने राम कुंवर को साथ लेकर जलावन के लिए पीपल की सूसी डाली काटने गयी । जूड़े को समेट कर बांध लिया । आंचर को कमर में लपेट लिया । साड़ी का कच्छा कस लिया, और सूखी डाल की खोज में फुनुगी-फुनुगी नाचने लगी । पसीने से लुचुई का हाथ डाल से फिसल-फिसल जाता था । राम कुंवर सिर ऊँचा किए हुए लुचुई की ओर एक टक ताक रहा था । आकाश से तेज धूप सोने सा पिघल रहा था । दोनों का चमड़ा सुलग रहः था ।

दूर, बहुत दूर पीली साड़ी पहलने एक औरत जाती हुई दिखायी पड़ी । राम कुंवर ने देखा दूर, बहुत दूर, सोने के गानी का समन्दर लहरों में हिल रहा है । वह और लहरों में कांपती जा रही थी ।

राम कुंवर ने सोचा भउजी तो नहीं है !

अचानक उसके मुंह से चीख निकल गई,—“भउजी ! पेड़ पर चढ़ी लुचुई ने चीख सुनी वह घबड़ायी । —“राम कुंवर को कुछ हो तो नहीं गया ।”

इसी बीच पसीने से भीगे उसके पांव डाली से फिसल गये । उसके हाथ की डाली देह का समूचा बोझ सम्हाल नहीं पायी । वह टूट पड़ी । कई डालियों से टकराती वह जमीन पर आ गई । गिरी तो चूतड़ के बल, लेकिन कलेजे दलक से उसका फेफड़ा फट गया । मुंह, नाक और कान से लहू निकलने लगा । राम कुंवर की ओर उसने एक बार पूरी निगाहें खोल कर देखा । जोर से एक हिचकी गई और उसके प्राण पखेरू उड़ गये ।

भावावेश में राम कुंवर उसकी देह पर झुक गया । शोर और चीख की आवाज सुन कर शराब के नशे में धुत्त लुचुई का बाप दौड़ा ।





—“अरे ! यह क्या !! उसके मुंह से निकला और हाथ के भाले को राम कुंवर के पेट में भोंक दिया । मरते समय राम कुंवर ने लुचुई को चिपक कर पकड़ लिया । दोनों की देह से बहते लहू से दोनों चेहरा लाल हो उठा ।

×            ×            ×

मांग में सिन्दूर भरे पगली बाग में दौड़ रही है । किलकारी मारती चैता का टेक बार-बार दुहराती गा रही है, --

एही ठैया भुलनी हेरायल हो रामा  
एही ठैया ।

लुचुई का बाप मुंह खोले, भौंचक, हाथ में भाला लिए शून्य में ताक रहा है ।

— — — — —



---

कमल खोजने में चला जंगल के उस पार ।  
 इधर अंधेरी रात है इधर पहाड़-पहाड़ ॥  
 पावों में छाले पड़े, मुँह में दुबता घवा ।  
 नाचो गाओ जिन्दगी सह दुनियाँ के दांव ॥  
 हाँक लगाते रो पड़ी नाव पड़ी उस पार ।  
 तट की सूनी रात में लगे हुए बटमार ॥  
 कुहरे क्यों गहरा गये सुम कर मेरे प्राण ।  
 नदी भीगती जा रही हिलते जाते प्राण ॥  
 सांझ पहर चौपाल में सुन अल्हा के तान ।  
 पीपल की छैया तफु कसके किसके प्राण ॥

---

तेतरी चन्दन सिंह के आँगन में एक फटी च टाई पर बैठा धूप से देह  
 सेंक रहा है । उसकी देह के धाव पर पट्टी बंधी हुई है । उसके दोनों  
 बच्चे सहमे-सिकुड़े तेतरी के पास बैठे हुए हैं । तेतरी की देह पर झुंड के  
 झुंड मक्खियाँ भिन भिना रही हैं । उसके दाहिने हाथ में मोच है ।  
 मक्खियों को बाये हाथ से हाँक रही है । दोनों बच्चे टुक-टुक उसके मुँह  
 की ओर ताक रहे हैं । आँगन का वातावरण शान्त है । चन्दन सिंह की  
 पत्नी रसोईघर में खाना बना रही है ।

खपरैल मकान के छप्पर पर एक काली बिल्ली बैठी आँगन की ओर  
 ताक रही है । आँगन के कोने में एक अमरुद का पेड़ है । अमरुद पीले  
 पीले पके हुए लटक रहे हैं । तीन-चार तोते अमरुद के पेड़ पर बैठे चोंच  
 से पके हुए अमरुद को कुतर रहे हैं । एक अमरुद थब्ब से जमोन पर



गिर जाता है। अमरूद के गिरने से दोनों बच्चे चंचल हो गये। छोटा बच्चा भट से उठ कर खड़ा हो गया। बड़ा बच्चा समझता है कि यह मालिक लोगों का घर है। बिना दिये हुए किसी चीज को छूने पर लोग बहुत मारते हैं। उसने छोटे का हाथ पकड़ कर बैठा दिया। वह सहम कर बैठ गया, लेकिन ललचाई नजर से अमरूद की ओर ताकने लगा। तेतरी बच्चे के मन को भांप गई। मां का मन उसने बच्चे की मुंह की ओर देखा। दोनों के चेहरे से दयनीयता टपक रही है।

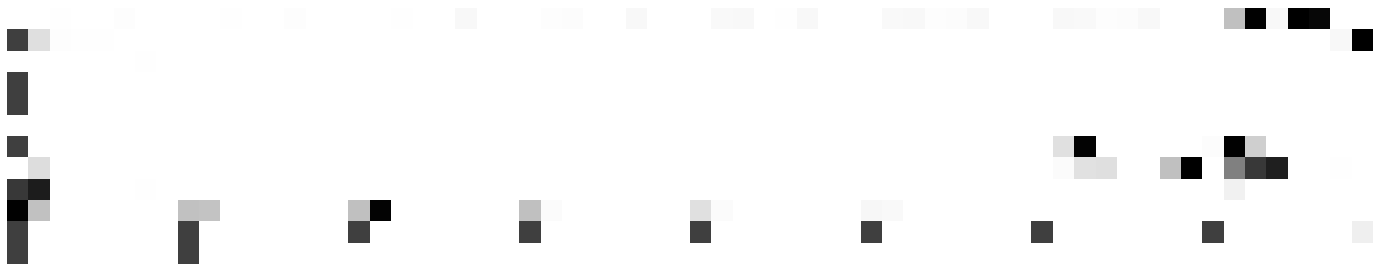
एक दिन पहले तेतरी के मन में प्रेम खरगोश के बच्चे-सा कुलेलें ले रहा था। उसकी आँखों की मोहकता, भोलेपन और सरलता से तेतरी के मन का कोना-कोना आल्हादित रहता था। उसके रोम-रोम में आनन्द की धारारें बिजली-सी प्रवाहीत होती थीं।

आज वह खरगोश का बच्चा मर गया। हिंसक पशुओं ने उस निरोह बच्चे को मार कर मन की धरती पर डाल दिया है। अब उस मन से लाश की बदबू आ रही है। तेतरी का मन विचित्र अवसाद और जनलेवा पीड़ा से त्रस्त है। अपना घर होता तो कम से कम बच्चे इस तरह सहमे सिकुड़े नहीं बैठते। छोटे बच्चे को अमरूद पड़ा देखकर रहा नहीं जाता वह उचक कर खड़ा हो जाना चाहता है। बड़ा बच्चा उसके हाथ को दबा कर बरजता है।

चन्दन सिंह की पत्नी रसोई घर से लोटे में पानी लेने के लिए आंगन में आती हैं। जमीन पर अमरूद पड़ा देख उसे उठा लिया। पेड़ के पास चन्दन सिंह की पत्नी जब पहुँची तो अमरूद कुतरते तोते फर्र कर पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गये। छोटा बच्चा अब भी ललचाती निगाह से अमरूद की ओर ताक रहा है। बच्चे को देखकर चन्दन सिंह की पत्नी को मोह आ गया।

“लो इधर आओ।” उसने दया मिश्रित बोली में बच्चे को बुलाया।

बच्चे ने मां के मुंह को और ताका। माना आदेश मांग रहा हो बच्चा समझ गया। मां अमरूद लेने को कह रही है। वह हुलसित होकर



## ११७ अंधा सूरज

अमरूद लेने दौड़ा ।

‘अरे, देह पर क्या चढ़ोगे । वही खड़ा रहो मैं देती हूँ ।’ चन्दन सिंह की पत्नी ने जरा झिड़क कर कहा । बच्चा जहाँ तक बढ़ा है वही” एक कर सहम-सा गया । चन्दन सिंह की पत्नी ने आगे बढ़ कर अमरूद उसके हाथ में थमा दिया । पके अमरूद की खुशबू से उसकी नाक आमोदित हो गयी । उसके मुँह में पानी आ गया ।

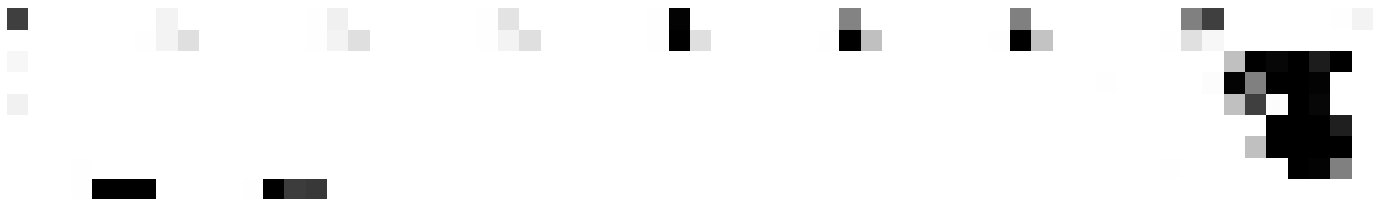
“दोनों आगे आध लेना ।” यह कहती हुई चन्दन सिंह की पत्नी आंगन से पानी लेकर रसोई घर की भीतर चली गयी ।

रात तेतरी को खाया नहीं गया । घर की मालकिन ने खाने के लिए बहुत कहा-सुना, लेकिन उसके काँठ के नीचे कौर नहीं गया । इस समय भूख से उसकी अंतड़ियाँ कुलबुला रहीं हैं । रसोई घर पकते हुए भात की सोधी महक से उसके मन की विषण्णता । पर त्वष्प के समानपंख पसारे जैसे जिजिविना उतर रही है चोट की पीड़ा, प्रेम का घोर अवसाद और भूख उसका से मन आग में पड़ी जिन्दा मछली के समान उछल-उछल कर तड़प रहा है ।

चन्दन सिंह अस्पताल गये हैं । चलते समय मां ने आदेश के स्वर में समझाया था । अपने आदमी जन के समान दवा-दारू कराना । गांव के किसी आदमी के कहने-सुनने में मत आना । इस गांव में आदमी थोड़े बसता है । सब कुक्कुर-सियार हैं । बस चले तो राह चलते आदमी की देह नोच लें । मां की वर्जना सुन कर चन्दन सिंह चुपचाप अस्पताल चले गये । माल-मवेशी देखने वाला दरवाजा पर कोई नहीं है । मां मेन दरवाजे पर बैठी अस्पताल के रास्ते की ओर ताक रही है ।

सरीफवा अस्पताल के वेड पर पड़ा है । चन्दन सिंह डाक्टर के टुबुल के सामने खड़े हैं । डाक्टर पूछ रहा है “यह वाक्या कैसे हुआ ?” चंदन सिंह समझने की कोशिश करते हैं ।

“छोटी जाति वालो को क्या कहा जाय ? दोनों में कुछ लटपट चल





रहा था। गाँव के लोगों को बुरा लगा। उसके बाद जो कुछ हुआ वह तो आप देख ही रहे हैं।

“तो पुलिस केस क्यों नहीं किया ? कोई किसी से मिलता-जुलता है तो गाँव के लोगों को कैसा आग्नेयकशन ? मैं कहता हूँ, आप पुलिस में केश दीजिये।” डाक्टर की बात का चन्दन सिंह जबाब नहीं दे पा रहे हैं।

सरीफवा बेड पर पड़ा तन्द्रा में स्वप्न देख रहा है। वह आसमान में उड़ते पीब और मवाद की नदी में गिर जाता है। वह बार-बार तैर कर घाट पर आने की कोशिश करता है। अरे, उसे लगता है जैसे उसके हाथ पाँव कस कर बाँध दिये गये हैं। उसके मुँह और नाक में मवाद घुसता चला जा रहा है। पीड़ा से वह कराह उठता है।

“ओरी मइया ! बगल में खड़ी नर्स उसके चेहरे पर भुक कर देखती है। डरो और घबड़ाओं मत सब ठीक हो जायेगा।” नर्स की आवाज सुनकर सरीफवा आँख खोलता है। अपादमस्तक बगुले के पंख के समान सफेद वस्त्र में लिपटी साक्षात् देवी की मूर्ति उसने खड़ी पाया। उसकी आँखी से अज्रस धाराओं में आंसू ढरकने लगे। रोओ मत सब ठीक हो जायेगा।’ सरीफवा फिर कराहता है—“अरे बप्पा।”

दूसरे कमरे में टेबुल पर भुकेँ कर डाक्टर कुछ लिख रहा है। सामने चिन्तित मुद्रा में चन्दन सिंह खड़े हैं। सिर उठाकर डाक्टर चन्दन सिंह से कहता है,—“यह पुर्जा रघुवर प्रसाद के दवाखाना में दे दीजियेगा। वह उचित कीयत पर सही दवा देता है। पुर्जा के सिरे पर ठाप दिया हुआ डा० क्षीर मोहन सेन, एम० बी० बी० एस०। उसके नीचे है रामपुर बाजार, सरकारी अस्पताल।

“कितना पैसा लगेगा डाक्टर साहब ?” चन्दन सिंह ने पुर्जा लेकर जिज्ञासा व्यक्त की। डाक्टर ने कुछ सोच कर कहा—“पचपन रुपये के करीब।”



‘ओह, मां ने अजीब जहमत में डाल दिया। घर में मेहरी पताह मांग रही होगी, और बाहर रुपये के सिर में भक्ख मार रहा हूँ।’

चन्दन सिंह के पास दूसरे रींगीं वाले आकर खड़े जो गये। डाक्टर उनसे बातें करने लगा। अच्छता-पछता कर चन्दन सिंह बाजार की ओर चल दिये।

×

×

×

लुचुई और राम कुंवर के आसपास लोगों की भीड़ इकट्ठी है। सबके चेहरे पर तनाव है। एक दूसरे का मुंह देखते हुए लोग भाँप रहे हैं कि सामने वाला आदमी क्या कहना चाहता है। बाग के पेड़ों पर रात में बसेरा लेने वाले पंछी अभी लौटे नहीं हैं, इसलिए चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई नहीं पड़ती।

भीड़ के सिर के ऊपर एक मादा काग कोयल के बच्चे को दाना चुगा रही है। मथुरा तिवारी इन तमाशे को देखकर हँसने लगते हैं। “देखों भगवान की लीला। कोयल के बच्चे को मादा काग पाल रही है। असल में कोयल और काग के बच्चे का एक रंग होता है। चालाक कोयल अपने अंडे को उसके खोते में चुपके से डाल देती और उसके अण्डे को जमीन पर गिरा देती है। अंडा फूटने पर बच्चा जब बड़ा होता है तो अपने आप उड़ जाता है।”

मथुरा तिवारी की बतकही पर सोभन सिंह रूपट हो जाते हैं।—  
“आप भी पंडिज्जी अजब आदमी हैं। खुरपी के ब्याह में हंसिये का गीत। कहां दो-दो लाश पड़ी है, कहा कोयल-काग की बात कहने। हद है।”

लुचुई के माई, बप्पा और मां एक ओर सहमे-सिकुड़े बैठे हैं। मृत्यु और भय के वातावरण में कुत्ते भी लड़ना भूल गये हैं। दूध डुलाते, कूंकू करते तीन चार कुत्ते भीड़ में इधर-उधर घुसे घूम रहे हैं।

पंचों के सामने हाथ जोड़कर लुचुई का भाई खड़ा हो गया।—  
“आप लोग माई-बाप हैं। हम लोग रैयत ठहरे। जो आज्ञा होगी उसके लिए हम लोग हाजिर हैं।”



“मारो स्साले को । दो-दो खून हो गया । अब हाथ जोड़े खड़ा है ।” मथुरा तिवारी ने डांट कर कहा ।

इन गरीबों पर क्यों गुस्सा भाड़ रहे हो पंडित ! मरने वाला तो चला गया । क्यों जिन्दा को जिवह करवाना चाहते हो ?” हरवंश सिंह ने तिवारी जी का बरजा ।

पंचों में आपस में बहुत देर तक बतगिज्जन होता रहा । अन्त में यह तय हुआ कि इन नटों को दोनों लाशें सौंप दी जाय ।

छबीला तिवारी बहुत खुराफाती आदमी है । अड़ गये । नहीं, पुलिस को खबर देनी चाहिए । आखिर कानून भी कोई चीज है । बिना शासन का तमाज चलता है । कहा गया है छोटे लतिआये बड़े बतिआये । इन लोगों का मन बढ़ गया है ।

“नहीं चुप रहोगे, कि हम लोग पहुँचे । बिना साप्ताहिक खुराक के महाराज जी शान्त नहीं रहते ।” नवनीही जवानों ने छबीला तिवारी को डांटा । यह सब कोई जानते हैं कि मुंह जोरी के लिए दसवें, पन्द्रहवें दिन तिवारी की ठुकाई होती है ।

अपना निर्णय सुनाकर पंच अपने-अपने घरों को चले गये । छबीला तिवारी भूंकते बोलते बघार में मटर की लत्तर और सरसों उखाड़ने चले । रहे गये लुचुई के मां-बाप, भाई और तीन-चार कुत्ते जो सहमे-सहमे डोल रहे हैं । बढ़िया मां पगली सी बुदबुदा रही है ।

×

×

×

ऊमस भरी गरमी के दिनों की शाम । आसमान में एक्के-दुक्के ही परिन्दे उड़ते नजर आते हैं । चारों ओर सूना-सूना रहा है । पिछले दस दिनों से मधुरिया नौटंकी वाले गांव में डेरा डाले हुए हैं । शिव मन्दिर के बगल की खाली जमीन में बांस गाड़कर और चौकी बिछाकर नौटंकी के लिए मंच बनाये हैं । शाम होते ही गांव का हर आदमी का ध्यान मंच की ओर उन्मुख हो जाता है ।

चन्दन सिंह बहू सुबह से ही निहोरा कर रही है । “माई जी मैं भी लीला देखने जाऊँगी । ना जाऊँगी ।”



## १२१ अंधा सूरज

“बहू का बच्चों की तरह हठ देखकर सास का मन पसीज गया।—  
“चलने को तो चलीगी, लेकिन तुम्हारा मरद जान जायेगा तो लहू पी जायेगा।” सास ने आशंका व्यक्त की।

“देखने के लिए उनकी आखें हैं, मेरी आखें नहीं हैं, क्या?” बहू ने जैसे ठुनक कर कहा।

“चलने को चलो, पर अपने मरद को खुद बूझना।” सास ने धमकी देकर बहू के मन का टोह लिया।

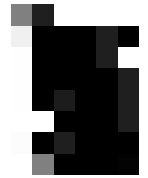
बहू ने मुस्कुरा कर कहा, —“अच्छा देख लूंगी उन्हें।”

तेतरी दोनों बच्चों को लिये चुपचाप सास बहू की बातें सुन रही है। दोनों बच्चे खेलने के लिए बाहर जाने को आतुर हैं। मां जैसे कबूतर अंडे को छाप कर सेती है वैसे दोनों बच्चों को आंचल से छिपाये रहना चाहती है। बाहर बड़े लोगों के बच्चे खेलते हैं, मारपीट कर देंगे तो कोई मददगार नहीं मिलेगा। उल्टे चार गाली-बात मिलेगी। “तेतरी सोचकर धीरे से डपट कर बैठा लेती है। दोनों बच्चे चिड़ियों सा पंख फड़फड़ाकर उड़ने को आतुर हैं। खुशी में गीली बहू रसोईघर में गुनगुना रही है,—

साम बंसिया बजाइब हो रउरे संगवां  
साम मुरली बजाइब हो रउरे संगवां  
आरे राउर मटका अपाने सिर लेइब  
अपना ही केसिया के चोटिया गुहाइब।  
हो रउरे संगवां।

डिम-डिम डराक.....तिर-तिर-तिर .....ध्रांग । नगाड़े की आवाज सुनते ही सबके कान खड़े हो गये।

आज जानकी स्वयंवर है। लच्छन बाबा सांभ से ही जाने के लिए चंचल हो रहे हैं। जैसे ही सड़क पार कर अपने दरवाजे की ओर बढ़े सड़क पर खेलते हुए लड़कों का गेंद उनके सिर पर धब्ब से गिरा। दो:





धोबिनें गदहा पर गन्दे कपड़े लादे आपस में अपने परिवार की गिला शिकायत करती गांव से निकल रहीं हैं। सिर पर गेन्द की चोट लगते ही लच्छन बाबा ने गालियां देते हुए मुंह फेरा। धोबिनों से रहा नहीं गया। मुंह में आंचल लगा कर ठि-ठि हँसने लगीं। बाबा उन धोबिनों पर बरस पड़े।—“तुम्हारी.....यह.....वह छिनाल।” धोबिनें और जोर से हँस पड़ीं। बाबा के मुंह से गाली फुलझड़ी सी भरने लगी।

अंधेरा बढ़ता जा रहा है। नगाड़े के ताल पर नाचने वाले का घुंघुरू और हारमोनियम के कीं-कीं से घर-घर के लोग हड़बड़ाये हुए हैं, कैसे जल्दी पहुँचा जाय। धोबिनों की हँसी से लच्छन बाबा का मन खराब हो गया।—“ओह, कुछ देर बाद राम-सीता का दर्शन करना है। दोनों छिनाल कहां से मरने आ गयी।”

आठ दस औरते भुंड बनाकर राम लीला देखने आ रहीं हैं। गांव की औरतों का मुंह सिर्फ सोने के समय बंद होता है।

सबसे आगे अस्सी वर्षीया धांगड़ दादी लाठी टेकती बकरी सी छुट-छुट चल रहीं हैं। चन्दन सिंह बहू बहुत हंसोड़ और रसिया मिजाज की औरत है। खिल-खिला कर हँस पड़ी।—“बुढ़िया को देखो न, जर जुवान को छोड़ कर टुगुर-डुगुर दौड़ती जा रही हैं।”

“तो ए, अभागी सब, मैं अपने पांव चलती हूँ, तुम लोगों का क्या?” दादी ने छुट्टे मुंह गाली दी।—“हे दादी! गाली मत दो! बूढ़ पुरान की गाली लग जाती है।” जतन बहू ने टोका।

औरत अलग मरद अलग। सबने अपनी-अपनी जगह पकड़ ली। सब शान्त बैठ गये। लेकिन अभी तक बच्चों का चिल्ला पों बन्द नहीं हुआ है।

“बच्चो, शान्ति से बैठ कर सुनो, नहीं तो घर जाकर स्कूल का सबक याद करो, या जाकर सोओ। लीला शुरू होने वाली है।” मंडली मालिक ने हाथ उठाकर मंच से कहा। बच्चे जहां के तहां दबक कर बैठ मये। मंच का काला पर्दा गिर गया।



औरतों के दल में कुलबुलाहट मची हुई है। धांगड़ दादी को दिखाई नहीं पड़ता। वह लीलार के सामने सूप के समान हाथ करके मंच की ओर ताक रही हैं। चन्दन सिंह बहू को देख कर रहा नहीं गया।—“ए दादी, दुरबीन कितने में खरीदा है। हमको भी उससे देखने दोगी। यह कह कर वह किलकारी मार कर हंस पड़ी। दादी को तो आग नहीं की जले।

“ए निपूती सब, चुप रहती हैं सब कि नहीं।” दादी का मुंह जहर हो गया।

लच्छन बाबा ठीक मंच के बगल में बैठते हैं। भक्तिभाव से हाथ जोड़े, टक लगाये मंच की ओर ताक रहे हैं। छोकरों को मजाक सूझा। एक बड़ा-सा मेढ़क उठाकर उनके सिर पर फेंक दिया। मेढ़क छुल्ल से उनके सिर पर मूतकर मंच पर छलांग गया। बाबा हनुमान जी के समान लाठी उठाकर तरंग बांध दिये। दो-चार लोग दौड़कर लाठी नहीं थाम लेते तो किसी का माथा चकनाचूर हो जाता। लोगों ने किसी तरह हल्ला गुल्ला शान्त किया। छोकरे दूर हटा दिये गये। मंच का काला पर्दा उठा।

राम-लक्ष्मण जनकपुर की फुलवारी देखने निकलें हैं। दोनों के सिर पर मोरमुकुट कमर में पीत काछनी, कंधे पर धनुष बाण ललाट पर गोरोचन चन्दन / सांवले राम, गोरे लक्ष्मण—अपूर्व दो मूर्तियों मंच पर अवतरित हुई हैं। पार्श्व से स्वर उभरता है,

“(लता भवन ते प्रकट भई तेहि अवसर दोऊ भाय।)”

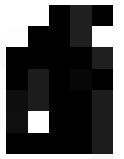
सामने सखियों के मध्य चम्पई रंग की सीता रंग-विरंगे फूलों के मध्य दृष्टिगत होती है। फिर पार्श्व में स्वर उभरता है,—

—“सुन्दरता कह सुन्दर करई, छविगृह दीप शिखा जनु बरई।”

मंच के दृश्य को देखकर लच्छन बाबा की आँखों में आँसू भर आते हैं। उनके रोये भरभरा उठते हैं।

—“धन्न हो, धन्न हो !” कह कर गद्गदायमान हो जाते हैं।

तैतरी अपने दोनों बच्चों को लिए आँगन में पड़ी हुई है। जेठ की



दोपहरी के समान उसकी आंखें भावहीन, सूनी और अश्रुविहीन हैं। इस समय तेतरी की आंखों में कोई सपना नहीं तिरता। सौन्दर्य की समूची तितलियों के पंख उसकी आंखों के पास आ कर टूट गये हैं। उसकी दृष्टि आदिमकाल के सुरंग में बैठे किसी भयानक दरिन्दे की ओर लगी है। वह कांप भी नहीं पाती है न भयभीत हो पाती है। प्राणहीन-सी निश्चेष्ट पड़ी है।

आसमान से एकतारा टूटा। रोगनी की पतली लकीर आधे आसमान को नाप कर लुप्त हो गई। उसके बाद सब कुछ फीका-फीका और आसमान निचाट, सूना हो गया।

×

×

×

सवा महीना के बाद राम लीला की आज पूर्णाहुति है। तेतरी की देह की दरद-बतथा खतम हो गई। सरीफवा अस्पताल से लौटकर अपने मालिक का हल चलाने लगा।

हर दरवाजे पर राम लीला की चर्चा है। गांव के बच्चे दिन-दिन भर फट्ठे और रस्सी से तीर धनुस और कागज का मुकुट बनाकर सड़कों पर राम लीला का खेल-खेल रहे हैं। राम का रूप तो चन्दन सिंह की बहू की आंखों में बस गया है। हूबहू अलसी के फूलों जैसा देह का रंग। एक ई हैं, कि देखकर उबकाई आती है। उह, ओठ बिचका कर लम्बी सांस लेकर घर के काम में मन लगा दिया।

तेतरी के बच्चों के पंख खुल गये हैं। वे बाग-बगीचे में तितली के समान उड़ रहे हैं। चार-पांच जवान लड़कियां चन्दन सिंह के आंगन में पहुँची। उनकी खिलखिलाहट और चूड़ियों के टुन्-टन् सुनकर चन्दन सिंह की बहू घर से बाहर निकली।

— “क्यों भउजी, रामजी इसके दुलहे के समान नहीं लगते हैं ? उह, बात नहीं सुनती है सब। खाक दांत चियाअरती रहती है। देखती हो न भउजी।” सिगरिया रमरतिया को दिखाकर कह रही है। रमरतिया

■

■

■

■

■

■

■

■

■

■

१२५ अंधा सूरज

बेचारी लजाई हुई है ।

— “क्यों बबुनी लजाती क्यों हो, अप्पन दुलहा किसको पसन्द नहीं होता ?” चन्दन सिंह की बहू ने टिटकारी भरी ।

तेतरी दरवाजा बुहारती आंगन की बात कान लगाये सुन रही है । उसने भी एक दुल्हे को पसन्द किया था । लोग क्यों उस पर नाराज हो गये थे । उसकी इच्छा होती है कि वह बैठकर रोये । इस बखत रोने का मौका नहीं है—उसे दरवाजा बुहारना है ।

सिंगरिया इस समय इतनी हुलस में है कि आंगन में नाचकर रात के सुने राम लीला के गीत गाने लगी—

“गाइबि ए भउजी गाइबि गाइ सुनाइबि  
का देबे हमरा के नेग लहसि घरे जाइबि...”

(ए, भौजी मैं गाऊँगी और गाकर सुनाऊँगी । किन्तु उस गाने के बदले में मुझे नेग के रूप में या दोगी, जिसे पा कर मैं प्रसन्न होकर अपने घर जाऊँगी ।)”

चन्दन सिंह मां को पुकारते हुए आंगन में प्रवेश करते हैं । सब लड़कियाँ चुप हो गई और एक ओर सटक कर खड़ी हो गई । खंखार कर पत्नी को अपनी ओर उन्मुख कर उन्होंने कहा । “बाल्टी लाना ।”

शिवालय के पास आज जैसे मेला लगा है । गांव के उत्साही नौजवान भाड़-बुहारु कर रहे हैं । कोई अशोक के पत्ते काट कर ला रहा है कोई बन्दनवार बनाने के लिए कैंची से लाल-पीले कागज काट-कर मूँज की रस्सी में चिपका रहा है । लाल कपड़े पर लिखकर गेट पर टांग दिया गया है—स्वागतम्” । मंडली के मालिक को जरा भी फुर्सत नहीं । सबके मुंह धरे चलते हैं । झुंड के झुंड छोटे-छोटे बच्चे किलोले करते भाग-दौड़ कर रहे हैं ।

धीरे-धीरे दिन घटता जा रहा है, और लोगों में हलचल और





हड़बड़ाहट बढ़ती जा रही है। गदबेला आने में अभी कुछ देर है, लेकिन हलवाहे, चरवाहे दिन रहते घर लौट आये। सब को नहा-धोकर पूर्णाहुति में शामिल होना है।

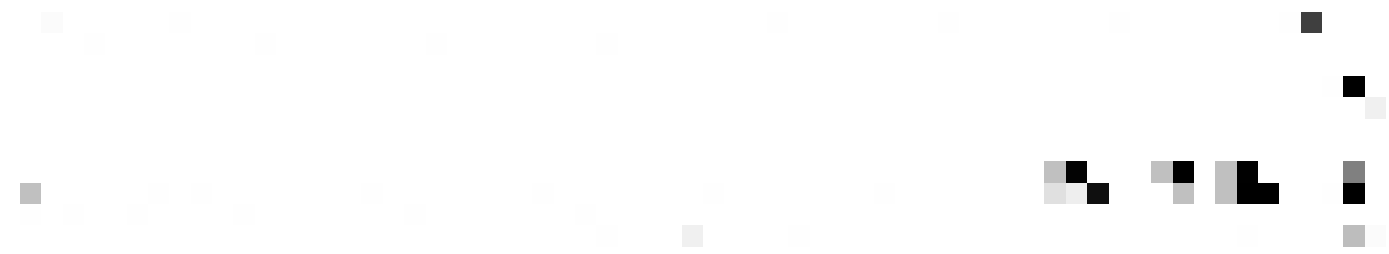
रात होते ही मंवं पर स्वर्ग उतर आया। राम जानकी सिंहासन पर विराजमान हैं। हनुमानजी राम के पांवों के पास बैठे हैं।

दर्शकों के बीच हलचल है। दूर-दूर के लोग रामलीला देखने आये हैं। बलदेव पहलवान हाथ में फरसा लिए दल-बल के साथ रामलीला में भगवान राम के दर्शन करने आये हैं। पीछे से किसी ने एक छुछुन्दर को पकड़ कर बलदेव पहलवान के दल के बीच फेंक दिया - उनके दल में एक खड़बड़ाहट हो गई। बलदेव पहलवान फरसा लेकर तन गये। यह कहो कि इलाके के बड़े लोग सामने आ गये। बलदेव पहलवान के सामने सबने हाथ जोड़ दिया —छोड़ों पहलवान ! यह भगवान का दरबार है। यहां किरोध करना ठीक नहीं। किरोध शान्त करो !'

जताजती दल में औरतों का कच्-कच् बन्द नहीं होता। छोकरियाँ चाँदी की घंटी सी टुन्-टुन् आवाज में बोलती हैं। माँ की गोद में अधकगरे बच्चे रह-रह कर रो उठते हैं।

—'सज्जनों माँ और बहनों ! भगवान का दरबार लगा है। जिसकी जो श्रद्धा-भक्ति है, भगवान के चरणी में अर्पण करे, लीला पार्टी के अधिकारी जी निवेदन करते हैं।

एक-एक कर लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं। यह क्रम आधी रात तक चलता रहा।



---

यही से आदमी शुरू होता है ।  
 घास यही से हरे समन्दर सी  
 लहराती है । और होता है जंगल का  
 हरा आकाश होने का इन्तजार ।

×                      ×                      ×                      ×

—“तुमने कभी घास को सूँघा है ?”  
 —“मैंने तो बचपन में सूँघा था  
 और सपने देखने लगा था,  
 आदमी होने का सपना !...।

---

रामपुर बाजार में बड़ी चर्चा है । पगली गर्भवती हो गई ।  
 —“अरे पगली गर्भवती हो गई !” सबने दातों से जीभ दबा ली ।  
 सोनार पट्टी की ओरतें एक-एक कर देखने आती हैं । शर्म से सबका सिर  
 झुका हुआ है । नकटा पर किसी की नजर नहीं है ।

एक दिन असमय में आकाश में बादल छा गये । दिन रहते धुप्पू  
 अंधेरा बढ़ने लगा । सड़क के किनारे लगी दुकानें पहले ही उठ गयीं ।  
 ठंडी-ठंडी हवा चलने से सबके रोओं में सुरसुराहट सी होने लगी । आज  
 पगली बहुत खुश है । उसको मांग में किसी ने लाल टुह-टुह सिन्दूर भर  
 दिया है । आँखों में काजल कर नाक में पीतल का नकबेसर पहना दिया  
 है । वाह रे, पगली । आज तो सोलह सिंगार करके कनेहबर में पति से  
 मिलने चली है ।



लोगों ने देखा है। पगली सोनारपट्टी से अभी आयी है। अरे, उसके पांव को किसी ने महावर से रंग दिया है। सोनारपट्टी की छोकरियाँ ताली बजा-बजा कर गा रही हैं,—

—“एक त पातरि बेटी दुसरे सुकुआरि  
कइसे बेटी महवू हो अगिनी के आंच  
तोहरे लेखे आहो आमा अगिनी के आंच  
हमरे लेखे ऊहे अंचवा शीतल बतारि ।

(पति के मरने पर स्त्री सती होना चाहती है। मां उसे समझाती है कि हे बेटी, तुम दुबली हो, सुकोमल हो आग की आंच कैसे सह पाओगी। बेटी जवाब देती है कि तुम्हारे लिए वह आग की आंच है। मेरे लिए शीतल बयार है।)

पगली आज सती होने जा रही है। नकटा आग की आंच है। दाह की दुकान से दो पाव चढ़ा लिया है। उसकी आँखों में सुरूर है। रंग-बिरंगे पंखों वाली तितलियाँ उसके सामने तैर रही हैं। हवा में अतर गुलाबी महक उसे महसूस हो रही है। चाह की दुकान पर यारों के साथ उसने गांजा के कई दम मारे हैं। कल्ले में पान दबाकर पगली के आस-पास भोरे सा मड़ला रहा है। रह-रह कर उसके होठों पर विकृत हंसी खेल जाती है।

बच्चे के समान खुश होकर पगली बाजार के एक कोने से दूसरे कोने घूम रही है। कुबड़ा नीम की जड़ के पास पुआल बिखरा है। रात को पगली यहीं सोती है। साथ देने वाले तीन-चार कुत्ते-कुतिया और दो मरीयल गायें होती हैं। रोशनी आकाश के तारे देते हैं या नीम की पत्तियों पर उड़ने वाले असंख्य जुगनू।

अब आकाश से धीरे-धीरे रात उतर रही है। बाजार के घरों, दुकानों के फाटक, दरवाजे एक-एक कर बंद होते जा रहे हैं। किसी विशाल पंखी की तरह अपनी छाया से आरमान को ढकती हुई रात



## १२ : अंधा सूरज

धरती पर पैलाती जा रही है। बाजार में गायें और बैल टहल रहे हैं। जोर-जोर से बोलते हुए कुत्ते गली के अंधकार में चुप हो गये हैं। पुलिस मैन सीटी बजाते इस ओर से उस ओर गश्त कर रहे हैं।

चौराहे से पश्चिम की सड़क की ओर जाते हुए दो पुलिस वाले आपस में बतियाते हैं, — “यार, आज तो पगली बड़ी बनी-ठनी है। इच्छा करती है, आज की रात इसी पर बितायी जाय।

पहले की इस बात पर दूसरा ठठाकर हँसता है। — “अबे रसाले दिवरी बाजार में जाकर एक बार-आंड-गांड पका लाये थे तो मैंने उस नुक्कड़ वाले जर्जर से इलाज करा कर ठीक कराया था। कैसे रात-दिन आंह-ऊंह, माय-बाप चिल्ला रहा था। क्या उस दिन को भूल गये ?”

दोनों की बतकही रात के अंधेरे में डूब गयी। काले समन्दर में भरी नाव डूबने के बाद जो सन्नाटा छा जाता है,— वैसा ही सब कुछ चुपचाप और शान्त है।

हवा के चलने से नीम की पत्तियां सरासरा रही हैं। बादलों की चादर को हटाकर कभी-कभी एक-दो तारे झांक कर लुप्त हो जाते हैं। चीथड़े को ओढ़कर पगली शून्य की ओर ताक रही है। दूर-अंधकार के पार एक गुलथुल, गोरा चिट्ठा बालक गंगा की लहरों पर कांपती, दौड़ती नावें, गोबर और पीली मिट्टी से लिपा-पुता छोटा सा घर, फसलों से लदे खेत के दृश्य दृष्टिपथ पर आये और ओझल हो गये।

नकटा समझा गया, कहीं कोई नहीं है। इस समय पगली के पास पहुँचन निरापद है। वह थाह-थाह कर आगे पांव बढ़ा रहा है। दिन में जो मादकता उसके मन-प्राणों को घेरे थी, उसकी जगह भय और अशंका ने उसके मन को दबोच लिया है। उसके कंठ में कांटे उग आये हैं। मुँह के थूक जैसे सूख से गये हैं। हाथ-पांव कांप रहे हैं।

पगली के बगल में तीनों-चारों कुत्ते एक-दूसरे की देह पर सिर रखे निर्मय सोये हैं। गायें और बैल बैठे हुए, आँखें बंद किये, जुगाली कर रहे हैं। घरों के दरवाजों पर फूल की जो लत्तरे लगी हैं, उसके फूलों की





खुशबू हवा पर तैर रहीं है। बाजार की दुकानों का जहां अन्त होता है, उसके किनारे एक पतली नदी बहती है। इस समय पानी उसकी तली तक पहुँच गई है। समूची नदी भांग के भाड़दार पौदों और कांटेदार घास से ढंकी है। भांग की पत्तियों, कई-कई तरह की घासों की गंध हवा में तैर रही है। नदी पर पुलिया है। पुल के उस पार ताड़ीखाना, दारू की भट्टी और बगल में एक चाय की दुकान है। ताड़ी और दारू के नशे में भूमते अभी भी आठ-दस जन अल्ल-बल्ल बकते हुए एक दूसरे के साथ गाली-गलोज कर रहे हैं।

जोर का हवा का एक झोका आया, और झर्र से वर्षों की बूँदें टप्-टप् करके जमीन पर बरस पड़ी। दो महीने गर्मी के ताप से झुलसी धरती पर बारिश की फुहार से मिट्टी की सोधी महंका वायुमंडल को आमोदित कर रहीं हैं।

दिन में जो नकटा पगली के काल्पनिक रोमांस में गर्क अपने रोम-रोम को वायुयान बनाकर चन्द्र और सूर्यलोक का सफर कर रहा था, अब, जब मिलन की घड़ी करीब आ गई तो कल्पना के वायुयान के सारे चक्के जाम हो गये। उसकी दोनों हक्षेलियां और पाँवों की उंगलियाँ पसीने में डूब गयी है।

चौराहे पर पुलिस ने तेज आवाज में सीटी बजायी। नेपाली पहचूये ने चबूतरे पर लाठी पटक कर सबको जागते रहने का आह्वान किया।

बगल के गांव में बारात आने वाली है। औरतें गीत गा रहीं हैं। उनकी स्वर-लहरी यहां तक आ रही है।

—“दांत तोहार देखली दुलहा चमके बिजुलिया

ओठ तोहार कतरल पान ए।

अतना सुस्त रउरा बाड़े ए दुलहा

कवना विधि रहीले कुआंर ए।

तुम्हारे दांत बिजली के समान चमक रहे हैं। ओठ साफ सुथरे किये

□ □ □ □

□

■ ■ ■ ■ ■ ■ ■ ■

□

□

■ ■

□ ■

□

□

□

□

□

## १३१ अंधा सूरज

गये कतरे पान हैं। इतनी सुन्दरता आप में है। फिर आय क्यारें-  
क्यों हैं।

नकटा ने जीभ को होठों पर फेर कर तर किया। देह को मरोड़कर पट्-पट् की आवाज की और एक लम्बी जम्हुआई लेकर थोड़ा हल्कापन और राहत महसूस की। नकटा एक ऐसे सुख की ओर बढ़ रहा है, जिससे उसकी जान सांसत में पड़ी-सी लग रही है, उससे वह विरत होना चाहता है, लेकिन उसकी ललक उसे चुम्बक के समान खींचती चली जा रही है।

आसमान में तेज बिजली कौंधी। घटा में घोर गर्जन हुआ। कुत्ते डर कर भूंकने लगे। बैल और गाय हड़बड़ा कर उठ गये। बिजली की कौंध में नकटा ने देखा, पगली नीम की जड़ से सटी जैसे उसी की ओर देख रही है।

नदी से सियारों की हुँआ-हुँआ की आवाज आयी। बगल के गांव की औरतों का गीत अभी भी यहां तक तैरता आ रहा है, —

—“गवना कराह पिया घर बइठइलें  
कि अपने चलेलें परदेश हो विदेसिया  
मचिया बइठलि धनिया मन-मन सुमिरेली  
भुइयां लोटेली लामी केस रे विदेसिया।”

(गौना कराकर पति ने अपनी प्रिया को घर बैठा दिया और अपने परदेश चले गये। मचिये पर बैठी हुई उसकी प्यारी पत्नी मन ही मन उसे याद कर रही है और उस वियोगिनी के लम्बे बाल भूमि पर लोट रहे हैं।)

नकटा के पांव जैसे मन भर के हो गये हैं। उसके कल्ले जकड़ गये हैं। बांहों की मांसपेशियाँ पथरा-सी गयी हैं। फिर भी वह पांव आगे बढ़ाता जा रहा है अब चन्द कदमों का फासला है। सुख के क्षण कितने छोटे



होते हैं ? लेकिन उसे पाने में नकटा को 'ऐसा लग रहा है जैसे वह हिमालय पहाड़ पर चढ़ रहा है ।

घंटा के गरज के साथ फिर बिजली कौंधी । पानी की फुहार लिए हवा का हरहराता भोंका आया । भीगने से बचने के क्रम में नकटा पगली से सटकर खड़ा हो गया । उसके मुँह खुल गये । दोनों हाथ अना-साय शून्य में फैल गये । रोम-रोम में चिटियां रेंगने लगीं ।

.....इस सरोवर के लिये कमल की पंखुड़ियों पर वर्षा की बून्दें चोट पर चोट कर रहीं हैं । डंठल थर-थर कांप रहे हैं । वर्षा से डबडबायी घंटा के भीतर चांद छिपा है । अब मुझे उसकी चांदनी का सुख दो.....चांद को हथेलियों में थाम कमल की पंखुड़ियों पर लेट कर रात भर वर्षों में भीगना चाहता हूँ ।.....लेकिन नकटा की देह की चिटियां लहू के ज्वार में अब तैर रहीं.....तैर रहीं हैं ।

+

+

+

पूरे दो महीने बाद रामपुर बाजार में कानाफूसी शुरू हुई । अफवाहों के पर होते हैं । वे मन से भी तेज उड़ते हैं ।

“ओह, घोर कलिकाल आ गया है । शेषनाग का मस्तक इस पाप के बोझ को ढोती धरती को कैसे अब तक सम्हाले हुए है ?” पुजारी जो चुटिया फटकारते हुए, चटर-चटर खड़ाऊ बजाते बड़बड़ाते जा रहे हैं । सामने धर्मशाला है । उसके वगल में मन्दिर है । तीन साधु धूनी रमाये, बैठे गांजा पी रहे हैं ।

“ओम् बम भोले शंकर दुसमन को तंग कर ।”

आमद को बढ़ाकर खरचे को कम कर ॥”

एक साधु शंकर को सुमिरन कर गांजी की लम्बी टान मारता है । झुक घुटक कर हुर्र करता हुआ मुँह से धुआ उगलता बाजार की अट्टालिकाओं की ओर लाल-लाल आंखें किये ताकता है । एक घर की दीवार को फाड़कर पीपल का पेड़ उगा है, जिस पर आमने सामने बैठे

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

दो बन्दर अपनी भाषा में खीं खीं कर पता नहीं क्या बतिया रहे हैं ? अचानक दोनों छलांग लगाकर सामने की छत पर चढ़ जाते हैं। एक दुबली-पतली गोरा-सी बूढ़ी औरत उन दोनों के सामने पर जाती है। वह भय से पीली पड़ती जा रही है।

साधुओं की धूनी के बगल में एक त्रिशूल गड़ा है। जिसके सिरे पर लाल कपड़ा बंधा है। धूनी के खोदने से चिट्-चिट् कर चिनगारियां उड़ रहीं हैं। गांजे का दम मारकर पहला साधु दूसरे साधु की ओर चिलम बढ़ाता है।

“ओम बम भोले दान्ती कही बज्र पड़े कहीं पानी”—

कहते साधु टान मारता है। उसकी नजरों के सामने लाल पीली तितलियां उड़ने लगती हैं। खडाऊ पर चटर-चटर करते पुजारी जी मन्दिर की ओर ही बढ़ते जा रहे हैं।—“घोर कलिकाल आ गया। ओह” यह वाक्य उनके मुंह से अस्फुट ध्वनि में निकल रहा है।

“कहो राम जी गांजा ठीक बना था न !” पहले साधु ने बगल में बैठे दड़ियल साधु से पूछा।

“गांजा में तम्बाकू ज्यादा पड़ गया था। दम मारने में खांसी उभर गयी थी। अब भी गले में खसखसाहट है।” दूसरे साधु ने चिमटे से धूनी की आग को खोदा। चिन्-चिन कर नन्हीं चिनगारियां उड़ने लगीं।

एक हाथ पानी भरा लोटा और दूसरे हाथ में पूजा का थाल लिए पुजारी जी साधुओं के सामने खड़े हो गये। अपने ललाट पर संसार भर की चिन्ता का सोच दिखाने का भाव बनाते हुए पुजारी जी ने कहा,— घोर कलिकाल आ गया। बाबा, कुछ सुना आपने। इस बाजार में घोर अनर्थ हो रहा है। उस पगली को पता नहीं, कैसे हमल रह गया है। किस पापी ने मुंह काना किया ? राम ! राम !! घोर कलिकाल आ गया।”

पहला साधु दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए पुजारी जी की ओर ताकने लगा। गांजे के तशे में उसकी आंखें लाल ओढ़ल के फूल जैसी हो गईं





है। पुजारी जी की बात पर उसने कुछ कहा नहीं, लाल-लाल आंखों से शून्य की ओर ताकने लगा।

अचानक बाजार के चौरास्ते की ओर से शोर सुनायी पड़ा। तीन-चार कुत्ते भूंकते हुए मन्दिर की ओर भगे। दुकानों में सौदा-सुलुफ बेचते खरीदते दुकानदार और गांहुक चौक कर चौरास्ता की ओर ताकने लगे। लोगों ने देखा,—करीब चालिस-पचास आदमियों की भीड़ हाथों में लाल झंडे लिए नारे लगाते इधर ही बढ़ रही है। “हर जोर जुलुम के टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है। इन्कलाब जिन्दाबाद.....।”

जुलूस में अधिकांश आदमियों के सिरों पर लाल टोपी है। आगे वाला आदमी नारा लगा रहा है।

“इन हाथों को काम दो, नहीं तो नींद हराम करेंगे।”

नारे देते वक्त उसके गले की नशे फूल-फूल जाती हैं। मुंह से फेन जैसा निकल रहा है। सारी भीड़ मन्दिर के बाद के पुल पार कर खाली मैदान में इकट्ठी हो गई।

भीड़ के सामने चौकी पर चार-पांच आदमी बैठ गये।

चौकी पर बैठे आदमियों में एक आदमी उठकर माइक के सामने खड़ा हुआ। “मैं कामरेड गजाधर राम को सभापति मनोनित करता हूँ। “माइक से उसके हटते ही दूसरा आदमी माइक के पास जाकर बोला—“इसका अनुमोदन करता हूँ।”

कामरेड गजाधर राम अत्यन्त गम्भीर मुद्रा बनाकर उठते हैं। एक हाथ से सिर से टोपी उतार कर अपना गंजा सिर सहलाते हैं। फिर टोपी पहने लेते हैं। धीरे धीरे माइक के पास जाकर कामरेड गजाधर माइक पकड़ लेते हैं। खंखार कर गला साफ करते हैं,—“भाइयों और बहनों! साम्यवाद की बुराई करने वाले इस बात को क्यों भूल जाते हैं, कि अगर साम्यवाद में खामी है तो दुनिया की तीन चौथाई जन संख्या क्यों उसके साये में अपने भविष्य का निर्माण कर रही है? क्यों, विश्व



की बाकी जनसंख्या सरमायेदारों की लादी हुई गुलामी के तौक को फेंक देने के लिए संघर्ष कर रही है।”

गजाधर जी का भाषण पता नहीं कितनी देर तक चलता, तब तक तीन पुलिस के जवान खाकी वर्दी में उनके अगल-बगल खड़े हो गये।—  
“स्साब आपके नाम वारंट है।”

उधर, पब्लिक जिधर बैठी है, भगदड़ मच गई। बाहर से किसी ने पत्थर फेंक दिया। एक-दो लोगों का सिर फूट गया। किसी ने जोर से आवाज दी—“भागों और समूची जनता भाग खड़ी हुई। जहां, कुछ देर पहले हजारों लोग जमा थे, अब वहां कोई नहीं है। सिर्फ तीन-चार कुत्ते हैं, जो आपस में कटुम-कुट्टी कर रहे हैं।

मन्दिर में कई देवताओं की मूर्तियां हैं। मन्दिर में घुसने पर सबसे पहले हनुमान जी खड़े मिलते हैं। कंधे पर गदा थामे हुए, एक हाथ से पहाड़ उठाये हुए, आवेग और वीरता की मुद्रा में देखकर भक्तजनों का हाथ श्रद्धा से झुड़ जाता है।

पुजारी जी अच्छी तरह से जानते हैं कि यह मन्दिर वेश्या-वृत्ति से बना है।

एक दिन की बात में पुजारी जी से राम प्रसाद सेठ के प्रतिद्वन्दी ने कहा,—“पुजारी जी आप जानते हैं। जिस मन्दिर में आप रोज घंटी बजाते हैं और मालभोग का प्रसाद चढ़ाते हैं, वह राम परसदवा की मां के कुकर्म से बना है। जब वह तीन-चार बरस का नादान बालक था, तभी उसका बाप मर गया और मां उसे छोड़कर कोठे पर बैठ गयी। जब राम परसदवा कुछ बड़ा हुआ तो एक साइकिल की दुकान पर पम्पचर साटने का काम करने लगा।

वेश्यावृत्ति से उसकी मां ने लाखों रुपये अब अर्जित किये। जब तक जिन्दा रही, बेटे से सम्पर्क स्थापित नहीं किया। जब मरने लगी, सारी सम्पत्ति बेटे को बुलाकर सौंप दिया। उसी पैसे से उसने यह मन्दिर



बनाया, टायर की एजेन्सी ली और आज बहुत बड़ा सेठ बना फिर रहा है। पुजारी जी ! दौलत की रोशनी के पीछे कितना अंधकार छिपा है, उसे आप साधारण चमड़ी की आँखों से नहीं देख सकते। हृदय की आँखें खोलिए और देखिये कि धर्म अधर्म है या अधर्म धर्म है।”

पैसे वालों की रोटी पर पलने वाले पुजारी जी जवाब नहीं दे पाये। आँखें फाड़े, अचरज की मुद्रा किये, बातें सुनते रहे। वे जानते हैं कि कन्दिर का दरवाजा जिस दिन बन्द हो जायेगा उस दिन धर्म का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, लेकिन उनके परिवार का अहित हो जायेगा।

आज सुबह से ही पगली बाजार की सड़कों पर अधनंगी घूम रही है। अब कोई औरत उसकी मांग में सिन्दूर नहीं भरती, न लाल पीली साड़ी पहना कर पांवों में महावर लगाती है। उसकी ओर ताक कर हर जवान औरत को लाज लगती है।

हाई स्कूल में टिफिन होने पर सारे छात्र बाजार चले आते हैं। अमरुद और बेर के रखवाले इस वक्त अपनी इयूटी पर सर्तक हो जाते हैं। खोमवे वाले, आइस क्रिम के ठेले वाजों के इर्द-गिर्द छात्रों की भीड़ जुम जाती है।

दो छात्र बतियाते बाजार के बीचों बीच से गुजर रहे हैं। --“यार, अगले एकजास में फर्स्ट नहीं हो पाऊंगा। मेथ की बिल्कुल तैयारी नहीं हो पा रही है और साइन्स का सबजेक्स जानों कि चौपट ही है। “रमेश ने दीना से कहा।

---“मेरी हालत कौन अच्छी है। पापा से ट्यूशन को कहता हूँ तो रंज हो जाते हैं। कहते हैं, ‘साल भर पढ़ाई क्या करते हो? इससे अच्छा है कि दुकान पर बैठो। पढ़ने-लिखने से होगा क्या? बी० ए० पास मुनीम रखा है। पचास रुपये में सुबह से दस बजे रात तक कलम घिसता है। पापा को कौन समझाये?’”

बतियाते हुए दोनों पगली के बगल से गुजरते हैं। पगली को अधनंगी देखकर दोनों की देह में चुनचुनाहट सी होने लगी। जैसे देह पर खजोहरा



चढ़ गया हो। दोनों छात्रों ने देखा कि कुछ दूर पर पन्द्रह-बीस औरतें लाल-पीले कपड़ों में गीत गाती जा रही हैं।

“बाट के बटोहिया तू भइया मोरे अवर वीरनवा मोरे हो

भइया हमरो सनेसा लिहले जइहऽसाजन आगे कहिहऽ

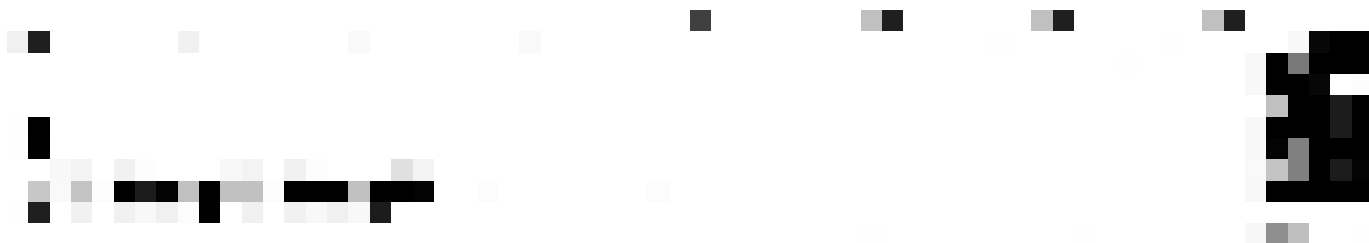
वेइलि कुम्भिलाइल मन्दिर घहराइल हरिअ नाही आवेले

(हे पथ के पथिक। तुम मेरे भाई हो और वीरन हो। हे भैया मेरा सन्देश ले जाना और मेरे पति के आगे कहना कि तुम्हारे द्वारा रोपी गई वेल कुम्हला गई। घर ढहने लगा। अब तक तुम परदेश से नहीं लौटे।)

उन औरतों में, तीन-चार की गोद में बच्चा है। बच्चा ढोने से वे पसीना-पसीना हो रहीं हैं। उनमें दो के पेट में बच्चा है। उनके चलने में तकलीफ होती है। गीत गाती हुई औरतों को पास आते देखकर दोनों छात्र आगे बढ़ गये।

औरतें गाना बन्द कर पगली को घेर कर खड़ी हो गयीं। अकिला बुआ पगली के पास चली गयीं। उन्होंने अपनी भतीजी सोसलवा को आदेश दिया—“रे सोसिलिया ! यह रुपया ले, पगली को कुछ खरीद कर खिलाओ, लगता है बड़ी भूखी है। चम्पवा की दादी तो पगली को देखकर धार-धार रोने लगी”। “किसके करम में क्या लिखा है, कोई नहीं जानता। भगवान ने कैसी सकल सूरत दी है। बुद्धि नहीं तो सब माटी। इसके भी लाल होंगे, इसके भी पति होंगे। पता नहीं वे कहां हैं ? मर-सिरा गये या जीवित हैं। ‘रोते-रोते दादी ने भोले से तौलिया निकाल कर उसके कमर में लपेट दिया।

सोसिलवा गमछे में बतासा, जिलेबी और लाई खरीद कर लाई और पगली के आगे रख दिया। खाने की सामग्री देखकर पगली ठठा कर हँस पड़ी। वह मुट्ठी में उठा-उठा कर खाने लगी। खाती हुयी पगली को अकिला बुआ सन्तोष भरी दृष्टि से देखने लगीं। भूखे आदमी को खाते





देखकर माता के हृदय को ज्यादा सन्तोष मिलता है। अकिला बुआ पूर्णतः मां हैं। बुआ की आँखें चमक रही हैं। चेहरे की रेखायें सरल हो गयी हैं। होठों पर हंसी नहीं है, लेकिन उस पर चिकनाई बढ़ गयी है।

तीन चार छोकरियां बड़ी-बूढ़ियों से अलग हो कर गीत गाने लगीं।  
जवना ही रहिया बाबा गइलन मोर छयलवा  
कि तनवा रहिया हमरा से बतलइत। कि तवना रहिया...  
लेहू न धनिया हो डाल भरी सोनवा  
कि तजि देहु आपन हो छयलवा। कि तजी देहु ना...

(पत्नी अपने ससुर से कहती है किहे बाबा, जिस रास्ते मेरा पति गया है, वह रास्ता बता दो। ससुर कहता है कि तुम डलिया भर सोना ले लो लेकिन अपने पति को भूल जाओ।)

अकिला बुआ ने डपट कर गीत गाती सोसिलवा से कहा—“रे सोसिलवा, यह लोटा लो। और पानी, कल से एक लोटा पानी ले आओ। “बुआ के डांटने और आँखें तरेरने से छोकरियों का मुंह बन्द हो गया। गीत के बन्द हो जाने से लड़ते हुए कुत्तों का भांव-भांव वातावरण में गूँजने लगा।

पगली और ये औरतें जहां हैं उसके दस कदम पूरब से गल्ले के खुदरा बिक्री का बाजार शुरू होता है। अभी सूरज सिर पर है। और लोहे की की तरह पिघल कर धूप जमीन पर पसरती जा रही है।

दो या तीन ठग लम्बा और करीब इतना ही चौड़ा पचीस-तीस, फुट आधा फुट ऊँचे मिट्टी के चबूतरे बने हैं। उसीपर फैलाकर बनिये चावल-गेहूँ खुदरा रूप में बेचते हैं। इस समय वहां दुकानें नहीं सजी हैं। वहाँ मुसहरों की औरतें भाड़ से गिरे हुए अन्न को ब्रुहार रहीं हैं। उनका रंग कोयले से भी काला है। धूप धक्कड़ से उनका चेहरा भरा है। कुछ



१३६ अंधा सूरज

औरते सूप से फटक कर घूल में से अन्न के दाने निकालने की कोशिश कर रही हैं ।

पन्द्रह-बीस चिड़ियों का झुंड जमीन पर दाने चुग रहा है । चिड़ियां दाने चुगती कलख कर रही हैं ।

पगली ने खा-पीकर भर पेट पानी पिया । पगली को छोड़कर औरतें गीत गाने लगी ।

●

■



---

रामपुर बाजार गहन अंधकार में भी जागता रहता है । चौराहे पर बाजार की कमिटी की ओर से रोशनी जलाई जाती है.....रात भर भुतहा घाट के राकस की तरह भुक्-भुक् करता हुआ लकड़ी के टेढ़े खंभे के सिर पर ठूका वह फुटहा लालटेन रोशनी के बदले एक भयावह अंधेरा उत्पन्न करता है ।

---

×

×

×

चीखती बुलबुल सुलगती डाल पर ।  
 बागबां खामोश अपने हाल पर ॥  
 सर जमीं पर खून के छीटे हैं क्यों ?  
 जख्म बढ़ते जा रहे क्यों खाल पर ॥  
 आइने में आंसुओं का हादसा ।  
 आज ही देजा है, कितने साल पर ॥

दो मुझे दो !

रंग-विरंगे पंखी असंख्य

खोले पंखों को, हों बांध रहे

पूरा आकाश । आंखों में सूरज का ताप

डूने हों तुले हुए

धरती से दूर.....बहुत दूर

नापने को सातवाँ आकाश

दो और दो



## १४१ अंधा सूरज

पोर-पोर भीगा तन माटी की गंध  
लहकलहक लहराती पुरवाई  
चैत माह, अल्सुबह  
टिपिर टिपिर, टप्-टप् हो चूते  
लहर ने लहर, लहर ने लहर दूरी गांठें  
दे दी हो ! दे दी हो ! सौ, सौ सौगन्ध  
गांव की नदी से उन लहरों ने  
उठा-उठा हाथ । खुली लो, वह नाव ।

×

×

×

दो मुझे दो छाती में  
जीने का दंभ । फूलों के रंगों में  
तितली का लुक छिप

×

×

×

समूचा गांव जाग रहा है । कई प्रकार की ध्वनियों में गांव का जीवन असंख्य लहरों वाली नदी के समान बहने लगा है । इस बहती नदी में कहीं फूल हैं, कहीं कचरे हैं । लहरों से लहरों के संघर्ष से ही भाग बहते बहते किनारे की ओर जा रहे हैं । यह नदी कितने रुदन, कितने हास ले कर बह रही है ? कितनी करुणा, कितना आक्रोश यह नदी समेटे है ?

तेतरी के दोनों बच्चे चन्दन सिंह के घर के पिछुवारे खेलने निकले हैं । बड़े बच्चे ने जो कुर्ता पहना है वह चन्दन सिंह का पुराना हो जाने पर बहुत दिनों फेंका रहा । चन्दन सिंह की बहू ने उसे उठा कर तेतरी को दिया ।—“लो, इसे काट सीकर अपने बड़का को पहना दो ।” तेतरी ने थोड़ा हुलस कर, कुछ सहमी हुई, थाम लिया ।

लड़के की देह के नाप से उसने कुर्ता सिया । उसे पहनाया । कुर्ता पहन कर बड़का खुशी से उछलने लगा । अपने बड़े भाई को खुश देकर





तीन वर्षीय छोटका उसके बगल में खड़ा होकर अचरज से कुर्त्ता पहने हुए भाई को देखने लगा ।

भानस घर में तरकारी में नन्दन सिंह की बहू छौंक दे रही है । उसकी खुशबू से दोनों बच्चे उधर ललचायी नजर से देखने लगे । बच्चों के पेट की बात मां ताड़ गई । कहीं ये बच्चे आंचल पकड़ कर ठुनकने न लगे, तेतरी ने उन्हें पुचकार कर बाहर खेलने के लिए भेज दिया ।

जहां बच्चे खेलने की इच्छा किये खड़े हैं, उसके दाहिने एक पग-डंडी है । आदमी के आने जाने से इसका रंग सांप के पेट सा सफेद हो गया है । इस पगडंडी के किनारे गभिन दूब मखमली सी बिछी है । मुइयों से उनके नोकों पर हीरे की कनी सी ओस की बूंदे भिलमिला रहीं हैं । इस पर ओस में भीगे कागज के टुकड़े पड़े हैं । यह किसी कॉलेजिया लड़की का प्रेम पत्र है क्या ? हृदय के अनाम सौन्दर्य को शायद उसने काली स्याही से कागज के इन टुकड़ों पर आंक दिया हो ! ना, यहाँ कालेज कहाँ है ? तो जरूर, यह इस गांव की किसी दुल्हन की पाती है, जिसे कलकत्ते गया उसके पति ने भेजा हो । बेचारी इस पाती को किससे पढ़वाई होगी ? ले देकर वह सिर्फ अपने पड़ोस के रिश्ते में लगने वाले देवर से पढ़वा सकती है । सुना है, वह तीन महीने से शहर के अस्पताल में बीमार पड़ा है । उसकी रीढ़ में दर्द है ।

एक दिन खेलते-खेलते पांच बरस की मुनिया उस दुल्हन से जो नाते में उसकी भौजी लगती थी, उलझ गयी । दुल्हन ने लार-दुलार से समझाना चाहा—“देखों बबुनी, स्कूल में जाकर पढ़-लिख लो, नहीं तो तुम्हारा बालम परदेश से प्रेम की पाती भेजेगा तो किससे पढ़वाती फिरोगी ? और, उसमें लाज-बीज की बात !

दो आदमियों के बीच की बात कोई तीसरा जान जायेगा तो कितनी खिल्ली पड़ेगी ? मेरी बात मानों बबुनी अभी से ही चेत जाओ ! दुल्हन ने नाते में लगती ननद मुनिया से छेड़-छाड़ की ।

मुनिया ने तमक कर कहा,—“नहीं पढ़ूंगी, नहीं पढ़ूंगी । मैं अपने



## १४३ अंधा सूरज

बालम को परदेश नहीं जाने दूंगी। उसे आंचल में बाँध कर रखूंगी, देख लेना।”

भाभी-ननद की इस बातचीत में वह कागज का टुकड़ा कहाँ जाता है जो पगडंडी के किनारे रात भर ओस में भीगता सुबह की धूप में हरी-हरी ढूब पर औंधा पड़ा है। ओस की बूंदों के भार से उसके काले अक्षर पसर गये हैं।

लगता है किसी बेटे ने अपनी बूढ़ी माँ को दूर देश से चिट्ठी लिखी हो,—“सोसती सिरी लिखी सरब उपमा जोग, सिरी माता जी के चरनों में लाख-लाख परनाम।”

समझ में नहीं आता, कैसा कागज का टुकड़ा पड़ा है। वे खेलने को खड़े बच्चे तो नादान हैं। वे क्या जाने लिखना-पढ़ना। और वहाँ कौन है, जो इन सब बातों को पूछे।

उसी पगडंडी से पता नहीं कितनी दुलहनों की पालकियां गई होंगी। सपने के पंखों की हवा सी, कहारों के कंधों पर रखी पालकी और उस पर बैठी दुलहन,—क्या वह गीत की कड़ी कोमल, भावात्मक होगी ?

अर्थी पर सोयी कितनी लाशें पुरजनों-परिजनों के आंसू, आह, क्रन्दन और उच्छ्वास पीछे छोड़ती इसी पगडंडी से गयी होंगी। किसी सौभाग्यवती के सिन्दूर भरे मिन्धोरे को खोलकर लाल सिन्दूर को हवा में उड़ाती, सतरंगे चूनर के नयन का सजाक उड़ाती दोनों खुली हथेलियों-बाले बाजुओं को लचकाती लाशें इसी पगडंडी से नदों के अतल अन्तराल में पता नहीं कहाँ विलीन हो गई होंगी ?

इस पगडंडी की मिट्टी में किसके आंसू हैं, किसके हास गुम हैं ? क्या इनकी गवाही अनन्त दूरी तक सामने की हरी-हरी फसलें, देंगी, या सामने से आता वह काला भुच्च हलवाहा देगा, जिसका पेट पीठ में सटा है। छाती की एक-एक पसली साफ झलकती है। अन्न का दाना



जिसके लिए परमेश्वर का दर्शन करना है। वह क्या कुछ कहेगा, भूख से उसकी आंखें तिलमिला रहीं हैं। दिमाग में आंधी उठ रही है।

पगडंडी के किनारे की घास पर कागज के टुकड़े के लिए दोनों बच्चे आगे बढ़ रहे हैं। उनकी बंधी मुठ्ठियों में भविष्य का कोई स्वप्न नहीं है। उन दोनों के सिर के ऊपर का आकाश उनका अपना नहीं है।

बड़ा बच्चा जैसे ही कागज का टुकड़ा उठाता है, ओस में भीगने के कारण चिट्दी-चिट्दी हो जाता है। लौट कर दोनों कंकड़ियाँ चुनने लगते हैं। कंकड़ी चुनते समय वे सोचते नहीं हैं कि उनकी मां ने क्यों उन्हें पिछुआरे खेलने को भेजा है? मां को डर है, कि बड़े घरों के बच्चे उन्हें मारेंगे, सतायेंगे। जब वे रोते, ठुनकते आयेंगे तो उन्हें रोते देखकर चुपचाप कैसे सहेगी। भला बच्चे को हँकरते देखकर गाय चुप, शान्त रह सकती है? आप ही बताइये। इसीलिए मां ने उन बच्चों को पिछुआरे खेलने के लिए भेज दिया है। इन दोनों बच्चों का रोना-हंसना भी और बच्चों से भिन्न है। जाड़े की सांभ की हवा के समान सहमें-सहमें रहते हैं। उनके मन के आकाश में अभी सूरज उगा नहीं है। उनकी आंखों में रोशनी की कहां चमक है? पांवों में हवा की कहां गति है?

छोटका बड़े बच्चे से कहता है,—“वयों भइया, मालकिन चाची ने आज सुबह बासी रोटी खाने को नहीं दिया।”

बड़े बच्चे ने जवाब दिया। —“चुप रहो, मां मारेगी।”

—“लेकिन मुझे तो भूख लगी है। खेलने में मन ही नहीं लगता।”  
छोटे ने जैसे रुआसाँ होकर कहा।

खेल छोड़कर दोनों घर लौटने को उद्यत हुये। दोनों घर के द्वार की ओर भांक कर देखते हैं। उन दोनों की मां, —तेतरी गोबर के उपले पाथ रही है। गोबर पाथने के क्रम में उसके सिर के बाल बिखर-बिखर जाते हैं। दोनों बच्चे भांक कर छिप जाते हैं। उन्हें डर है, मां मारेगी। मां ने खेलने को भेजा है, और वे भूख से बेचैन खाने को चले आये। क्या खायेंगे, मां का माँस।

**F**  
**F**  
**F**

**F**

## १४५ अंधा सूरज

मां की बेबशी, कों ये बच्चे नहीं जानते । ताड़ का गिरा खजूर पर अटका है । अपने घर रहते तो ये बच्चे खुलकर हंस तो सकते । यहाँ तो जब इच्छा होती है ये हंस-रो भी नहीं पाते । इतनी सारी खुली हुई जमीन है, आँगन है, बाहर का मैदान है, —लेकिन बड़ी मालकिन खेलने नहीं देती । कहती है, —“यहाँ धूल-माटी मत करो । बाग में जाकर खेलो । बाग कित्ती दूर है । मां कहती है, उधर भूत-बैताल हरेक पेड़ पर हवा का रूप धरे बैठे रहते हैं । पता नहीं कब देह में समा जाय । मां अपनी आंखों से दूर भी जाने नहीं देती, उन्हें और मालकिन की आंखों के सामने पड़ने से बचाती भी है ।

दोनों बच्चे एक दूसरे को ताकते हुए कुछ कहना चाहते हैं कुछ कह नहीं पाते । फिर भाँक कर देखते हैं । मां हिल-हिल कर गोबर पाथ रही है । देह के हिलने से सिर के बाल हिल रहे हैं ।

आँगन का काम करती हुई चन्दन सिंह की बहू मगन होकर गीत गा रही है, —

“बाबा के दुलरई कवन देई रे

बाबा दिहले डलरी बिनाई चले ली बेटी फुलवा लोढ़े रे

फुलवा लोढ़त बेटी धूपि गइली रे

सूते बेटी अंचरी बिछाइ त ओही बनवा भीतर रे ।

(पिता की दुलारी बेटी है । उसे पिता ने फूल चुनने के लिये डलिया बनवा दी है । उस डलिया को लेकर बेटी बाग में फूल चुनने गई । फूल चुनते-चुनते उसे धूप लग गई, अतः आंचल बिछा कर सो गई ।)

×

×

×

रामपुर बाजार गहन अंधरे में भी जागता रहता है । चौराहे पर बाजार की कमिटी की ओर से रोशनी जलाई जाती है । सांभ उत्तरते ही एक आदमी उसमें मिट्टी का तेल भर कर चला जाता है । रात भर भुतहा घाट के राकस की तरह भुक्-भुक् करता हुआ, लकड़ी के टेढ़े खम्भे





के सिर पर ठुंका वह फुटहा लालटेन रोशनी के बदले एक भयावह स्थिति उत्पन्न करता है। उस लालटेन से रोशनी कम, वुंआ ज्यादा निकलता है, और आदमी को पहचाना नहीं जा सकता, उसकी मात्र उपस्थिति का भान होता है।

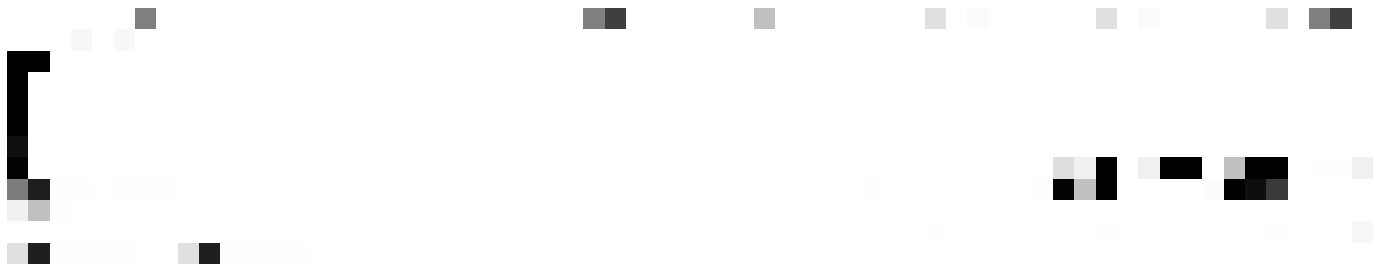
शाम होते ही, रात आ गई और देखते-देखते आठ, नौ, दस बज गये। बाजार के मार्ग जल-शून्य हो गये। घर और दुकानों के दरवाजे एक-एक कर फटाफट बन्द हो गये। सुनार पट्टी के पक्के मकानों के आगे छोटे-छोटे पार्कों में लगे फूल नींद के आलस्य में डूबे हैं। पूर्णिमा का पूरा चांद सिरकटे-ताड़ के माथे पर बैठा-सा लग रहा है। बाजार की सड़कें, गली-गलियारे और छतें दूध से नहा रहीं हैं।

पक्के मकानों के कितन-कितन कमरों में ओठों की खुशियाँ सिसकारियों में फूट रहीं हैं, कुछ पता नहीं। पगली कुबड़े नीम के नीचे पता नहीं क्या बुदबुदा रही है। नकटा अब उसके आसपास मड़लाता नहीं।

...बबुआ खाया नहीं, सुबह से ही गंगा घाट गया है। उसको बूझा आया है।...क्यों रे कुन्ने, भागने हो कि नहीं।...राम, राम मैं तो लंगी हो गई।

नीम की जड़ से अधनगी लठंगी हुई पगली चांद को लंगली दिखाकर बुदबुदाती जा रही है।—‘सावन-भादों बीत गया राह देखने-देखने। अब लूहा जलाऊंगी; रास्ता रोके क्यों खड़े हो।’ पगली का ऊंचा पेट चांदनी में साफ दिख रहा है। वह दोनों हाथों से पेट दबाती है। बुदबुदाती हुई वह रोने लगती है। उसकी आँखों पर कुछ डरावना और गुस्सा-सा जैसे टूटा पड़ना चाहता है। दोनों हाथ अपनी आँखों के पास ले जाकर उसे दूर भगाना चाहती है। उसे लगता है जैसे कोई उसका गला दबोच देना चाहता है। दोनों हाथ शून्य में कंपकंपा कर, असहाय मुंह फाड़ जा रही है। वह चीख नहीं पाती। धिगधी-सी उसकी बंध गई है।

चारों ओर आसमान से इतनी चांदनी बरस रही है, लेकिन पगली की आँखों के आगे अँधेरा छाया है।



पगली जहाँ हूँ उसके दस कदम के फासले पर गन्दे पानी का ताला बह रहा है। कीचड़-पानी में लोट-पोट होते चार-पाँच सूअर गों-गों करते हुये भयावह स्थिति पैदा कर रहे हैं। सूअरों के गों-गों बोलने से दो कुत्ते पता नहीं कहाँ से आ गये। दोनों कुत्ते सूअरों पर लपक कर बिजली से टूट पड़े। हड़बड़ाये, भयातुर सारे के सारे सूअर हुर्र हुर्र, गों-गों की मुँह से ध्वनि निकालते, कीचड़ उछालते भगे। भाग-दौड़ कुत्तों के गुर्राकर भूँकने से आसपास बैठी लावारिश दो गायें हड़क कर खड़ी हो गईं।

लेकिन इस आंशिक, असामयिक भूकंप का पगली पर कोई असर नहीं हुआ। दोनों हाथों से अपने पेट को थामे, भीगी पलकों वाली आँखें पूनम के अजस्र पियूष वर्षी चांद की ओर टिकाये, निश्चल कुबड़े नीम की जड़ से उठंगी पगली रह-रह कर अस्पष्ट ध्वनि में बुदबुदा रही है, जिसे हवा भी सुन नहीं पाती।

शहर से लौटती चार बैलगाड़ियाँ रामपुर बाजार तक पहुँचती हैं। गाड़ीवानों में तय हुआ, आज रात्रि-विश्राम यहीं हो। रात्रि के सन्नाटे में स्वप्निल लय उपजाने वाली बैलों के गले की घंटियाँ यहाँ आकर मौन हो गईं। गाड़ियाँ सिपा दी गईं। लोहे के नाद में खली-भूसा और अन्न का दाना, पानी में भिगो कर बैलों के सामने खाने को रख दिया गया।

आटा, आलू, प्याज, मंगरइल, सरसों का तेल, नमक, हरा मिर्च यानी लिट्टी बनाने के सारे जुगाड़ शहर से करके गाड़ीवान चले हैं। चारों में से, कोई बाल्टी में पानी लाने चला। कोई गोंइठा-चिपड़ी को सुलगाने लगा। आटा गूँथा जाने लगा। प्याज मिर्च कटने लगी।

अब और थकान मिटाने के लिए एक गाड़ीवान ने कान पर हाथ रखकर तेज स्वर में अलाप छेड़ा।

लिहसन ढाल तरुवरिया त अवर कटरिया नु हो  
चल-चल ना ससुर जी के घिअवा भंवरवा हम मारबि हो।  
थर-थर कापेला मलिनिया दुनहु कर जोरेले हो।



राजा हमरा के बलु मारि डार भंवरवा जनि मारहु हो ।  
जइसे सुन गोदिया बालक बिनु नयन कजरवा बिनु हो  
राजा ओइसे सुन मोरा फुलवरिया त एक रे भवरवा बिनु रे ।

(फूल चुनने एक स्त्री फुलवारी में जाती है । फूल पर बैठा भौरा उसका आँचल थाम, बिलभा लेता है । पति द्वारा बिलम्ब का कारण पूछने पर वह भौरे की करतूत बता देती है । पति क्रोध में ढाल-तलवार लेकर भौरे को मारने के लिए उठ खड़ा होता है और पत्नी से कहता है—“हे ससुर जी की बेटी ! चलो, मैं अभी उस भौरे को मार डालता हूँ । पुरुष के क्रोध को देखकर मालिन थर-थर काँपने लगती है और दोनों हाथ जोड़ कर कहती है कि हे राजा ! हम को भले ही जान से मार डालो किन्तु भौरे को मत मारो । क्योंकि जिस प्रकार माँ की गोद बालक के बिना सूनी रहती है और काजल के बिना आँख सूनी रहती है उसी प्रकार मेरी फुलवारी एक भौरे के बिना सूनी हो जायेगी ।)

स्वर की थरथराहट और घुलावट से वातावरण में मिठास भर गया ।

गीत खत्म होने पर दूसरे गाड़ीवान ने टिटकारी भरी ।

—“जीओ बेटे, युग-युग जीओ ।”

—“गला क्या पाया है, जैसे पानी में मिश्री घुली हो । बिल्कुल टांसुरी आवाज पायी है ।” तीसरे गाड़ीवान ने हामी भरी ।

गोंडों की आग दहकने लगी । कुछ देर के बाद जब लहक सिराया तो आटे की लिट्टी बनाकर कर डाल दी गई ।

गीत गाने के बाद पहला गाड़ीवान चांद की ओर ताकने लगा । एक नन्ही सी काली चिड़िया चांद के ठीक सामने आकर चक्कर काटने लगी ।

—“अरे, यह तो ऐसा लगता है जैसे दूध की नदी में छोटी-सी डोंगी करवट लेती हुई भँवर में चक्कर काट रही हो । वह देखो...वह, अरे वह तो लापता हो गई ।” पहला गाड़ीवान इतना कहकर भाव-विभोर होकर चांद की ओर ताकने लगा ।



चारों गाड़ीवान खड़े होकर चांद की ओर ताकने लगे ।

पगली के पास दो कुत्ते आपस में लड़ गये । उनके चिल्ल-पों और कांव-किच से वे चारों आकर्षित होकर जिधर पगली बैठी थी उधर ताकने लगे । उन लोगों ने देखा कि नीम की जड़ से कोई उठंगा है । सबने पहले से कहा—“जाकर देखो तो कौन है ?” पहले ने पास जाकर देखा, एक पागल औरत अधनंगी लेटी हुई है । उसकी देह पर नाम-मात्र के कपड़े हैं । पेट ऊंचा दिख रहा है, लगता है कि गर्भवती है । उसके बाल बिखरे हुए हैं । टांगे और हाथ पतले-पतले हैं । आंखें धंसी हुई हैं । गाल की हड्डियां उभरी हैं और क्रूरपता का इजहार कर रहीं हैं । गाड़ीवान ने एकबार पूरी निगाह से चांद की ओर देखा, फिर पगली की ओर ताका ।

पेड़ पर सोये परिन्दे पंख फड़फड़ा कर मौन हो गये । नदी के भीतर कांटेदार भुरमुट्ट में सियार हूँआ-हूँआ करने लगे । सियारों की बोली सुनकर कुत्ते भूंकते हुए दौड़े ।

गाड़ीवान ने दूर-दूर तक फैली चांदनी को देखा । सफेद कफन ओढ़े धरती मौत से भी भयानक सन्नाटे में है । आकाश में तारे निष्प्रभ आंखों के समान अधमूंदे और भयातुर हैं ।

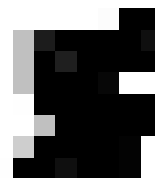
बैल भरपेट दाना-भूसा खाकर जुगाली करने लगे । उनकी गरदन हिलने से गले की घंटियां टुन-टुन बजने लगीं । लिट्टी पक कर तैयार हो गई ।

“यार, लिट्टी में घी चपोत कर दही के साथ खाने में खूब मजा आता है ।” दूसरे गाड़ीवान ने लिट्टी से राख झाड़ते हुए कहा ।

“लेकिन उसमें बेगन का भुर्ता भी हो ।” तीसरे ने कहा ।

“अरे यार, जल्दी-जल्दी भाड़ो ! थकान से आंखे बन्द हो-हो जा रही हैं ।” चौथे गाड़ीवान ने लौट कर कहा—“दो, पगली को दो लिट्टी दे आता हूँ । बेचारी भूखी होगी ।”

लिट्टी हाथ में पाकर पगली ठठा कर हँस पड़ी । उसने चांद की ओर





उंगली दिखाकर कहा—“देखो वह पगला ताक रहा है। मैं तभी हंसूगी जब मेरे सामने उसे मारों।”

अन्न की महक पाकर कुत्ते कूंकूँ करते हुए पूँछ डुलाते दांये-बांये करने लगे। कुत्तों को लसियाते देख गाड़ीवान चिन्ता में पड़ गया। “कुत्ते पगली को खाने नहीं देंगे। वह कुत्तों को हांककर फिर दौड़कर लोटे में पानी ले लाया। पगली ने खाकर तृप्ति की डकार ली। गाड़ीवान ने उसे लोटे से पानी पिलाया।

खा-पीकर गाड़ीवानों ने तय किया कि कोई बढ़िया गीत होजाय, तब सोया जाय। तीसरे गाड़ीवानों ने पहले से कहा—“वही हिरना-हिरणी का गीत गाओ। तुम्हारे कंठ से सुने हुए बहुत दिन हो गये। पहले ने एक हाथ कान पर और दूसरे को आकाश की ओर उठा कर गाना शुरू किया। ठेठना रोपकर, चांद की ओर सिर उठाकर उसने आलाप लिया,—

चरत ही चरत हरिनवा त हरिनी से पूछेला हो  
हरिनी की तोरे चरहा भुरान, न पानी बिनु मुरभीला हो।  
नाही मोर चरहा भुरान, न पानी बिनु मुरभीले हो  
हरिना आजु राजा घरे छठिहार, त मोरे मारि डरिहे नू हो।

× × ×  
मचिया ही बइठली कोसिल्ला रानी हरिनी अरज करे हो  
रानी मसवा त सीभेला रसोइया खलरिया हमें देतु न हो।

(चरते-चरते हिरण अपनी मादा हिरण से पूछता है कि हे हिरणी क्या तुम्हारा चरहा सूख गया है? या तुम पानी के बिना मुरभायी हुई हो। हिरणी कहती है कि न मेरा चरहा सूखा है न पानी के बिना मुरभायी हुई हूँ। मेरे उदास होने का कारण यह है कि आज राजा के घर में छठिहार है इसलिए भोज के अवसर पर वह हमें मरवा डालेंगे।)

× × ×  
(हिरण को मारकर मांस पक रहा है। मचिये पर कौशल्या रानी बैठी हैं। हिरणी उनसे अर्ज करती है कि हमारे हिरण का मांस तो तुम्हारे रसोई में पक रहा है। हमें सिर्फ उसकी खाल दे दो।)



१५१ अंधा मुरज

गीत गाते गाड़ीवान का स्वर गीत के अन्त में कांपने लगा। आंखों से आंसू भरने लगे। अन्य तीनों गाड़ीवान मूक भाव से आंसू गिराने लगे। वातावरण बोझिल हो उठा।

हवा की पलकों पर नींद बोझिल हो उठी। खाने के बाद गाड़ीवानों की देह अलसाने लगी।

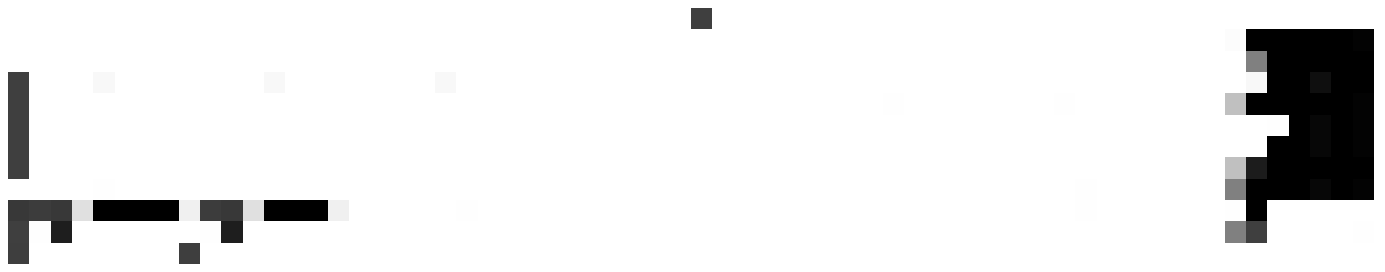
गश्त को जाते थाने की पुलिस के दो जन बतकही और फुसफुसाहट सुनकर आहट लेने लगे। दूर से सुनने पर गाड़ीवानों की बातचीत रहस्यमय लग रही है। हवा में कान लगाकर सुनने पर बोरा, नींद, कितनी रात बीत गयी, बातें प्रतिध्वनि सी लग रही हैं। शंका होने पर एक ने पूछा—“कौन है?” गरजदार और ललकार भरी आवाज मुनकर गाड़ीवान अचानक सकपका कर उठ खड़े हुए और जिधर से आवाज आयी थी उधर उन्मुख हो, उत्सुक मुद्रा में ताकने लगे।

“बोलते क्यों नहीं, कौन खड़े हो?” पुलिस ने फिर ललकारा।

“हम लोग हैं सरकार! हम लोग गाड़ीवान हैं। शहर से लौटते हुए ज्यादा रात हो गई। यहीं रात बिताना चाहते हैं।” गाड़ीवानों ने दीनता पूर्वक कहा।

“इधर आओ गाड़ीवान के बच्चे! आजकल चोरी-डकैतियाँ इस तरह हो रही हैं। क्या पहचान है कि तुम सब चोर डकैत हो या गाड़ीवान। आजकल गाड़ीवान क्या साधु के वेष में भी डकैत पकड़े जाते हैं। जब मार पड़ती है तब भेद खुलता है। चलो सब। इधर चलो।” दूसरे पुलिस ने डपट कर कहा।

इस अप्रत्याशित, आसन्न विपत्ति को देखकर सारे गाड़ीवान घबड़ा उठे। शहर में गाड़ी ले जाते मोड़ और चौराहों पर बराबर उन्हें पुलिस से साबका पड़ता है। मार और गाली के नीचे तो वे बात ही नहीं करते। शहर की पुलिस का यह हाल है तो गांव-बाजार की गलियों में घूमने वाली पुलिस पता नहीं कहां काट खाय?



गाड़ीवान सकपकाये, आपस में एक दूसरे का मुंह देखने लगे। सबने एक दूसरे के चेहरे पर हवाइयां उड़ते देखा। यहां के जुवान में आवाज नहीं है। आतंक है और है वक्त का ठहराव। पुलिस वाला फिर गरजा,—“आते हो कि हम लोग आयें !” सारे गाड़ीवान आगे-पीछे सिहरे-सिहरे आगे बढ़े।

गरज और हलचल से सारे बैल नींद से जग कर खड़े हो गये। दूसरे मौकों पर कुत्ते भूंकते-भूंकते तूफान खड़ा कर देते। इस वक्त कुत्ते कूंकूँ करते, पूँछ सटकाये पुलिस वालों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगे। आदमी के साथ रहने वाले जीव-जन्तु उसी के मनो-विज्ञान से विशेषतः परिचालित होते हैं।

गाड़ीवानों के पास पहुँचते ही पुलिस वालों ने पैतरा बदला,—“चलो थाने, वहीं फैसला करेंगे कि तुम साहू हो या चोर।” पुलिस की बात पर गाड़ीवानों की तो जैसे घिरघी बंध गई।

नीम की जड़ से उठंगी पगली उठकर बैठ गई। चौकन्ता होकर इधर-उधर उसने नजर घुमायी। पगली को रात, और उसका सूनापन काटता नहीं। उसे सहज औरत की अगर चेतना रहती तो इस मर्मन्तिक पीड़ा को और एकान्त की भयावह बेचैनी को कैसे भेलती? पगली का मन नींद से उठने पर बच्चों जैसा हो गया है। दूर लोगों की बोल-बतकही सुनकर चल पड़ी।

लोगों के पास अधनंगी पगली के पहुँचते ही कुत्ते उसके पास खड़े हो पुलिस वालों की ओर मुंहकर भूंकने लगे। अत्यधिक सान्निध्य से कुत्तों ने पगली के प्रति अपनत्व जाहिर किया।

कुत्तों के भूंकने और पगली के पहुँचने से पुलिस वाले के सोचने में फर्क आ गया। पुलिस के मन का चोर कुत्तों के भूंकने से डर गया।

एक पुलिस ने गाड़ीवान से कहा,—“अच्छा यह बताओ रात को टांगे फैलाकर सो जाओगे तो तुम्हारी गाड़ी पर लदे सामान की कौन रखवाली करेगा ?”



दूसरा पुलिस वाला तड़क कर बोला,—“इधर क्या ताक रहे हो ? चलो फूटो यहां से ।”

गाड़ीवान सटके, सहमें गाड़ी के पास लौट गये ।

पगली को मूर्तिवत् खड़ी देखकर पहले पुलिस वाले ने कहा,—“यहां क्या खड़ी हो ? रात के बारह बज गये । दुकानें खुली रहतीं तो कुछ खरीद कर देता । भागती हो कि नहीं ।”

पुलिस के लाठी तानते ही पगली दुबककर भगी । कुत्ते भूंकते हुए उसके पीछे लग गये । रात की सफेद चादर ओस से भीगने लगीं ।

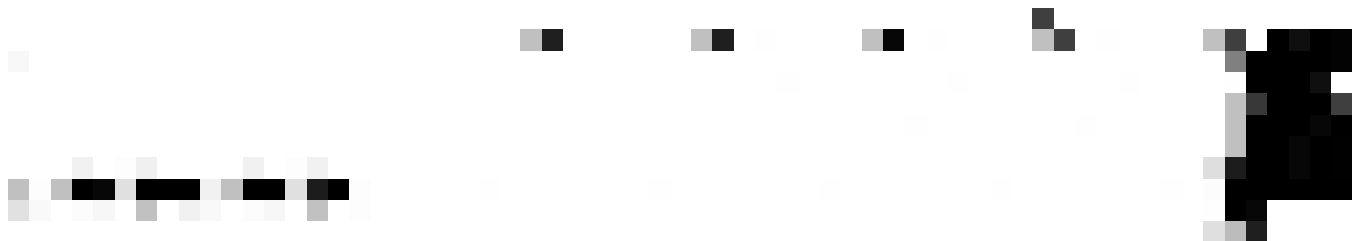
अपने पालनहार की उपस्थिति से दो-तीन बैलों ने हुँकर कर स्वागत किया ।

गाड़ीवानों ने रतजगा करने का तय किया । पुलिस वाले ठीक ही कहते हैं । चोर-उचक्का हर ठांव लगे रहते हैं । आंखें लगीं और सारा माल गायब ।

रात के निचाट एकान्त में जिन्दगी की प्रत्येक हरकत स्थगित हो गई है । गाड़ीवानों और बैलों के अलावा न कहीं सांस चलती है न कोई आवाज आती है ।

यह बाजार है । तीन बजे दिन से लेकर मुंह अंधेरी रात आने तक यहां आदमी का जमघट रहता है । आने वाले लोग इसी इलाके के होते हैं । यहां न दिल का सौदा होता है न दिमाग का । पैसे और सामान का सौदा होता है । किसी बात के सोचने का यहाँ किसी के पास वक्त नहीं होता । सब कोई जल्दी और हलचल में आते हैं और मोल-भाव कर चीजें खरीदते और पच्छिम के अंधकार में सूरज के गर्क होते-होते घर लौट जाते हैं ।

दो बजे का दिन होते ही सहुआइन सोते हुए साव—कों भांव-भांव करके जगा देती है ।





“अरे, सौदा-समान ठीक करो क्या बाजार नहीं जाना है ? ! कब तक पड़े रहोगे ?” चिढ़ते, रंज होते साव धनिया, मिर्च, हल्दी की गठरी-मोटरी बांध-छान्ह कर बोरे में भर, पीठ पर लाद बाजार की ओर चल देते हैं—रामपुर बाजार ।

बेचारा किस्म का आदमी रामरिख महतो को उसकी जोरु भर नींद सोने नहीं देती । पूरब में लोहिया लग गई । चुचुहिया चिरई बोलने लगी । कुंए पर बाल्टी की ठनक और चूड़ियों की खनक गूँज उठी ।

“अरे, उठो न सीतवा के बाप ! साग कब टुगोगे ?” और कुंथते, कहंरते महतो एक हाथ हंसिया दूसरे हाथ टोकरी लेकर खेत की ओर चल देते । इस औरत को जरा भी दया-माया नहीं लगती । तीन बरसों से महतो दमे से पीड़ित हैं । सुबह की ठंडी हवा लगने से दमा जोर लगा देता है । वह घर से खांय-खांय करते निकलते हैं ।

जिन्दगी जरूरत के दबाव में घिसटने का नाम है । जैसे बर्फ पर जिन्दा आदमी को घसीटता भेड़िया चीखने का मौका नहीं देता सिर्फ लहू के सिनाखत से आदमी के दर्द का पता चलता है, महतो की जिन्दगी का दर्द उनके खांसने और खांसते-खांसते सुरसुरी चढ़ जाने, सांसे टंग जाने, छाती पकड़ कर चलते-चलते बैठ जाने से, पता चलता है ।

—“अरे, कब तक सोते रहोगे भइया । दिन चढ़ गया । अभी कुछ कपड़े सीने हैं । टेम पर बाजार भी तो जाना है ।” फूल मोहम्मद की घर वाली ने उन्हें खोदते-खोदते जगा दिया । फूल मुहम्मद टेलर गाँव के बच्चों-औरतों की देह के कपड़े सिलकर बाजार में रोज बेचने जाते हैं ।

बेचारा टेलर दो बजे रात तक खटर-खटर धुर्र-धुर्र सिलाई मशीन चलाता रहा । अपनी किस्मत के उभरे सीवन को टांकता रहा । अपने को पर्व-दर पर्व नंगा कर दूसरे की देह ढकने के लिए गहरी रात तक मशक्कत करता रहा । उसकी देह में टूटन है । दिमाग खाली है । नींद से आँखें भारी हैं ।

—“उठोगे नहीं तो देह पर पानी डाल दूँगी । यह नहीं सोचते कि



## १५५ अंधा सूरज

बाजार से सौदा नहीं लायेंगे तो चूल्हे में पानी पड़ जायेगा। बाल-बच्चों के मुंह में अन्न के बदले ताला लटक जायेगा।” घरनी ने हुड़पेट कर टेलर मास्टर को मशीन की तरह चला दिया।

दो बजे दिन के बाद ही बनिये विकने वाले जिन्स को लेकर आने लगते हैं। इधर पन्सारी अपनी-अपनी दुकानें फैलाते हैं। धनियाँ, तेजपत्ता, हल्दी, मिर्च आदि पंसारी बोरे पर फैलाकर बेचते हैं। उधर चावल-दाल, गुड़, मक्का, चना बिकता है। बाजार के दक्खिन सब्जियाँ बिकती हैं।

—“सलाम समधी महाराज !” एक आदमी बैगन बेचने वाले को नमस्कार करता है। जवाब में आवाज आती है,—“बैगन एक रुपये के तीन किलो।”

बाजार में समधी का रिश्ता नहीं चलेगा। यहाँ पैसा फेंको और चीज गंठिया कर चलते बनो।

बाजार में भीड़ खच्चम-खच्च। शोर-पुकार, मोलभाव, हाँ-ना बोलियों के आदान-प्रदान में किसी की बात साफ सुनाई नहीं पड़ती। कोई बैठा है, कोई झुका है। कोई चल रहा है, कोई खड़ा है।

शाम उतरती जा रही है। फैली हुई दुकानों में किरासन तेल की कुप्पियाँ जल उठीं। तीम अँधेरे में अब लोग परछाइयों की तरह रेंगने लगे। भीड़ की साँसे आपस में टकरा रहीं हैं। देह से देह घिस रही हैं।

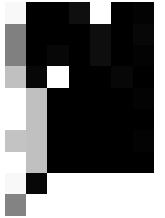
धीरे-धीरे चीजें बोरों में सिमटती जा रही हैं। एक-एक लोग खिसकते जा रहे हैं। देखते-देखते इस बाजार में कोई नहीं रह गया।

+

+

+

भीड़ के पाँव के मर्दन से जिस जमीन की मिट्टी घिस रही थी, इस समय वहाँ कोई नहीं है। भिन्न-भिन्न स्वरों की बोलियाँ, भिन्न-भिन्न तरह की आवाजें सन्नाटे में मूर्छित होकर पछाड़ खा रही हैं। चार गाड़ीवान, आठ



बैल, तीन कुत्ते और पगली के अस्तित्व में बाजार का हजारों-हजार लोगों का शोर, दौड़-धूप, हलचल सिमट कर मौन हो गया है।

गाड़ीवान रतजगा कर रहे हैं। उनका मन खुला, छुटा रहता, तो मन रसायन के लिए अल्हा गाते, सोरठी, वृजभान के गीत में मन रमाते, सारंगा-सदावृज की प्रेम कथा गा-गा कर रात आँखों में काटते। पुलिस की दहशत से सबके मन की कली मौन हो गयी है। मन के चारों ओर अवसाद और आतंक के बादल मड़ला रहे हैं। किसी के चेहरे पर सरल खुशी और जीवन्तता नहीं है। जड़ता के ऊपर भय की पपरी छायी हुई है।

अभी पूरब ललछौंहि भी नहीं हुआ, तब तक मुर्गे ने बांग दे दी। मस्जिद के मुड़ेर से मौलवी ने अजान की आवाज लगाई। दिन भर का चल-चलाव का थकन, रात आँखों में कटी। गाड़ीवानों की देह मिट्टी सी बोझिल और गतिहीन हो गई है।

पहले गाड़ीवान ने लम्बी जुम्हुआई लेकर देह तोड़ा।—“हे भगवान! गाड़ी बैल जोतो, चलो, चलें सबेरा होने वाला है।” पहले गाड़ीवान ने सबको सामूहिक रूप से सम्बोधन किया। जगाड़ और बोलचट से पगली गाड़ीवानों के पास आ गई। रात की बची दो लिट्टी गाड़ीवानों ने उसे दे दी। वह लिट्टी को बच्चों के समान दांत से कुतरती, खिलखिलाकर हंसने लगी। मुंह अँधेरे सुबह, में पगली की हँसी दुधमुहे बच्चे की निश्छलता लिए दक्षिणी बयार की लहरियों पर तैरती दूर-दूर तक फैल गई। हवा बहने से नीम की पत्तियों का सिर-सिर, सर-सर, भोर की मृदुल चुप्पी को सहलाने लगा।

गाड़ियाँ चली गईं। अधनंगी पगली ओर तीन कुत्ते जाती हुई गाड़ियों को देखते रहे। सूरज का आधा हिस्सा इस दृश्य को भाँक कर लाल हो उठा। पेड़ों की फुनुगियों से पक्षी पंख फड़फड़ा कर उड़ते-उड़ते पूर्व दिशा के लाल सागर में तैरते-तैरते एक-एक कर ओझल होने लगे।



मैं गीत गाता हूँ ।

शाम के अंधकार में उदास, खामोश  
बहती नदी का गीत ।

वह जो

खामोशी और अंधेरा बढ़ने से पहले  
गा कर उड़ गये पंछी की उड़ान

वह जो

टहनी का अन्तिम पीला पत्ता का

टूट कर झर जाने के बाद

राखी का खिलने में लगावा कंगड़ा

×

×

×

पता नहीं, कहां से उड़ता हुआ कौवा आया और ओरीं पर बैठ गया ।  
उसके कांव-कांव सुनकर तबालची के पपोटे खिंचे हुए हैं । नाक में एक  
दिव्य सुगन्धी का एहसास हो रहा है । हृदय में उल्लास के बदले आवेग  
और बेचैनी है ।

सूरजा की मां तहा कर सूरज को जल दे रही है । पानी से भीगे उसके  
काले लम्बे बाल पीठ और कंधे पर फैलकर लहरा रहे हैं । लोटे में जल  
फिर आकाश की ओर उठे हुए तंगे हाथ चिकने चम्पई रंग के हाथी दांत  
जैसे चढ़ाव-उतार लिए धूप में चमक रहे हैं । तबालची ओसारे में बैठे इस  
नारी-मूर्ति की लास्य मुद्रा देख रहे हैं । आंगन के एक ओर गेन्दे के फूल  
हरी कचनार पत्तियों को भेद कर पीले-पीले खिले हैं । वातावरण शान्त





है। सुरजा तबालची से दो कदम अलग हट कर बैठा हुआ ऐसी मुद्रा किये हुए है जैसे किसी की आहट ले रहा है। वहां जमीन पर मक्खियां भिनभिना रहीं हैं।

—हे आदित्य देवता ! मेरे बबुआ की दुनिया अन्हार हो गई है। जगत को अंजोर करने वाले हे देव; मैं उसे तुझे सौंप रही हूँ।” सुरजा की मां के होठ हिल रहे हैं।

×                      ×                      ×

तबालची गुरुजी के साथ रामेश्वरम् तीर्थाटन को गये गये। वहीं उन्होंने सूर्योदय के उपरान्त एक नारी को समुद्र में नहा कर कटि भर पानी में खड़ा होकर, ठीक इसी मुद्रा में सूर्य को जल ढालते हुए देखा था। अछोर नीले जल वाले सागर तट पर लास्य पूर्ण पूजा की मुद्रा में नारी मूर्ति को दिखा कर गुरुजी ने कहा था—“देख बेटे कला की देवी का दर्शन कर। जैसे समुद्र मंथन के उपरान्त सागर की उप्ताल लहरों पर उर्वशी अवतरित हुई थी और देव-दानव शेषनाग की पूंछ-सिर पकड़े मंत्र मुग्ध हो गये थे। ऐरावत के मस्तक पर प्रहार की मुद्रा में बज्र उठाये इन्द्र चित्रलिखित से, विस्फारित नेत्रों से ताकते रह गये थे। उस स्वर्ग को उर्वशी की तरह देवता बन कर देख। देख समुद्र की लहरों से खेलती असंख्य रश्मियों को धारण करने वाले उदीयमान सूर्य के सौन्दर्य को देख।

इस क्षण तबालची के सामने तीन दृश्य उपस्थित हो गये। सूर्य को जल ढालती सुरजा की मां, सूर्योदयोपरान्त अछोर नीले जल वाले सागर तट पर कटि प्रदेश पर्यन्त जल में खड़ी सूर्य को जल ढालती नारी मूर्ति और सहस्रों फुफकारते फनों वाले नाग के समान लहरों में से क्रमशः उभरती अनुपम सौन्दर्यमय उर्वशी की दिव्यमूर्ति, जिसके आसपास देवता और दैत्य खड़े, स्तंभित, आखे फाड़े ताक रहे हैं।

×                      ×                      ×

सुरजा से बहुत देर चुप रहा नहीं जा रहा है। वह बोलने के लिए कनमना रहा है। हवा लगने से आंगन की तुलसी के बिरबे की परछाई घुप में हिल रही है।



## १५६ अंधा सरज

पता नहीं, कहां से उड़ता हुआ कौवा आया और औरी पर बैठा कांव कांव करने लगा। तबालची की आँखों के पपोटे खिंचे हुए हैं। नाशिका में एक दिव्य सुगन्धी का एहसास हो रहा है। हृदय में उल्लास के बदले आवेग और बेचैनी है।

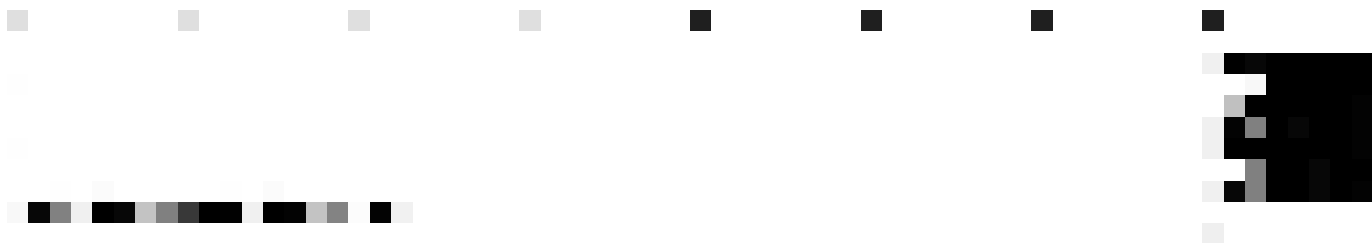
पड़ोस के आंगन में औरतों के झगड़े की आवाज सुनकर तीनों का ध्यान भंग हो गया। तबालची लपक कर दरवाजे की ओर चले गये। सुरजा चिहा कर खड़ा हो गया और चलने का उपक्रम करने लगा। मां जल्दी-जल्दी जल ढाल कर सुरजा की ओर दौड़ी।—“अभागा दीवार या खंभे से टकरा जायेगा तो लेने के देने पड़ जायेगे।” बेटे की आँखों की ओर ताक कर सुरजा की मां ढर-ढर आंसू बहाने लगी। बेटे के प्रति प्यार उमड़ने से मां बेटे को कलेजे से चिपका कर आंचल से मुंह-आँख पोंछने लगी और हाथ से सिर के बिखरे बाल संवारने लगी।

पड़ोस से झगड़े की आवाज आ रही है।—तेरा बेटा खाऊँ। तेरी मांग जाऊँ। क्यों रे निपूती तू मुझे राह चलते देखकर खांसती-खोंखती क्यों है।... मैं। तुम्हारे मन की बात जानती नहीं हूँ। हमसे बतियाने के लिए लस्सी-फुस्सी लगाती है। जा अरहर, गन्ने के खेत में यार से बतिया। तीन बार पेट गिरा कर हमारे सामने पुरधाइन बनने चली हो। मुंह में कालिख तो लगी है। जो रे छिनाल ! लाजकर ! लाजकर !

औरतों को मरद डांट रहे हैं। पड़ोस के आंगन में कोई किसी की बात सुनता नहीं। सुरजा की मां शान्त भाव से बेटे को कलेजे से लगाये झगड़े को सुन रही है।

औरी से बोलता कौवा मुड़ेरे पर चला गया है। छप्पर पर फैली लौकी और नेनुआ की लतरों में छिप कर सोयी बिल्ली ने भाग कर आंगन में छलांग लगा दिया। “धम्म” की आवाज सुनकर सुरजा ने अचरज से पूछा—“मां क्या गिरा है ? कैसी आवाज आयी है ?”

मां ने कहा,—“कुछ नहीं, बिल्ली भगी है।”



दरवाजे से लौट कर तबालची ओसारे की चारपाई पर बैठ गये ।

पता नहीं क्यों, तबालची चाचा में सुरजा सटता नहीं । वह उनसे जलता है, आशंकित रहता है । उनसे बोलता-बतियाता है, लेकिन दो कदम अलग बैठता है । आज तक कभी तबालची की गोद में नहीं बैठा । अंधे में महसूस करने की चेतना अधिक विकसित हो जाती है । वह जिस चीज को देखता नहीं, उसे दूर से ही उसकी गंध का अनुभव कर लेता है । सुरजा के मन के इस रूप को न मां जानती है, न तबालची जानते हैं । मां और तबालची के बीच कुछ ऐसा सम्बन्ध है, जिसे वह बुरा मान कर भी कुछ नहीं कर पाता । सिर्फ अस्तित्व की तटस्थता जाहिर करता है ।

चारपाई पर बैठे तबालची ने मुंह का थूक गटकते हुए सुरजा को पुकारा “आ सुरजा, चलो सहुआइन की दुकान से तेरे लिए मिठाई खरीद दूँ ।” आने के बदले वह और मां की देह में चिपक गया । वह मां के आंचल से लजा कर मुंह छिपाने का नाटक करने लगा । मां ने कहा,— “तो जाते क्यों नहीं, चाचा बुला रहे हैं ।”

जवाब में एक बार अंधी आंखें दिखा कर मिचमिचाया और फिर आंचल से मुंह को ढंक लिया ।

होठों पर उदास मुस्कान फिर सुरजा की मां ने तबालची की ओर देखा । उसकी मुद्रा से ऐसा लगता है जैसे वह बहुत कुछ कहना चाहती है । बीती हुई अकथ्य स्थितियां, अकह बातें दुहराना चाहती है ।

औरत घास होती है । जरा सी स्नेह की बून्दें पड़ी कि कीचड़, नरक सी वर्जित जमीन पर भी लहलहा कर पैलने लगती है । तबालची के सहारे ने उसे उसके टूटते जीवन को एक ठिकाना दिया, लेकिन सुरजा के मन को मां कैसे समझाए जो अपनी मां से नफरत नहीं कर पाता । सिर्फ नफरत सा महसूस करता है ।

मां ने अपने आंचल से सुरजा की शेष खुली देह को ढककर अपनी निगाहों से स्नेह दरसाया । तबालची का मन भीतर ही भीतर संकुचित हो गया ।



## १६१ अंधा सूरज

दोपहर का सूरज आकाश के सिर पर बैठकर सुनहले पानी की धार से धरती को नहला रहा है। यहां समय कितना शिथिल, मौन भाव से बीत रहा है। घर के पिछवाड़े बच्चों की कबड्डी-कबड्डी की आवाज खिड़की से छनकर आ रही है।

कबड्डी-कबड्डी की आवाज सुनकर सुरजा गोदी से भागने को कुलबुलाता है। —“अरे किसी दर-दीवार से टकरा कर सिर तोड़ लेगा। चुपचाप रहते हो कि नहीं। मां ने गोदी में दबा कर रोका। प्रतिक्रिया में ‘ऊँ-ऊँ’ कर रोने का वह नाटक करने लगा, और एक हाथ आंचल से निकाल कर हवा में भाँजने लगा। धीरे से पीठ में एक मुक्का मार कर मां ने आक्रोश जाहिर किया और डांटा—“गदहा के समान देह हो गई लेकिन छमहिनवा बने हैं अभी तक।”

मां-बेटे का यह लाड़-स्नेह पता नहीं क्यों तबालची को नहीं रुच रहा है। वह मन में जरा संकुचित और लजाये हुए हैं।

सब ने सुना, दरवाजे पर खड़ी पाँच-छः औरतें माथे पर छबनी लिए घर की मालकिन को पुकार कर गीत गा रहीं हैं।

—‘ जवन गलिया हम कबहू ना देखली

ऊ गलिया देखलवल हो मोरा नाग दुलरुआ ।

जे मोरे नाग के गेहूँ भीख दीहे

लाले-लाले बेटवा बिअइहें हो मोरा नाग दुलरुआ ।

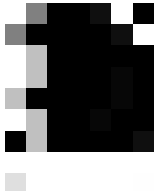
जे मोरा नाग के कोदों भीख दीहे

करिया-करिया मूसरी बिअइहे हो मोरा नाग दुलरुआ ।

जो मोरा नाग के भीखी नाहि दीहें

दूनो बेकती जरी जइहें हो मोरा नाग दुलरुआ ।

(जिस गली मैंने कभी नहीं देखा, मेरे नाग प्यारे ने उसको दिखा दिया। जो नाग को गेहूँ भीख में देगा वह सुन्दर पुत्रों को जन्म देगा। जो कोदों (निकृष्ट अन्न) भीख देगा वह चूहे के समान क्षीण और काली बेटा को जन्म देगा। जो भीख नहीं देगा, पति-पत्नी दोनों मर जायेंगे।)





सुरजा की मां आंचल में चावल लेकर भीख देने चली। —“अभी तो नाग पंचमी बहुत दिन बाकी है। क्या बात है कि अभी से ही नाग देवता की भीख मांग रही है आप लोग। एक औरत की टोकरी में आंचल से चावल डालते हुए उसने टोका।

—“क्या कहें ए बहिनी ! दो-तीन भैंसों को नाग देवता ने डस लिया है, वहीं पुजाई करनी है।” साथ की हँसती हुई छोकरी को डांट कर उस औरत ने कहा—“रे छोरी ! तो ठी-ठी-ठी क्यों करती हो, इसी से कहीं साथ नहीं ले जाती हूँ। आंख से लाज-सरम को पानी से धो दिया है।”

उस छोकरी ने होठ दांत से दबा कर हंसी रोक लिया।

× × × ×

गंगा जी के ऊंची अड़रिया तिवड़िया एक रोवेले हो,

गंगा मइया अपनी लहरिया मोही देतू त हम धंसी मरती न हो।

(गंगा के ऊँचे कगार पर एक औरत बैठी रो रही है। मां गंगे ! अपनी तरंग मुझे दो, मैं डूब कर मर जाना चाहती हूँ।)

× × × ×

औरत ! औरत !! औरत !!! तबालची को क्यों औरतें राह रोक कर खड़ी हो जाती हैं। अस्तित्व के अंधकार में वह चीखता है। कलकत्ता के काली मन्दिर के चबूतरे पर कमला बाई के गाने पर वह तबला बजा रहा था। कमला के पावों का घुंघुलू, अंग-अंग की मुरकन और लोच ने जैसे उसके मन के सूने अंधेरे में रूप और राग का दीपक जला दिया था। तबालची ने स्वप्नाविष्ट हो कर देखा, अंधकार में बहती नदी के किनारे के पेड़ों पर रंग-बिरंगे फूल लद गये हैं। कांपती लहरों पर पेड़ों की छाया टेढ़ी-मेढ़ी होती चली जा रही है। नीम रोशनी में कमला का चेहरा लहरों पर कई-कई आकार धारण कर रहा है।

कुछ दिनों के बाद तबालची ने देखा, कमला ने उसके अस्तित्व को ऐसे बांधा है, जैसे पानी नदी के खालीपन को बांधता है। धीरे-धीरे



कमला के साये में तबालची का ठोस अस्तित्व ढकता चला गया ।

—“प्रभू जी तुम चन्दन हम पानी....” गाती हुई कमला तबालची के साथ एकाकार हो गई । कमला से अलग होते समय उसको कितना दर्द हुआ था । जैसे घाव में रुई का फाहा चिपक गया है और उसको नोचने में असह्य पीड़ा रही हो ।

नर्मदा के तट पर स्नान करके भीगे वस्त्रों में खड़ी देवदासी रूपांभरा ? प्रभात बेला में भीगे चम्पा के फूल सी दिखी थी । बसंत बीत रहा था । फूलों से लदी भाड़ियों से भांकती शेरनी की आंखें वह कल ही देखकर आया था । जिसके बगल में दो पाँवों के बल खड़ा शेर अपनी मादा की ओर खूँखार दृष्टि से ताक रहा था । सौन्दर्य के घेरे में आतंकप्रद प्रेम का यह स्वरूप, और लगातार कोकिल का सप्तम स्वर में टेर—“कू कू , की ध्वनि से सम्पूर्ण वन प्रतिध्वनित हो रहा था । काल के अंधकार में, जनारण्य में रूपांभरा कहाँ खो गई ?

रूपांभरा के बिछुड़ने पर तबालची को ऐसा लगा जैसे शेर ने पंजा मार कर उसके मर्म को लहू लुहान कर दिया हो । उसने रोया नहीं न किसी से व्यथा कही । गिरिप्रान्तर, नदी-नाले, जनारण्य को पाँव पयादे उल्लाँघता गंगा के तट पर खड़ा हो गया ।

तबालची गंगा के किनारे खड़ा होकर रोने लगा ।

—“तुम क्यों रो रहे हो ? तुम्हारा क्रन्दन कौन सुनेगा ?

संसार के करोड़ों की भीड़ में अपना कौन है ? खोजो

उसे, वह कहाँ है ? “तबालची के रुदन पर गंगा की लहरे

अट्टहास करती, हुई परस्पर एक दूसरे पर टूटती,

किनारे से टकराती

छर्छर् कर छलकने लगी ।

× × ×

अपने भीगे नयनों से, गंगा के कगार पर खड़ा होकर तबालची ने देखा, एक औरत गोदी में एक बच्चा लेकर दौड़ती हुई गंगा के किनारे आ



रही है। उसके गाल आंसुओं से तर हैं। माथे के बाल खुले, बिखरे हैं। धूल-धूसरित देह है। अस्त-व्यस्त वस्त्र हैं।—“अरे, तो क्या मुझ से भी दुखी जीव इस धरती पर हैं। अरे लगता है यह औरत गंगा में डूब घंसना चाहती है।”

देखते-देखते वह औरत-बच्चा सहित छपाक से गंगा में कूद गयी। यंत्रचालित सा तवालची उसके पीछे गंगा में कूद गया। लहरों पर सिर्फ केश झिलमिलाता दिखा। तवालची ने झपट कर पकड़ लिया। किनारे तक आते-आते बच्चा और औरत दोनों बेहोश हो गये। बालू की रेती पर दोनों को लिटा कर तवालची फिर गंगा की ओर ताकने लगा।

गंगा की हहराती लहरों में, हवा की सनसनाहट में अब भी यह आवाज ध्वनित हो रही है।

—“तुम क्यों रो रहे हो, तुम्हारा क्रन्दन कौन सुनेगा? संसार के करोड़ों की भीड़ में अपना कौन है? खोजो उसे, वह कहाँ है?”

उसने फिर घुमाकर देखा, औरत की देह रेत पर सुगबुगा रही है। गमछे से उसने औरत और बच्चे का मुँह पोंछा। भीगे वस्त्रों से उसने खुले अंगों को ढका।

औरत ने आँखें खोलकर अजनबी को देखा।—“सपना है या सच है।” उसने फिर से ठीक से देखा। गौरांग दिव्य पुरुष, करुण आँखों से उसी की ओर देख रहा है। औरत हड़बड़ा कर उठ बैठी।

यहाँ अंधकार में बिजली की तीव्र रोशनी नहीं है कि दोनों एक दूसरे को देखकर पहचान सकें। लेकिन शहद से भी मीठी, गेन्दे के फूल सी कोमल घूप में दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और ऐसा लगा जैसे दोनों जन्म-जन्मांतर के परस्पर परिचित हों।

बाद में समय ने जोड़ते-जोड़ते दोनों के अस्तित्व को एक कर दिया।

X

X

X

—“आ सुरजा, आ। चलो तुम्हें सहुआइन की दुकान से मिठाई



## १६५ अंधा सुरज

खरीद हूँ। तबालची ने लाड़ जताकर दोनों हाथों को बढ़ाया। जवाब में माँ के आँचल से अंधी आँखें दिखाकर सुरजा ने आँखें मिचमिचायी और लजाकर आँचल में मुँह छिपा लिया।

होठों पर उदास मुस्कान लिए सुरजा की माँ ने तबालची की ओर देखा। सुरजा की माँ अकथ कथा कहना चाहती है।

पता नहीं तबालची के मर्म में क्या बिध गया, सुरजा की माँ को सोया छोड़ कर चल दिया।

घनियारी रात। दीवट पर दीपक जल रहा है। उसके मन्द लौ में सुरजा की माँ का सोया सौन्दर्य तबालची को रेशम की डोरी सा खींच रहा है, सुरजा करवट बदलता है। खिड़की से भाँकता चाँद सुरजा की माँ के निश्चिन्त मासूमियत को देखकर उदासी से धूमिल हो जाता है और पश्चिम की ओर लुढ़क जाता है।

माँ-बेटे के चेहरे को भरपूर निगाह से देखकर तबालची घर से निकलकर भागता है। —“फिर ताक, फिर ताक, ओ भागने वाले ! आ, तुझे सोया सौन्दर्य पुकार रहा है।” हवा ने आवाज दी जिसे तबालची की अन्तरात्मा ने सुना।

कौन सुनता है ? जाने वाला लौटकर नहीं आता। धरती की छाती दुखती रहती है। जाने वाला लौट कर नहीं आता।

स्वप्न में सुरजा की माँ के होठ बुदबुदाते हैं। स्वप्न में वह तबालची के पीछे दौड़ रही है खुले केश पीठ पर फहरा रहे हैं। वह हाथ उठाये चीखती दौड़ रही है—“सुन जा ओ निर्मोही।”

×

×

×

यह रामपुर बाजार है। सूर्योदय में अभी कुछ देर बाकी है। वातावरण में खुनक और निदियारापन है। पेड़ों पर चुचुहिया चिड़िया बोलने लगी है। मन्दिर में एक साधु षड्ज राग में, भरे गले से प्रभारी गा रहा है।





चरन गहो सिया राम के पिया हो  
चरन गहो सिया राम..... ।

प्रभाती राग से वातावरण विरागमय हो रहा है। सम्पूर्ण प्रभात-  
काल गेरुए वस्त्र में सन्यासी सा सामने खड़ा नजर आता है।

चलते-चलते बटोही रुक जाता है। यह कुबड़ा नीम सामने दिखता  
है। पगली अर्धनग्न खड़ी है। —“क्यों बटोही पहचाना ! यह तुम्हारी  
कौन है ?”

—“भगवती, भगवती” करते पुजारी जी खड़ाऊ पर खटर-खटर  
करते उसी राह से गुजरते हैं। पगली के ऊपर एक फूल और मंत्रपूत  
जल फेंकते हैं।

—“क्यों तबालची, ओ बटोही ! देख क्या रहे हो !”

—“अम्मा.....! की चीख के साथ धड़ाम से तबालची अपनी मां  
के आगे बेहोश होकर गिर जाता है। देखते-देखते लोगों की भीड़ इकट्ठी  
होने लगली है।

पौ फटते ही सुरजा की मां की आंखें खुलती हैं। वह चिहा कर  
विस्तर देखती है। —“पंछी उड़ गया है। पिजड़ा खाली हवा में हिल  
रहा है। खट्-खट् और हड़बड़ी की आवाज सुनकर अंधा सूरज उठकर  
मां के सामने खड़ा हो गया।” (समाप्त)

×

×

×

— ० —

